सचित्र जीवन साखियां

गुरु नानक देव जी

डा. अजीत सिंघ औलख

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ॥

सचित्र जीवन साखियां

श्री गुरु नानक देव जी

SIKHBOOKCLUB.COM

लेखक :
डा. अजीत सिंघ औलख
एम.ए.पी.एच.डी.

प्रकाशक:
भा. चतर सिंघ जीवन सिंघ
बाज़ार माई सेवां, अमृतसर।

© प्रकाशक

ISBN : 81-7601-056-1

तीसरा संस्करण 2011
चौथा संस्करण जुलाई 2014

भेटा : 150-00

SIKHBOOKCLUB.COM

प्रकाशकः
भा. चतर सिंघ जीवन सिंघ
बाज़ार माई सेवां, अमृतसर।
टैली/फैक्सः 0183-2542346, 2547974, 2557973
E-mail : csjssales@hotmail.com, csjsexports@vsnl.com
cjgroup77@yahoo.com
Website : www.csjs.com

मुद्रक:- जीवन प्रिंटर्ज, अमृतसर। फोनः 2705003, 5095774

श्री गुरु नानक देव जी

सतिगुर नानक प्रगटिआ

श्री गुरु नानक देव जी का जन्म विक्रमी सम्वत् कार्तिक शुदि पूर्णिमा १५२६ अनुसार २० अक्तूबर १४६९ ईस्वी, तलवंडी राइ भोइ जिला शेखूपुरा, पाकिस्तान में हुआ। कई इतिहासकारों की यह धारणा है कि गुरु जी ने १५ अप्रैल १४६९ ई. को अवतार धारण किया, इस सम्बन्धी वे प्रमाण देते हैं कि 'पुरातन जन्म साखी', जन्म साखी रचित भाई मनी सिंघ और महिमां प्रकाश रचित बावा सरूप दास भल्ला, में गुरु साहिब के अवतार धारण करने का समय २ वैशाख, १५२६ विक्रमी या १५ अप्रैल १४६९ ई. ही लिखा है। परन्तु आज कल समस्त भारत और अन्य देशों में गुरु साहिब का अवतार धारण दिवस कार्तिक की पूर्णिमा को ही मनाया जाता है और इस दिन ही सम्पूर्ण भारत में गुरु जी के सम्मान में छुट्टी होती है।

उस भाग्यशाली गांव तलवंडी का नाम बाद में गुरु जी के नाम पर 'ननकाणा साहिब' पड़ गया।

गुरु नानक देव जी के पिता का नाम महता कल्याण दास था, परन्तु इलाके में वह महता कालू करके ही प्रसिद्ध थे। उनका जद्दी गांव ज़िला अमृतसर के गांव जामा राए के पास 'पट्टेवाल' था। इस गांव का नाम बाद में डेरा साहिब हो गया है। वह तलवंडी राइ भोइ उस इलाके के हाकिम राय बुलार के पास नौकरी करने के लिए गए थे। राय बुलार यद्यपि एक बड़ा जागीरदार था, परन्तु वह बड़ा सखी और मीठे स्वभाव वाला था। महता कालू जी उनके सारे कारोबार के प्रबन्धक होने के कारण काफी अमीर थे और घर में किसी चीज़ की कमी नहीं थी। इलाके के सभी लोग उनका आदर करते थे। उनकी पहली सन्तान एक लड़की थी, जिसका नाम नानके घर पैदा होने के कारण नानकी रखा गया था। जब बाल गुरु जी ने अवतार धारण किया तो वह उस समय पांच वर्ष की हो गई थी। हमारे देश में बड़े लड़के के पैदा होने पर बहुत खुशियां मनाई जाती हैं। जब दाई ने महता कालू जी को बताया कि उनके घर एक प्रभावशाली और अद्भुत बालक पैदा हुआ है तो महता कालू जी बहुत खुश हुए। दाई ने उन्हें बताया कि बच्चे के जन्म के समय कमरे में एक अद्भुत प्रकाश हुआ और कुछ खुशी भरी आनन्दात्मक आवाज़ें बालक को स्वागतम् कहती सुनी गईं।

बालक भी कोई साधारण बालक नहीं था। जन्म के समय वह रोया नहीं था बल्कि मुस्कराया था। सारे इलाके में इस विचित्र बालक के जन्म की खबरें पहुंच गईं। गांव

SIKHBOOKCLUB.COM

का हाकिम राय बुलार भी अपने कुछ साथियों के साथ बालक को देखने के लिए आया। सुन्दर बालक को देख कर सभी प्रसन्न हुए थे। इन सब में जो सबसे अधिक प्रसन्न था, वह थी बड़ी बहन नानकी। वह अपने भाई को देख-देख सदके जा रही थी और एक पल भी उससे अलग होना नहीं चाहती थी। उसका छोटा भाई भी अपनी बहन को देख कर जैसे मुस्करा रहा था। बालक की इस अद्भुत दिखावट को देख कर सब लोग हैरान हो रहे थे। प्रत्येक व्यक्ति बालक को प्यार से गोद में लेने के लिए उत्सुक था परन्तु बहन नानकी उसके पास रक्षा के लिए बैठी किसी को भी बाल गुरु को हाथ नहीं लगाने देती थी।

जन्म-पत्री

बाल गुरु के अवतार धारण करने पर परिवार तथा गांव में खुशियां मनाई जा रही थीं। जैसे हिन्दुओं में रिवाज़ प्रचलित है, महता कालू जी ने भी बाल गुरु जी की जन्म पत्री तैयार करने के लिए ज्योतिषी हरदयाल पंडित को अपने घर बुलाया। पंडित पहले ही बड़ा उतावला था कि किसी तरह आलौकिक बालक के दर्शन करे, जिस के बारे में वह दाई से सुन चुका था। घर पहुंच कर उसने पहले बाला प्रीतम के दर्शन करने की इच्छा प्रकट की। जब उसने बालक के दर्शन किए तो उसने अद्‌भुत प्रकार का सुख-शांति और स्कून अनुभव किया। पंडित हरदयाल ने सैंकड़ों बच्चे देखे थे तथा उनकी जन्म पत्रियां तैयार की थीं, परन्तु ऐसा बालक उसने आज तक नहीं देखा था, जिसमें ईश्वरीय दृष्य नज़र आया हो। वह बालक उसे ऐसा अमन का पैगम्बर लगा ज़िसने लाखों जलते सीनों में ठण्डक पहुंचानी थी। काफी देर तक बालक के ईश्वरीय नूर को देखता हुआ वह महता कालू जी को कहने लगा, "महता जी आप बड़े भाग्यवान हैं जिनके घर में ऐसा ईश्वरीय रूप बेटा पैदा हुआ है, यह पातिशाहों का सच्चा पातिशाह होगा और कुल दुनिया में इसका राज्य होगा, सब धर्मों वाले इसके सच्चे धर्म को मानेंगे। यह बड़े-बड़े डाकू और जालिमों का दिल जीत लेगा और उन्हें सत्य के मार्ग पर डालेगा। यह एक अलग ही पंथ चलाएगा जो युगों-युगों तक अटल रहेगा।"

SIKHBOOKCLUB.COM

महता कालू जी और माता तृप्ता जी पंडित हरदयाल की भविष्यवाणी सुन कर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने पंडित को जन्म-पत्री तैयार करने के लिए कहा। पंडित जी अपनी जन्त्री खोल कर बैठ गए। बालिका नानकी भी यह सब कुछ देख कर बड़ी खुश हो रही थी और अपने भाई के समीप वह भी बैठ गई। पंडित हरदयाल की अजीब बातें सुनकर उनके कई सेवक भी आ खड़े हुए और बड़ी नम्रता के साथ सत्य के पातिशाह को देखने लगे। सहज स्वभाव ही उनके हाथ जुड़ गए थे और उनके ध्यान परमात्मा की भक्ति में जुड़ गए थे।

पंडित अपनी जंत्री देख कर नक्षत्रों और ग्रहों का अध्ययन करके पत्री लिखता जा रहा था और साथ ही "धन्य प्रभु, धन्य प्रभु" कहे जा रहा था। बाला प्रीतम का नाम भी उसकी बड़ी बहन के नाम पर रखा गया। वे बहनें स्वयं को बहुत भाग्यशाली समझती हैं, जिनके छोटे भाई का नाम उनके नाम पर रखा हो। साधारणतया हमारे समाज में यदि पुत्री के पश्चात् पुत्र पैदा होता है तो यह बड़ा शुभ लक्षण माना जाता है क्योंकि यह

समझा जाता है कि बहन अपने भाई को लेकर आई है। गुरु नानक देव जी भी अपनी बहन को बहुत प्यार करते थे और अपनी सारी जिन्दगी में जब भी बेबे नानकी जी उन्हें याद करते थे तो वह हर हालत में उन्हें मिलने के लिए पहुंच जाते थे।

बाल लीला

गुरु नानक देव जी बचपन में ही एक अद्‌भुत बालक थे। उनके खेल और खिलौने भी साधारण बच्चों की अपेक्षा भिन्न थे। वे बहुत छोटी आयु में ही परमार्थ की बातें करने लग गए थे। जो भी व्यक्ति परमात्मा के बारे, मानवीय जीवन के बारे या मनुष्य के जन्म-मरण की बातें करता वह उन्हें बहुत अच्छा लगता। साधु महात्मा आदि भी उन्हें बडे प्यारे लगते। ऐसे लोगों की सेवा करना वह बहुत अच्छा समझते और उनकी रोज़ी-रोटी से सेवा भी करते।

जब वह अपनी आयु के बच्चों के साथ खेलने जाते तो उन्हें अजीब प्रकार की खेलों में लगा लेते। बाला प्रीतम की आवाज़ बड़ी मधुर और सुरीली थी और बचपन में ही वे बहुत अच्छा गा लेते थे। जब साधु-सन्तों को गाते और झूमते देखते तो उनकी हूब हू नकल करके खुद भी गाते। वे बाकी बच्चों को भी एक गोल दायरे में बिठा कर बड़ी ऊँची-ऊँची "धन्य निरंकार! धन्य करतार!" गाते तो दूसरे बच्चे उनके पीछे-पीछे गाते। उनका इस प्रकार गाना एक अजीब नज़ारा बांध देता और बड़ी आयु के पुरुष और स्त्रियां भी बाला प्रीतम के इस दरबार को देखने आते। गांव के हाकिम राय बुलार को जब इस बारे पता चला तो वह भी एक दिन बाल गुरु का यह खेल देखने आए। वह घोड़ी से उतर कर बड़ी देर तक वहां खड़े देखते रहे, परन्तु बाला प्रीतम अपनी धुन में मस्त गाते रहे और साथी उनकी सुर में सुर मिलाते रहे। चौधरी राय बुलार उनकी यह लीला देख कर बहुत हैरान हुए और उन्हें यह विश्वास हो गया कि ठीक ही बाल गुरु जी भगवान् का रूप हैं। चौधरी राय बुलार एक सखी, दयालु और धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे। उनके पूर्वज हिन्दू थे, परन्तु हाकिमों के जबर-ज़ुल्म के कारण वह मुसलमान हो गए थे, परन्तु अभी भी वह दोनों धर्मों को प्यार करते थे, यही कारण था कि उनकी जागीर में किसी प्रकार का ज़ुल्म नहीं होता था। गुरु साहिब के इस आलौकिक दरबार को वह अक्सर देखने आया करते थे और बाला प्रीतम के दर्शन करके बहुत खुश होते थे।

बाला प्रीतम जब अकेले होते थे तो वह चौकड़ी मार कर ध्यान प्रभु के स्मरण में लगा लेते थे और काफी समय इस प्रकार ही बैठे रहते थे। वे किसी से हिचकिचाते या डरते नहीं थे। वे इस तथ्य से कभी भी घबराते नहीं थे कि लोग उनके बारे में क्या सोचेंगे। परन्तु जो कुछ करते थे, किसी प्रकार के भय से रहित हो कर करते थे। यही कारण था कि उन्हें कोई अपने पीछे न लगा सका, बल्कि हर कोई उनके पीछे लग जाता था।

वे जब भी कोई खेल खेलते थे तो कभी भी गुस्से में नहीं आते थे, यही कारण था कि उन्हें कोई गुस्से भी नहीं होता था। यदि कोई व्यक्ति हंसता हो तो कोई दुश्मन भी गुस्से में नहीं आता। बाला प्रीतम का बचपन इसीलिए अजीब लगता था कि वे हर समय प्रसन्न रहते थे और उनके दर्शन करके प्रत्येक कोई प्रसन्नचित्त हो जाता था।

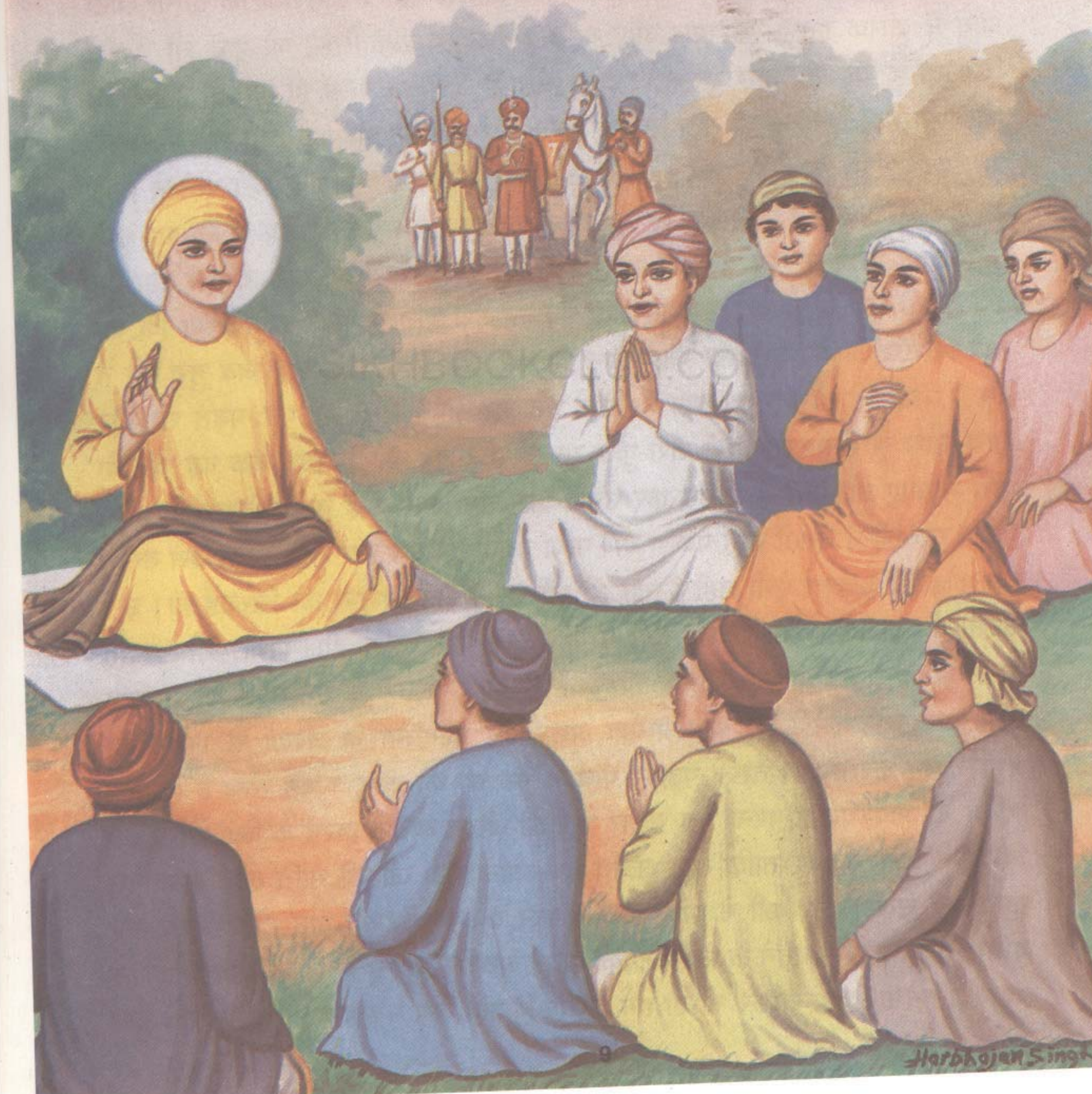

पांधे को उपदेश

जब बाला प्रीतम जी छः वर्ष के हुए तो महता कालू जी ने उन्हें गांव के पांधे गोपाल दास के पास पढ़ने के लिए भेज दिया। पंडित गोपाल दास पंजाबी, हिन्दी और संस्कृत का विद्वान था। गुरु जी बड़े चाव और खुशी से पढ़ते थे और कुछ समय में ही उन्होंने सब कुछ सीख लिया जो कि पांधे को आता था। पंडित अपने शिष्य की अनोखी योग्यता देख कर बहुत हैरान था। वह कहता, "मैं तो विश्वास नहीं कर सकता कि इतनी छोटी आयु में बालक इतना होशियार और योग्यता वाला हो सकता है। जो कुछ भी मैं इसे सिखाता हूं, यह सब कुछ तुरन्त से सीख लेता है जैसे कि पहले ही जानता हो। मैं तो काफी समय से बच्चों को पढ़ा रहा हूं, परन्तु ऐसा शिष्य तो मुझे कभी नहीं मिला।"

परन्तु पांधे ने अभी गुरु जी का असली रूप नहीं देखा था। एक दिन पांधे ने देखा कि गुरु जी अपनी तख्ती लिख रहे थे और लिखने में इतने मग्न हो गए थे कि वह बाह्य दुनिया को बिल्कुल भूल गए थे। पांधा बहुत देर बाल शिष्य की ओर देखता रहा कि कब तख्ती पूरी लिख कर उसे दिखाता है। वह इस बात के लिए उत्सुक था कि वह देखे कि उसका शिष्य इतना ध्यान-मग्न हो कर क्या लिख रहा था? जब गुरु जी ने तख्ती लिख ली तो वह चुप-चाप मस्ती में बैठ कर अपने लिखे को पुनः पढ़ते रहे और साथ-साथ कुछ सुनाते भी थे जैसे कुछ गा रहे हों। जब काफी समय तक वह पांधे के पास न आए तो पांधा स्वयं उठ कर उनके पास गया और उन्हें तख्ती दिखाने के लिए कहा। गुरु जी ने तख्ती उन्हें पकड़ा दी। पांधा तख्ती देखकर हैरान रह गया। उस तख्ती पर कोई भी इबारत ऐसी नहीं लिखी थी जो उसने अपने शिष्य को सिखाई हो। उस तख्ती पर बारीक कलम से छंद-बंदी में बहुत कुछ लिखा हुआ था। पांधा पढ़ता-पढ़ता सरूर में आ गया। सारी तख्ती पर सीहरफी की भांति, पंजाबी के पैंतीस अक्षरों अनुसार 'पैंती अक्खरी' लिखी हुई थी। प्रत्येक अक्षर प्रभु परमात्मा के चरणों से जुड़ने का मार्ग-दर्शन करता था। तख्ती पढ़कर पांधे ने गुरु जी को कहा, " यह सत्य है कि प्रभु भक्ति भी आवश्यक है परन्तु इस संसार में सुखी जीवन व्यतीत करने के लिए सांसारिक विद्या भी आवश्यक है, ताकि आप क्षत्रीय पुत्र अपने पिता जी की भांति कोई सम्मानित कार्य कर सको।" गुरु जी ने पांधे की बात सुन कर कहा, "यह बात ठीक है कि इस दुनिया में दुनियादार बनने के लिए आपकी पढ़ाई जरुरी है परन्तु हमारे परलोक के जीवन का क्या बनेगा? वहां जाकर भी तो हमें हिसाब-किताब देना पड़ता है। इसलिए जब तक

हम प्रभु के नाम का स्मरण नहीं करते, उसकी आज्ञानुसार नहीं चलते तब तक हम लोक परलोक में प्रसन्न नहीं हो सकते। इसलिए केवल इस दुनिया का ज्ञान प्राप्त करने के साथ अगली दुनिया का भी ध्यान् रखना है। इसलिए वह शिक्षा भी दो जो अगली दुनिया में काम आए।" पंडित हैरान परेशान गुरु जी की ओर देखता रहा।

मौलवी से फारसी पढ़ी

जब गुरु जी ने पंजाबी, हिन्दी और संस्कृत की पढ़ाई समाप्त कर ली तो उन्हें मौलवी के पास फारसी पढ़ने के लिए दाखिल करवाया गया। उन दिनों इस्लामी हुकूमत होने के कारण दफ्तरी पत्र-व्यवहार की भाषा फारसी थी। इस लिए फारसी पढ़ा ही वास्तविकता में पढ़ा-लिखा समझा जाता था। बाला प्रीतम की भी फारसी की पढ़ाई करने में बड़ी रुचि थी। इस लिए उन्होंने फारसी भी शीघ्र ही पढ़ ली। कुछ ही समय में बाल गुरु अपने सभी साथियों से आगे निकल गए थे। मौलवी भी अपने शागिर्द की लियाकत पर बहुत हैरान था। बाल गुरु उन बच्चों से भी अच्छी फारसी बोल लेते थे जिनकी मातृ भाषा ही फारसी थी।

जब गुरु जी फारसी पढ़ने में पूरी तरह निपुण हो गए तो वह आमतौर पर मौलवी से कई जटिल प्रश्न पूछने लग पड़े जिनके उत्तर देने मौलवी को कठिन हो जाते थे। कई बार वह मौलवी को पूछते, "मौलवी जी यदि अल्लाह पाक एक है तो फिर भिन्न-भिन्न मज़हब क्यों हैं? मौलवी अपनी समझ अनुसार उत्तर देता परन्तु गुरु जी की सन्तुष्टि न करा पाता। गुरु जी कहते, "जब अल्लाह एक है तो इस कायनात का प्रत्येक जीव उसकी अंश है, उसका पुत्र या पुत्री है। इस लिए हम सब भाई-भाई हैं परन्तु फिर भी एक दूसरे को हम सांसारिक सुखों के लिए कत्ल कर रहे हैं। मुसलमान हिन्दुओं पर जुल्म ढाते हैं, उनका दोष केवल यह है कि वह हिन्दु हैं, परन्तु क्या हिन्दु एक परमात्मा की सन्तान नहीं हैं? अल्लाह जब सर्वव्यापक है और प्रत्येक स्थान पर है तो फिर इसे हम कुछ मस्जिदों या मंदिरों तक क्यों सीमित रखते हैं।" उन्होंने मौलवी को यह भी समझाया कि आप फारसी पढ़ाते हो और हम फारसी पढ़ते हैं ताकि फारसी पढ़ कर कार्यालयों में फारसी में काम कर सकें। परन्तु उस पढ़ाई का क्या लाभ जो हमें सांसारिक कठ-पुतलियां बना कर रख दे। हम अल्लाह को बिल्कुल भुला देते हैं परन्तु उसके नाम पर लड़ते हैं। सच्ची शिक्षा तो वह है जो हमें अल्लाह पाक के साथ जोड़े, जिसके कारण हम अल्लाह के साथ एक हो सकें और उसकी रज़ा में चलना सीखें।

मौलवी गुरु जी की बातों पर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने कहा कि पहले मैं उस्ताद था और तू मेरा शागिर्द था, परन्तु अब मैं आपका शागिर्द हो गया हूँ और आप मेरे उस्ताद बन गए हो।

मौलवी बाल गुरु से इतने प्रभावित हुए कि स्वयं महता कालू जी को जा कर मिले

SIKHBOOKCLUB.COM

और उन्हें बताया कि आपका पुत्र तो परमात्मा का कोई दूत है। यह इस दुनिया में जुल्म जब्र के विरुद्ध सत्य का धर्म चलाने आया है। महता कालू जी तो मौलवी की बात पर इतने प्रसन्न न हुए परन्तु जब राय बुलार ने मौलवी से यह सब कुछ सुना तो वह प्रसन्न हो कर कहने लगे, "इस सम्बन्धी मुझे पहले से पता है, आपके बताने पर विश्वास और भी दृढ़ हो गया है।"

जनेऊ संस्कार

जब गुरु जी नौ वर्ष के हो गए तो जनेऊ संस्कार बारे विचार किया गया। इस सम्बन्धी दिन निश्चित कर लिया गया और सगे-सम्बंधियों को निमन्त्रण भेज दिये गए। गांव के सभी लोगों को प्रीति भोजन के लिए बुलाया गया। कुछ दिन पहले ही घर में चहल-पहल हो गई। हलवाई बिठाए गए और कई प्रकार के पकवान पकाए जाने लगे। निश्चित दिन कुल पुरोहित पंडित हरदयाल पहुंच गए। घर में एक ऊँचे स्थान पर एक चिटाई बिछाई और कुछ मन्त्र पढ़कर पंडित ने उसके इर्द-गिर्द एक रेखा खींची और स्वयं चिटाई पर बिराज गए। गुरु जी को पंडित के सामने बिठा दिया गया। इर्द-गिर्द गांव के लोग और रिश्तेदार बैठ गए। स्त्रियां एक तरफ बैठ गईं और सब से आगे आ कर बेबे नानकी जी बैठ गईं। सभी रस्में पूरी करके पंडित हरदयाल ने गुरु नानक के गले में जनेऊ डालने के लिए अपना बाजू ऊपर उठाया। रस्म को सम्पूर्ण होता देख कर सभी मेहमान महता जी को बधाई देने के लिए तैयार थे परन्तु उनकी हैरानी की कोई सीमा न रही जब उन्होंने देखा कि गुरु जी ने अपने हाथ से पुरोहित का जनेऊ वाला बाजू पीछे हटा दिया और जनेऊ पहनने से इन्कार कर दिया। वह कहने लगे, "पंडित जी! पहले मुझे बताओ कि जनेऊ पहनने का क्या लाभ है, पहले मुझे विस्तार से समझाओ तथा फिर जनेऊ मेरे गले में डालो।"

SIKHBOOKCLUB.COM

पंडित कहने लगा, "देख बेटा! यह हमारे बुजुर्गों द्वारा चलाई गई रहत-मर्यादा है। जब तक ऊँची जाति का मनुष्य जनेऊ नहीं पहनता, वह नीच और शुद्र ही रहता है। जनेऊ पहनने से वह पवित्र और उच्च जाति का बन जाता है।"

गुरु जी पंडित की यह बात सुनकर मुस्कराए और कहने लगे, "आपकी यह बात मुझे उचित नहीं लगती, इसमें कोई दलील नहीं। नीच और शुद्र वही होता है जो नीचों वाले बुरे और गंदे काम करे। क्या एक द्रोही, पापी और पाखण्डी यह धागा पहन कर ऊँची जाति का बन सकता है?

पंडित ने ऋषियों-मुनियों का वास्ता दिया कि अपने बुज़ुर्गों के रीति-रिवाज को हम कैसे छोड़ सकते हैं। गुरु जी फिर मुस्करा कर कहने लगे, "मिश्र जी! आप विवेक की बात नहीं कर रहे, जब तक आप मुझे इस जनेऊ पहनने का लाभ स्पष्ट रूप में नहीं बताते, तब तक मैं जनेऊ नहीं पहनूँगा। यह जो आपने जनेऊ का धागा पकड़ा है यह कपास की रूई को कातकर बनाया गया है, यह धागा कुछ समय पश्चात् मैला हो कर

टूट जाएगा तथा फिर और पहना जाएगा। जब मनुष्य इस संसार को छोड़ जाएगा तो यह धागा यहीं रह जाएगा और इन्सान की आत्मा के साथ नहीं जाएगा। मुझे ऐसा जनेऊ चाहिए जो कि मेरी आत्मा के साथ परलोक में भी मेरा साथ दे, यदि आपके पास ऐसा कोई जनेऊ है तो वह अवश्य मुझे पहना दो।"

पंडित निरुत्तर हो गया, हार कर वह पूछने लगा कि आत्मा का जनेऊ किस प्रकार का होता है, आप स्वयं ही बता दो। तब गुरु जी ने कहा, "इस जनेऊ को बनाने के लिए 'दया' रूपी कपास, 'संतोष' रूपी सूत, 'जत' रूपी गांठ और 'सत' रूपी बल का प्रयोग किया हो तो यह आत्मा का जनेऊ बन जाता है। यह जनेऊ पहन कर मनुष्य जब अच्छे काम करता है, सच्ची नेक कमाई करता है तो वह नीच जाति का हो कर भी स्वर्ण जाति का बन जाता है।

भैंसें चराना

जब बाला प्रीतम अपनी पढ़ाई समाप्त कर बैठे तो वह फिर खाली हो गए। उस समय विश्वविद्यालय या कालेज स्कूल नहीं हुआ करते थे। जहां तक गांव का पंडित या मौलवी पढ़ा होता था उस सीमा तक ही शागिर्द ने पढ़ाई करनी होती थी। जब उस्ताद कह देता था कि बालक ने पढ़ाई पूरी कर ली है तो उसे 'तालीमयाफता' कहा जाता था। यही उनके पास सबसे उँची सनद होती थी। जब बाला प्रीतम ने पंडित और मौलवी को स्वयं पढ़ने लगा दिया तो उन्होंने अब और क्या पढ़ना था। उनकी पढ़ाई तो आत्मिक थी, वह तो हर समय अपनी आत्मा को परमात्मा के साथ जोड़ते रहते थे। यही कारण था कि जब उन्होंने पढ़ाई पूरी कर ली तो वह हर समय परमात्मा की भक्ति में लीन रहते। वह तो प्रभु के साथ अपनी आत्मा को जोड़ कर आनन्द मानते थे, परन्तु सांसारिक लोग यह समझते थे कि बाला प्रीतम बहुत उदास हैं परन्तु वह अन्तर्मुखी रमज़ों को क्या समझते ? पिता महता जी और माता तृप्ता जी भी उन्हें इस अवस्था में देख कर उदास रहते।

एक दिन पिता महता जी ने सोचा कि उनका पुत्र खाली होने के कारण उदास रहता है, इसे वनों बीयाबानों में घूमने का बहुत शौक है जिससे हम इसे रोकते रहते हैं, इस लिए क्यों न कोई ऐसा उपाय सोचा जाए कि हमारा पुत्र स्वयं को बेकार न समझे और कुछ काम भी करता रहे। सबसे आसान और समय अनुसार उनके पास एक ऐसा काम था जो अभी तक उनके नौकर निभाते आए थे, परन्तु उस काम पर उनकी सन्तुष्टि नहीं थी। उनके पास कई गाएं और भैंसें थीं। उस समय में गाएं भैंसों को पट्ठे कुतर कर नहीं डाले जाते थे क्योंकि उनका निर्वाह केवल जंगलों में चरने तक सीमित था। जो चरवाहा अपना होता था वह तो पशुओं को खूब खिला कर लाता था, परन्तु नौकर पशुओं को ऐसी जगह ले जाते थे, जहां उन्हें मोड़ा भी न लगाना पड़े, इस लिए पशु भूखे घर आ जाते थे। इस लिए महता जी ने यह विचार किया कि पुत्र नानक को भैंसें चराने का उत्तरदायित्व सौंप दिया जाए। इस बारे जब उन्होंने अपने पुत्र के साथ बात की तो वह तुरन्त मान गए। वह प्रतिदिन भैंसों को जंगल में छोड़ देते और खुद समाधि लगा कर किसी वृक्ष के नीचे बैठे रहते। एक दिन उनकी भैंसें किसी के मक्की के खेत में जा घुसीं और सारा खेत खा गईं। जब किसान को इस बारे पता चला तो वह भागता आया और अपना खेत उजड़ा देख कर गांव के हाकिम के पास शिकायत लगाने और मुआवजा मांगने

चला गया। राय बुलार ने महता जी और गुरु जी को बुलाया। राय बुलार गुरु जी का पहले ही सिक्ख बन चुका था, इस लिए उस किसान और अपने एक कारिन्दे को खेत का निरीक्षण करने भेजा, परन्तु उसके कारिन्दे ने आकर सूचित किया कि खेत तो आगे से अधिक हरा भरा है और उसका किसी प्रकार का नुक्सान नहीं हुआ। किसान भी बहुत हैरान हुआ और वह माफी मांग कर चला गया।

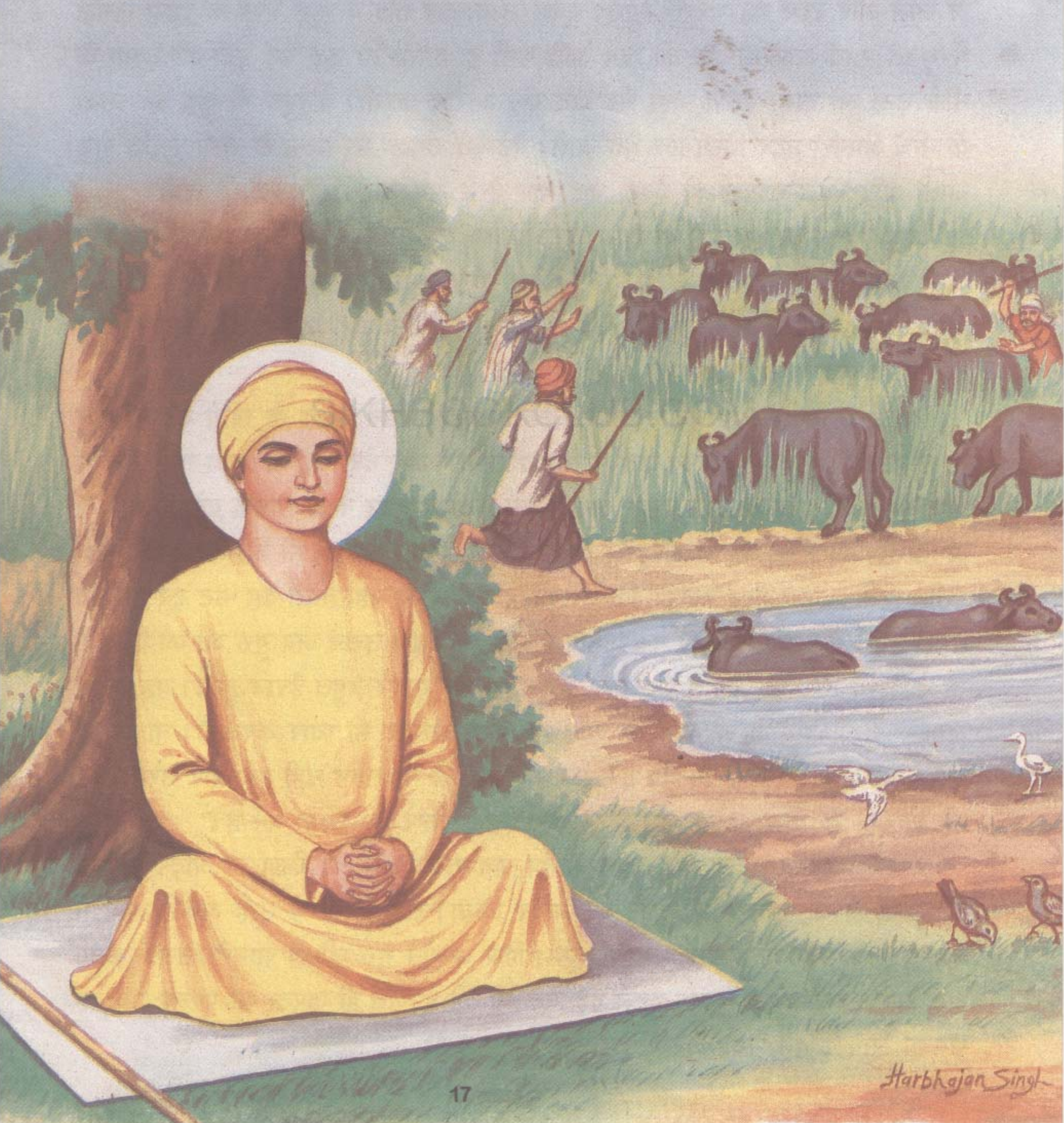

सर्प की छाया

गुरु जी को पशु चराने का काम बहुत अच्छा लगता था। वह हरी-हरी फसलों और प्राकृतिक नज़ारों वाले जंगलों और पर्वतों को देखने के बहुत शौकीन थे। प्रकृति की गोद में बैठ कर प्रकृति के साथ एक होने में उन्हें बहुत आनन्द आता था। वे पशुओं को सुबह ले जाते और शाम को घर ले आते। सुबह से दोपहर तक वे गाएं भैंसों के साथ जंगल में घूमते रहते और दोपहर को जब अति गर्मी हो जाती तो एक बड़े वृक्ष की छाया के नीचे उन्हें ला खड़ा करते जहां भैंसें बैठ कर आराम करतीं। वे खुद भी वृक्ष की छाया के नीचे अपनी चादर बिछा कर बैठ जाते। बैठे-बैठे उनकी परमात्मा के साथ सुरति जुड़ जाती और वे अन्तर्ध्यान हो जाते, कई बार ऐसी अवस्था में ही लेट भी जाते।

एक दिन जब वह प्रभु के साथ सुरति जोड़ कर लेटे हुए थे तो काफी समय बीत जाने के कारण वृक्ष की परछाई घूम गई और उनके मुख पर धूप पड़ने लग गई। वहां रहते एक फनियर सांप ने जब गुरु जी के चेहरे पर धूप पड़ती देखी तो उसने फन फैला कर उनके चेहरे पर छाया कर दी।

SIKHBOOKCLUB.COM

उसी समय हीं राय बुलार अपने नौकरों सहित अपने बाहर के खेतों को देखकर अपने गांव को आ रहे थे। जब उन्होंने सांप को फन फैलाए देखा तो वह कांप गए। उन्होंने वहां अपना घोड़ा रोका और कहने लगा, "इस फनीयर सांप ने तो नानक को काट लिया लगता है। इस लिए वह उसके सिर के पास बैठा है और नानक भी हिलता जुलता नहीं प्रतीत होता।" जब सांप ने देखा कि उसकी ओर कोई आ रहा है तो वह झट दूर खिसक गया। इतने में राय बुलार भी गुरु जी के पास पहुंच गया। उसने जब गुरु जी को हिलाया तो वे 'धन्य निरंकार' कहते उठ कर बैठ गए। राय बुलार बहुत हैरान हुआ। वह कहने लगा, " देखो! नानक को ज़हरीले और भयानक जानवर भी प्यार करते हैं। नानक के मुखड़े पर पड़ रही सूर्य की धूप इस फनीयर नाग से भी सहन नहीं हुई और उसने सूर्य की किरणों के बीच अपना फन फैला कर इसके चेहरे पर छाया की है।"

गुरु जी ने सचेत हो कर अपने समीप जब राय बुलार को देखा तो आदर से उठ कर खड़े हो गए और राय बुलार का आदर किया। राय बुलार ने उन्हें अपनी बाहों में जकड़ लिया और फिर उनका माथा चूमा। फिर उन्होंने गुरु जी के सामने सिर झुकाया और उनके चरणों को छुआ। पहले वह गुरु जी की इज़्ज़त ही करता था परन्तु अब वह उनका सिक्ख बन गया।

कई लोग ऐसी घटना पर विश्वास नहीं करते, परन्तु उन्हें यह बात कभी भूलनी नहीं चाहिए कि वे अपने एक साथी के साथ सारी आयु जंगलों, बीयाबानों और डरावने पहाड़ों में घूमते रहे परन्तु उन्हें किसी शेर-चीते आदि ने कुछ नहीं कहा था। सब जानवर उन्हें पहचानते थे। मनुष्य उन्हें शीघ्र नहीं समझ सके थे, परन्तु प्रत्येक जानवर उन्हें ईश्वरीय रूप समझता था।

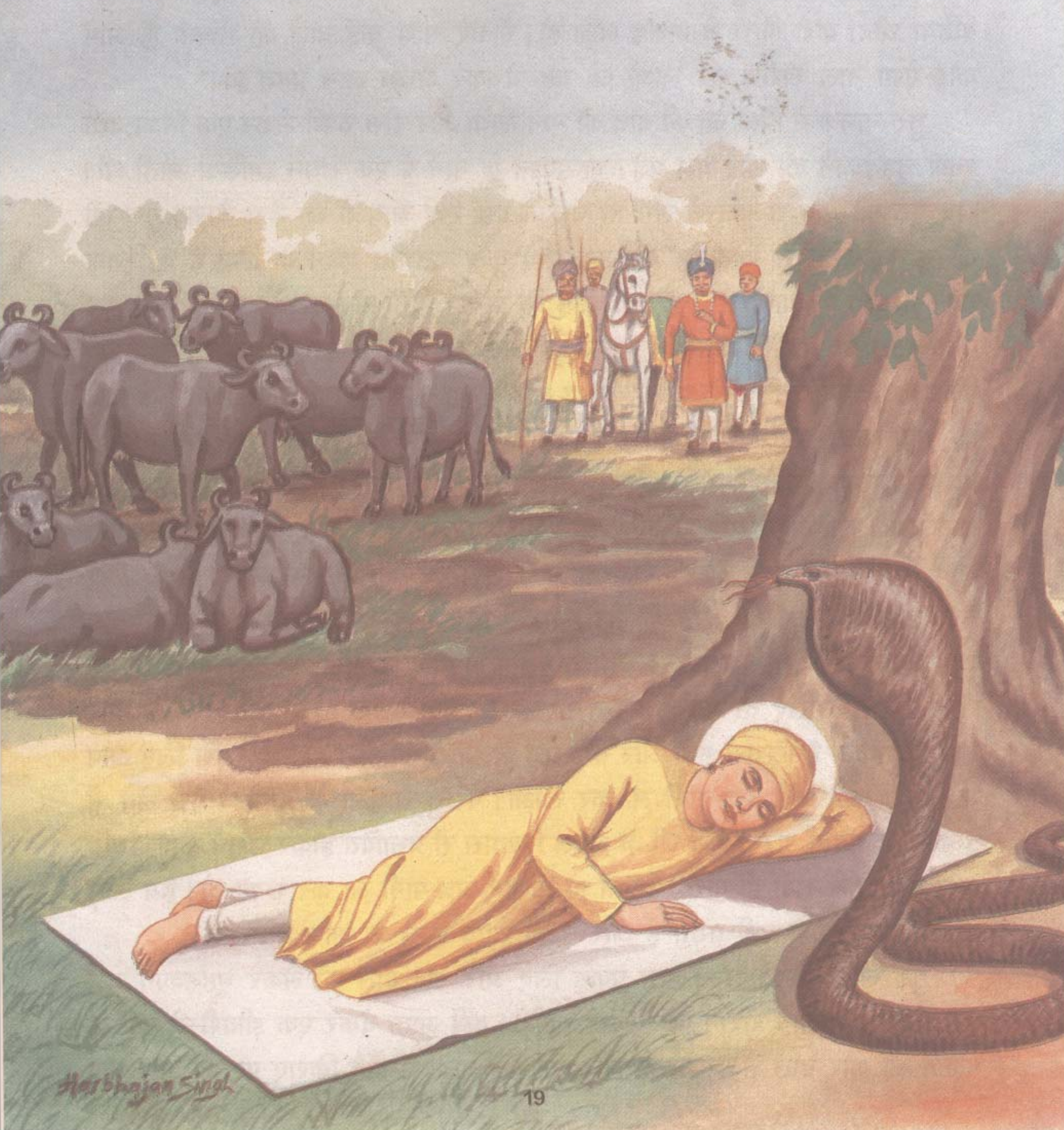

सच्चा सौदा

जब गुरु जी और बड़े हुए तो महता जी ने यह सोचा कि पुत्र को व्यापार में लगाया जाए ताकि घूमने फिरने से इसका मन भी लगा रहे और कुछ लाभ भी प्राप्त हो। इस काम के लिए उन्होंने गुरु जी को बीस रुपये दिए और कहा, "बेटा! कोई अच्छा और बढ़िया सौदा करो जिस से अच्छा लाभ हो। मैं तेरे साथ भाई बाले को भेजता हूँ, आप कोई ऐसा माल खरीद कर लाओ जो यहां बेचकर अच्छा लाभ प्राप्त हो।"

गुरु नानक ने पिता जी की बात को मान लिया और बीस रुपये लेकर एक निकटवर्ती शहर चूहड़काने की ओर चल पड़े। चूहड़काने के मार्ग में एक सघन झाडियां आती थीं। जब गुरु जी वहां से गुजरने लगे तो उन्होंने वहां एक साधुओं का डेरा देखा। गुरु जी को साधुओं-संतों से बहुत प्रेम था, इस लिए कुछ बातचीत करने के लिए वे वहीं रुक गए। साधुओं की बातों से उन्हें पता चला कि वे कई दिनों से भूखे थे। गुरु जी को उन पर बहुत दया आई और उन्होंने तुरन्त दृढ़ निश्चय किया कि इन साधुओं की सहायता की जाए। उन्होंने सोचा कि इससे बढ़िया और सच्चा सौदा क्या हो सकता है। भूखे नंगों की सेवा करना सबसे उत्तम सौदा है। इस लिए उन्होंने अपनी जेब में से बीस रुपये निकालकर साधुओं के आगे रख दिए, परन्तु साधुओं ने चांदी को हाथ लगाने से इन्कार कर दिया। साधुओं के गुरु ने कहा, "हमें चांदी की आवश्यकता नहीं, आप अभी छोटी आयु के हो, यह राशि देकर आपके पिता ने आप को कोई काम-धन्धा करने के लिए भेजा होगा, हम तपस्या करते हैं और हम कई दिन भूखे रह सकते हैं। परमात्मा स्वयं कोई उपाय कर देता है।" परन्तु गुरु जी दृढ़ता से बोले कि मुझे यह राशि कोई बढ़िया सौदा करने के लिए दी गई है, परन्तु मैं यह समझता हूं कि इससे बढ़िया सौदा और क्या हो सकता है जिससे भूखे और नंगों प्रभु के प्यारों की सेवा हो सके। इस लिए आप यह राशि रखो और अन्न-पानी ला कर खाओ। परन्तु साधुओं के मुखी ने पैसे लेने से इन्कार कर दिया, परन्तु गुरु जी के अटल विश्वास से प्रभावित होकर उसने कहा, "यदि आप वास्तव में सेवा ही करनी चाहते हो तो हमें अन्न-पानी ला कर छका दो। हम लोग खरीदो-फरोख्त में नहीं पड़ते हैं और न ही रुपये पल्लू के साथ बांधते हैं।"

गुरु जी ने रुपये अपने पास पकड़ लिए और भाई बाले को लेकर चूहड़काने चले गए। वहां से उन्होंने राशन और कपड़े खरीदे। वहीं आटा देकर एक झीवरी से रोटियां पकवा लीं और दाल तैयार करवा ली। एक बैल गाड़ी उन्होंने किराए पर ली और उस

पर बाकी का राशन, कपड़ा और दाल रोटी लाद कर साधुओं वाली झुग्गी में पहुंच आए। उन्होंने साधुओं को दाल रोटी अपने हाथों से खिलाई और पहनने के लिए उन्हें कपड़े दिए। साधु बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने गुरु जी को कई आशीर्वाद दिए। गुरु जी और भाई बाला फिर गाँव को चल पड़े। गाँव के पास पहुँच कर भाई बाले को उन्होंने गाँव भेज दिया और खुद एक सघन वृक्ष के नीचे छिप कर बैठ गए।

जब महता जी को इस समस्त वार्ता का पता लगा तो वह बहुत क्रोध में आए और गुरु जी को ढूँढ कर उन्हें बहुत डांटा परन्तु गुरु जी चुप रहे।

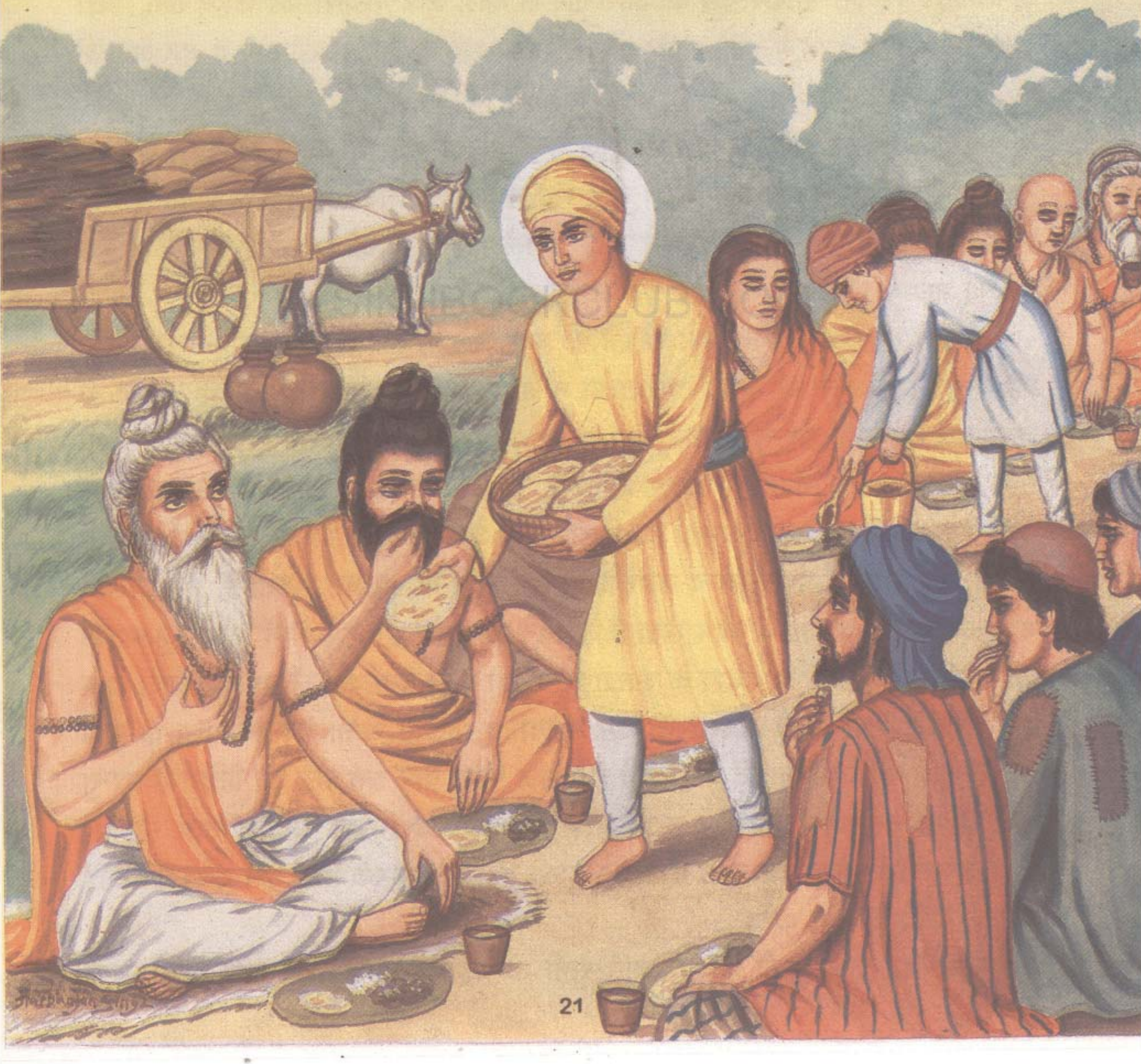

वैद्य के साथ वार्तालाप

गुरु जी फिर कुछ उदास रहने लगे। उनकी किसी भी काम काज में रुचि नहीं थी। वे हर समय प्रभु के साथ सुरति जोड़ कर कुछ गहरे विचारों में मग्न रहते। उनके माता पिता ने यह समझा, कि शायद उन्हें कोई रोग लग गया है। इस लिए एक दिन उन्होंने गाँव के वैद्य को बुला लिया। वैद्य शीघ्र ही घर आ गया और गुरु जी को चारपाई पर चुपचाप बैठा देखकर वह भी चारपाई पर बैठ गया। कुछ देर बाद उसने गुरु जी को हाथ दिखाने को कहा। गुरु जी ने जब हाथ आगे बढ़ाया तो वह नब्ज पकड़ कर देखने लग पड़ा। गुरु जी ने फिर वैद्य की ओर गौर से देखा और मुस्करा कर कहने लगे, "वैद्य जी आप क्या देख रहे हैं? मेरे शरीर को कोई रोग नहीं है, जो असली रोग है, वह आपकी समझ से बाहर है।

वैद्य ने गुरु जी की इस बात का कुछ गुस्सा किया और वह कहने लगा, "ऐसा कौन सा रोग है ज़िस बारे मुझे जानकारी नहीं, मैंने बड़े बड़े रोगियों का इलाज किया है और उन्हें ठीक किया है।" गुरु जी कहने लगे, "हमारे समाज में जो पाप और कुकर्म हो रहे हैं क्या आपने उनका कभी कोई इलाज सोचा है"?

SIKHBOOKSCLUB.COM

वैद्य ने कहा, उसे इनके बारे सोचने की क्या आवश्यकता है, यह सब कुछ परमात्मा की देन है। तब गुरु जी बोले, "परमात्मा ने तो मनुष्य पैदा किया ताकि वह संसार के दु:खों को दूर करे, परन्तु इन्सान यहां आकर तो वह कुछ कर रहा जो कोई पशु भी नहीं करता। वह जानवरों पर जुल्म ढाता है, उन्हें मारता और खाता है जबकि मनुष्य स्वयं एक मांसखोरा जानवर नहीं है। जिस मनुष्य के पास कुछ शक्ति आ जाती है, वह गरीबों और लाचारों पर जुल्म व कहर ढाता है, गरीबों की इज़्ज़त लूटता है, उन्हें गुलाम बना कर पशुओं की भांति काम लेता है। कितने हमलावर हमारे देश में आए, जुल्म का कहर बरसाते हुए वह इस देश के लाखों लोगों को दास बना कर ले गए हैं। आज आप देखते हो आपके सामने जबरदस्ती धर्म परिवर्तित कराया जाता है। परमात्मा के नाम पर हिन्दुओं की जब्री सुन्नतें की जाती हैं। आज सारा देश इस रोग से पीड़ित है परन्तु कोई चूँ भी नहीं कर रहा और न ही कोई इन ज़ुल्मों के विरुद्ध आवाज़ उठा रहा है। मैं तो इस रोगी इन्सानियत को देख कर दु:खी हूँ। यदि आपके पास इस दु:ख का कोई इलाज है तो अवश्य करें।"

जब वैद्य ने गुरु जी की यह बातें सुनीं तो वह उठ खड़ा हुआ और कहने लगा,

"नानक को कोई रोग नहीं, वह बिल्कुल ठीक है, जो इसे वास्तव में दुःख है उसका मेरे पास इलाज नहीं।" गुरु जी कहने लगे, "परन्तु मैं इस दुःख का इलाज जानता हूँ। यदि तुम्हारी आत्मा दुःखी और निर्बल है तो इसे पवित्र और बलवान बनाने के लिए परमात्मा का नाम स्मरण करने की आवश्यकता है। नाम सब दुःखों की दवाई है। जिस के पास नाम की दात है वह सदैव सुखी और आनन्दमयी रहता है और भय उसके पास नहीं फटकता।" वैद्य गुरु जी को दवाई देने आया था, परन्तु दवाई देने के स्थान पर स्वयं दवाई ले कर चला गया।

मोदी बने

उस समय ज़मीन का कर अनाज के रूप में एकत्र किया जाता था। यह कर एकत्र करने के लिए और कर निर्धारित करने के लिए एक अफसर की नियुक्ति की जाती थी। उस समय जालन्धर दोआब का हाकिम नवाब दौलत खां लोधी था। वह एक भला पुरुष था और सच्चा मुसलमान था। उसने राइ भोइ की तलवंडी का कर एकत्र करने की जिम्मेदारी जय राम की लगाई थी। श्री जय राम जी हर वर्ष तलवंडी आते थे और कर के सम्बन्ध में महता जी के साथ हिसाब किताब करते थे। महता जी को भी वह पुत्र बड़ा होनहार दिखाई दिया था। जब राय बुलार ने गुरु जी की समस्या को स्वयं सोचा तो उन्होंने यह बात निश्चित कर ली कि इस समस्या का समाधान स्वयं करेंगे। राय बुलार ने खुद ही बेबे नानकी का रिश्ता श्री जय राम के लिए मांग लिया। महता जी को इस बारे क्या एतराज़ हो सकता था, क्योंकि वह श्री जय राम जी को अच्छी तरह समझते और पहचानते थे। उन्होंने यह सलाह मान ली और बेबे नानकी का विवाह श्री जय राम के साथ तय कर दिया। श्री जय राम विवाह करवा कर बेबे नानकी को सुलतानपुर लोधी ले गए। फिर राय बुलार ने श्री जय राम को कहा कि वह सुलतानपुर लोधी में गुरु जी के लिए कोई नौकरी ढूंढें और उन्हें वहीं ले जाएं ताकि वह अपनी स्वतन्त्र ज़िन्दगी बिता सकें और महता जी के रोज़-रोज़ के कलेश से दूर रहें।

श्री जय राम ने शीघ्र ही गुरु जी के लिए नौकरी ढूँढ ली और उन्हें सुलतानपुर लोधी बुला लिया। गुरु जी के वहां पहुंचने पर उन्हें नवाब दौलत खां लोधी के मोदीखाने का मोदी लगवा दिया। नवाब ने उनका वेतन और रसद निश्चित कर दी। मोदी का काम गुरु जी के स्वभाव के अनुसार होने के कारण, उन्होंने अपने नये काम को बड़े उत्साह के साथ आरम्भ किया। यहां वह पूरा तोलते थे और प्रत्येक व्यक्ति के साथ बड़े प्रेम और आदर से पेश आते थे। उनके सामने छोटा बड़ा सब समान थे। सखी स्वभाव होने के कारण वह अपने हिस्से की रसद और वेतन का हिस्सा गरीबों में मुफ्त बांट देते थे। वह अपनी ज़िम्मेदारी बड़ी कुशलता से निभा रहे थे और नवाब भी उनके काम पर बहुत प्रसन्न हुआ।

गुरु जी अपने इस काम के साथ-साथ प्रभु भक्ति से पीछे नहीं हटे थे। वह सुबह जल्दी उठ कर वेईं नदी पर चले जाते थे और स्नान करते थे और फिर एक बेरी के नीचे बैठ कर प्रभु के साथ सुरति जोड़ कर अन्तर्ध्यान हो जाते थे। यह बेरी अभी भी

मौजूद है और यहां एक खूबसूरत गुरुद्वारा बेर साहिब है। वे दिन चढ़ने तक यहां भक्ति में लीन रहते, फिर अपनी नौकरी पर चले जाते। वे हर समय तेरा ही तेरा का जाप करते थे। यहां तक कि जब वह किसी गरीब को राशन तोल कर दे रहे होते और जब तेरह के अंक तक पहुंचते तो आगे चौदह न कहते बल्कि 'तेरा ही तेरा' कहे जाते। दिन का काम समाप्त कर वे फिर जंगल के एकांत में चले जाते। यहां भी दूर दूर से साधु महात्मा और अन्य श्रद्धालु आने लगे जिन्हें गुरु जी भोजन के साथ-साथ आत्मिक भोजन भी करवाते। प्रभु की प्रशंसा में वे मधुर गीत गाते और सब को निहाल करते।

विवाह

जब गुरु जी सुलतानपुर लोधी में मोदी की जिम्मेदारी बड़ी कुशलता से निभा रहे थे तो नवाब भी उनके फुर्तीले और सुलझे कामकाज को देख कर बहुत प्रसन्न थे। परन्तु जीजा जय राम और बहन नानकी उनके काम से कुछ चिन्तित थे। इसका कारण यह था कि गुरु जी अपने हिस्से का राशन और वेतन गरीबों में बांट देते थे। खाली समय सत्संग में और प्रभु की स्तुति में गीत गा कर बिता देते थे। अपना उनका बड़ा सादा लिबास और वह बहुत कम खाते पीते थे। वे दोनों इस बात से चिन्तित थे कि वे अपने पिता जी महता कालू को क्या बताएंगे कि उनका पुत्र इतना बड़ा अधिकारी होने पर भी कोई पैसा नहीं बचा रहा था। इसलिए उन्होंने विचार किया कि गुरु जी का अब विवाह कर दिया जाए ताकि गृहस्थ में पड़ने के कारण वह साधु-संतों की संगति को भूल जाएगा और अपने परिवार के लिए धन भी जोड़ेगा।

बटाले का रहने वाला और गांव पखोके -रंधावे का पटवारी बाबा मूल चन्द, श्री जय राम का परिचित था। उनकी एक लड़की सुलखनी बड़ी सुन्दर और सुशील थी। श्री जय राम ने उनसे रिश्ते की बात चलाई तो बाबा मूल चन्द तुरन्त सहमत हो गए, क्योंकि मोदीखाने के अधिकारी से ऊँचा रिश्ता और कौन-सा मिल सकता था।

जब गुरु नानक देव जी को विवाह के बारे पूछा तो उन्होंने कहा, "आप मुझे कोई सन्यासी समझते हो? गृहस्थ आश्रम में रह कर भी प्रभु की भक्ति हो सकती है और लोक सेवा की जा सकती है, परन्तु पहले मेरा कर्त्तव्य अपनी पत्नी की ओर होगा, फिर किसी और की ओर।"

श्री जय राम और बेबे नानकी जो पहले डरते थे कि धार्मिक विचार होने के कारण शायद गुरु जी विवाह से इन्कार कर दें, परन्तु जब उन्होंने विवाह के बारे उत्साह दिखाया तो वे बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने तुरन्त मुहूर्त निकलवा लिया और विवाह की तैयारियां शुरू कर दीं। गांव तलवंडी में भी उन्होंनें निमन्त्रण भेज कर माता तृप्ता, महता कालू और गुरु जी के अन्य मित्रों को बुला लिया। गुरु जी उस समय अट्ठारह वर्ष के हो गए थे। उनका विवाह २४ ज्येष्ठ सम्वत् १५४४ को निश्चित हुआ था। सुलतानपुर लोधी से बारात घोड़ों और ऊठों पर बटाले पहुंची। जहां बारात ने डेरा लगाया वहां साथ ही एक कच्ची दीवार खड़ी थी। एक माई ने आकर कहा कि चारपाई दीवार से थोड़ी दूर कर लो, इस दीवार का पता नहीं कब गिर पड़े। तब गुरु जी ने उस माई को कहा कि

हमें पता है, परन्तु यह दीवार कभी नहीं गिरेगी। वह अभी भी बटाले में सुशोभित है और गिरी नहीं।

गुरु जी की बारात भी अनोखी थी, इसमें यदि राय बुलार जैसे बड़े बड़े धनवान् शामिल थे तो साथ ही लंगोटियों वाले साधु और भगवें चोलों वाले संत भी मौजूद थे। बटाले के लोग ऐसी बारात को देखकर हैरान हो रहे थे। जब विवाह हो गया तो गुरु जी माता सुलखनी को ले कर सुलतानपुर लोधी आ गए। यहां उन्होंने अपना अलग मकान ले लिया। उनके माता पिता कुछ दिन ठहर कर वापिस तलवंडी चले गए।

यहीं उनके घर दो साहिबज़ादे बाबा श्री चन्द भाद्रों शुदि ९ सम्वत् १५५१ और बाबा लखमी दास १९ फाल्गुन सम्वत् १५५३ को पैदा हुए।

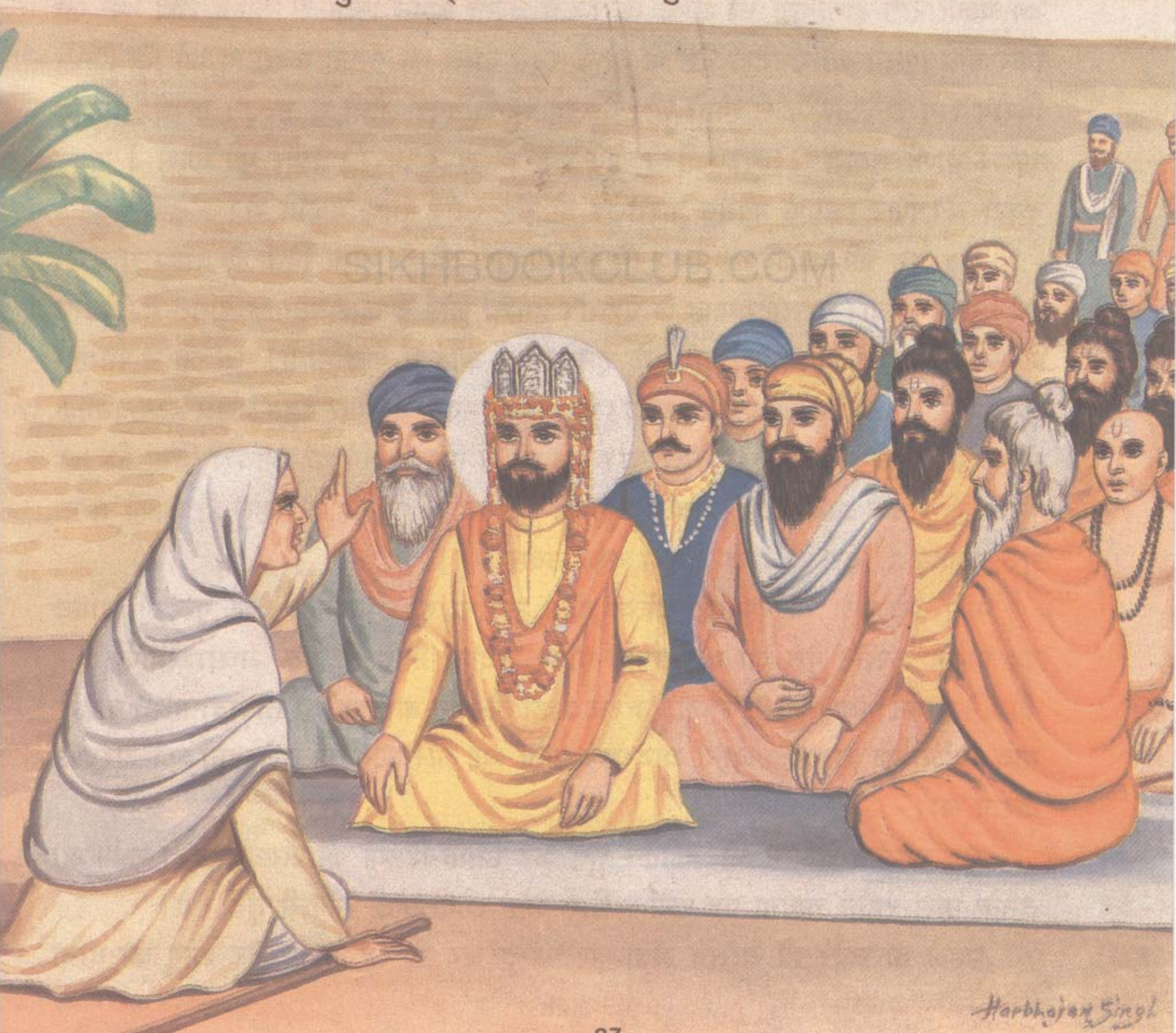

SIKHBOOKCLUB.COM

मर्दाना

मर्दाना तलवंडी गांव के मरासियों का पुत्र था। उसके परिवार का महता कालू जी के परिवार के साथ बहुत प्रेम था। मर्दाना भी रोज़ाना ही उनके घर आया करता था। गुरु जी को वह बहुत अच्छा लगता था, क्योंकि उसे प्रकृति ने एक ऐसी आवाज़ दी थी कि वह बहुत सुरीला गाता था। गुरु जी जब भी उसे मिलते तो गीत सुनाने के लिए कहते। मर्दाना लोक धुनों पर आधारित लोक गीतों को बहुत सुन्दर ढंग से गाता था। गुरु जी भी उससे गीत सीखते और उस भांति ही गाते। कुछ समय पश्चात गुरु जी भी बहुत अच्छा गाने लग गए और उनकी आवाज़ मर्दाने से भी अधिक सुरीली थी। मर्दाने को पक्के राग रागनियां भी आती थीं जिन्हें उसने अपने पिता से सीखा था। गुरु जी फिर जब किसी को उपदेश देते थे तो वे स्वयं वाणी की रचना करते थे जो कि किसी विशेष राग अनुसार गानी होती थी। वे जब सुलतानपुर लोधी में सत्संग करते तो खुद गाकर वाणी सुनाते थे। गुरु जी ने खुद एक छः तारी सारंगी तैयार की जिसे वे रवाब कहते थे। फिर जब वे कीर्तन करते थे तो यह रवाब साथ बजाते थे।

जब गुरु जी का विवाह हुआ तो मर्दाना गुरु जी के माता पिता के साथ गुरु जी को मिलने आया। मरासी विवाह के पश्चात् हमेशा कोई न कोई सौगात मांगते हैं। मर्दाने ने भी गुरु जी से विवाह की खुशी के उपलक्ष्य में कोई सौगात मांगी। गुरु जी ने सौगात के रूप में भाई मर्दाने को वह रवाब दी। मर्दाना वह रवाब देखकर बहुत प्रसन्न हुआ क्योंकि ऐसा साज उसने पहले नहीं देखा था। गुरु जी ने फिर मर्दाने को आदेश दिया कि वह पक्का ही उनके साथ रहेगा। मर्दाने को और क्या चाहिए था वह तो पहले ही काफी समय गुरु साहिब से दूर रहने के कारण बड़ा उदास था।

बस अब क्या था रोज़ाना कीर्तन होता, मर्दाना रवाब बजाता और गुरु जी शबद का गायन करते। गुरु जी की संगति पाकर मर्दाना शीघ्र ही एक अच्छा रवाबी और कीर्तनिया बन गया। जब गुरु जी एक शबद को दो-तीन बार गाते थे तो मर्दाना भी बढ़िया याद शक्ति के कारण ज़बानी याद कर लेता था और बाद में उसे गाने का अभ्यास करता था।

गुरु जी का सत्संग और कीर्तन सुन कर उनके शिष्यों की संख्या बढ़ती गई। जो उनके पास रहना चाहता वह उसके लिए कोई छोटी-मोटी नौकरी ढूँढ देते।

पहले तो सवेरे ही सत्संग होता था, परन्तु बाद में यह सुबह और शाम को दोनों

समय होने लगा। उनके शिष्यों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती गई। गुरु जी के शिष्यों को 'सिक्ख' कहते थे। उनके सिक्खों में मनसुख सबसे प्रसिद्ध और प्यारा था। यह उनका पहला सिक्ख था जो उनके शबदों को साथ-साथ लिखता जाता था और शेष शिष्य बाद में मन सुख से वह वाणी कण्ठ कर लेते थे। भाई मर्दाना जो शबद भूल जाता था वह भाई मनसुख से पूछ कर पुनः कण्ठ कर लेता था।

वेईं प्रवेश

गुरु जी लगभग बारह वर्ष मोदीखाने का काम करते रहे। वे रोज़ाना वेईं नदी पर नहाने जाते और बाद में सत्संग होता। मर्दाना रवाब बजाता और गुरु जी शबद का गायन करते। वे बड़ी ईमानदारी के साथ अपनी नौकरी कर रहे थे और अपनी कमाई में से बचा राशन गरीबों में बांट देते थे। उनके प्रभु प्रेम और दयालुता को देखकर केवल सुलतानपुर लोधी में ही नहीं बल्कि दूर तक उनका सत्कार बढ़ गया था और पहले तो वह अकेले ही स्नान करने जाते थे, परंन्तु अब उनकी ओर देख कर उनके कई सिक्ख भी उनके साथ स्नान करने के लिए जाते। एक दिन जब गुरु जी स्नान करने गए तो पहले वाले स्थान पर स्नान करने की अपेक्षा नदी के चढ़ते की ओर जाकर काफी फासले पर स्नान करने गए। उनके कुछ सिक्ख भी उनके साथ थे। गुरु जी कपड़े उतार कर नदी में प्रवेश कर गए। उनके सिक्ख काफी देर देखते रहे कि गुरु जी अब भी निकले, अब भी आए, परन्तु उन्हें बहुत हैरानी हुई जब गुरु जी सवेर तक उनको नज़र न आए। उनके सिक्खों ने दौड़ कर भाई जय राम और बेबे नानकी को खबर दी। सारे शहर में शोर मच गया और लोग एक दूसरे के आगे भागते नदी पर पहुंच गए। नवाब को भी इस बात की खबर पहुंच गई। उसने डुबकी लगाने वाले और कई प्रकार के जाल भेजे ताकि वे गुरु जी को ढूंढ लें, परन्तु तीन दिन तक गुरु साहिब बारे पता न लगा। तीसरे दिन लोग क्या देखते हैं कि उस स्थान पर जहां से गुरु जी नदी में प्रवेश कर गए थे, वह वहां समाधि लगाए बैठे थे। जब लोगों का शोर सुना तो वे उठ बैठे और कहने लगे, "परमात्मा एक है, न कोई हिन्दू न कोई मुसलमान।" कुछ लोगों ने जाकर नवाब को भी खबर दी कि गुरु जी मिल गए हैं और वे यह कह रहे हैं, "न कोई हिन्दु है, न कोई मुसलमान है।" नवाब ने कुछ नौकर भेजे कि गुरु जी को बुला कर लाएं। जब उन्होंने गुरु जी को जा कर कहा कि आपको नवाब ने बुलाया है तो गुरु जी बोले, "मैं अब केवल एक करतार का नौकर हूँ। और किसी का नहीं। आज से मोदीखाने की नौकरी मैंने छोड़ दी है।" जब नौकरों ने नवाब को गुरु जी का जवाब सुनाया तो उसने फिर नौकरों को भेजा और कहा कि वह केवल गुरु जी को मिलना चाहते हैं, वह उन्हें मालिक के तौर पर नहीं, बल्कि मित्र के तौर पर बुला रहे हैं।

गुरु जी यह बात सुन कर नवाब के पास चले गए। सुलतानपुर लोधी का काज़ी भी उस समय वहां बैठा था। काज़ी ने कहा, यह जो आप कह रहे हो कि न कोई हिन्दु

SIKHBOOKCLUB.COM

न कोई मुसलमान, इसका क्या भाव है? क्या आप को दिखता नहीं कि हम मुसलमान आपके सामने बैठे हैं। गुरु जी ने जवाब दिया कि बिल्कुल उन्होंने इसी तरह ही कहा था और आगे से भी इसी तरह कहेंगे। काज़ी कहने लगा कि आप को यह साबित करना पड़ेगा कि हम मुसलमान क्यों नहीं।

गुरु जी मुस्करा कर कहने लगे, "यह ठीक है लाखों लोग अपने आप को मुसलमान कहलाते हैं, परन्तु केवल कहलाने से क्या हो जाता है यदि उनमें सच्चे मुसलमान वाले गुण नहीं हैं। क्या परमात्मा एक नहीं है और सब उसकी सन्तान नहीं हैं? जब सभी परमात्मा की सन्तान हैं तो फिर यह भाई-भाई क्यों नहीं हैं? मुझे बताओ क्या यह भाइयों की भांति रहते हैं, यह एक दूसरे को प्यार करने की जगह इतनी घृणा करते है कि एक दूसरे के खून के प्यासे हैं। यह काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार में ग्रसे हुए हैं। सच्चा मुसलमान वह है जो दूसरों का हक न छीने, निर्दोषों पर जुल्म न करे और प्रत्येक के साथ न्याय करे। क्या यहां कोई ऐसा मुसलमान है जो अपनी कमाई में से कुछ गरीबों को देता हो और हर इन्सान को समानता का दर्जा देता हो। काज़ी और नवाब गुरु जी की इन बातों से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने गुरु जी के आगे सिर झुकाया और कहा "हे नानक! आप धन्य हो, आपने हमें हमारी औकात से परिचित कराया है।"

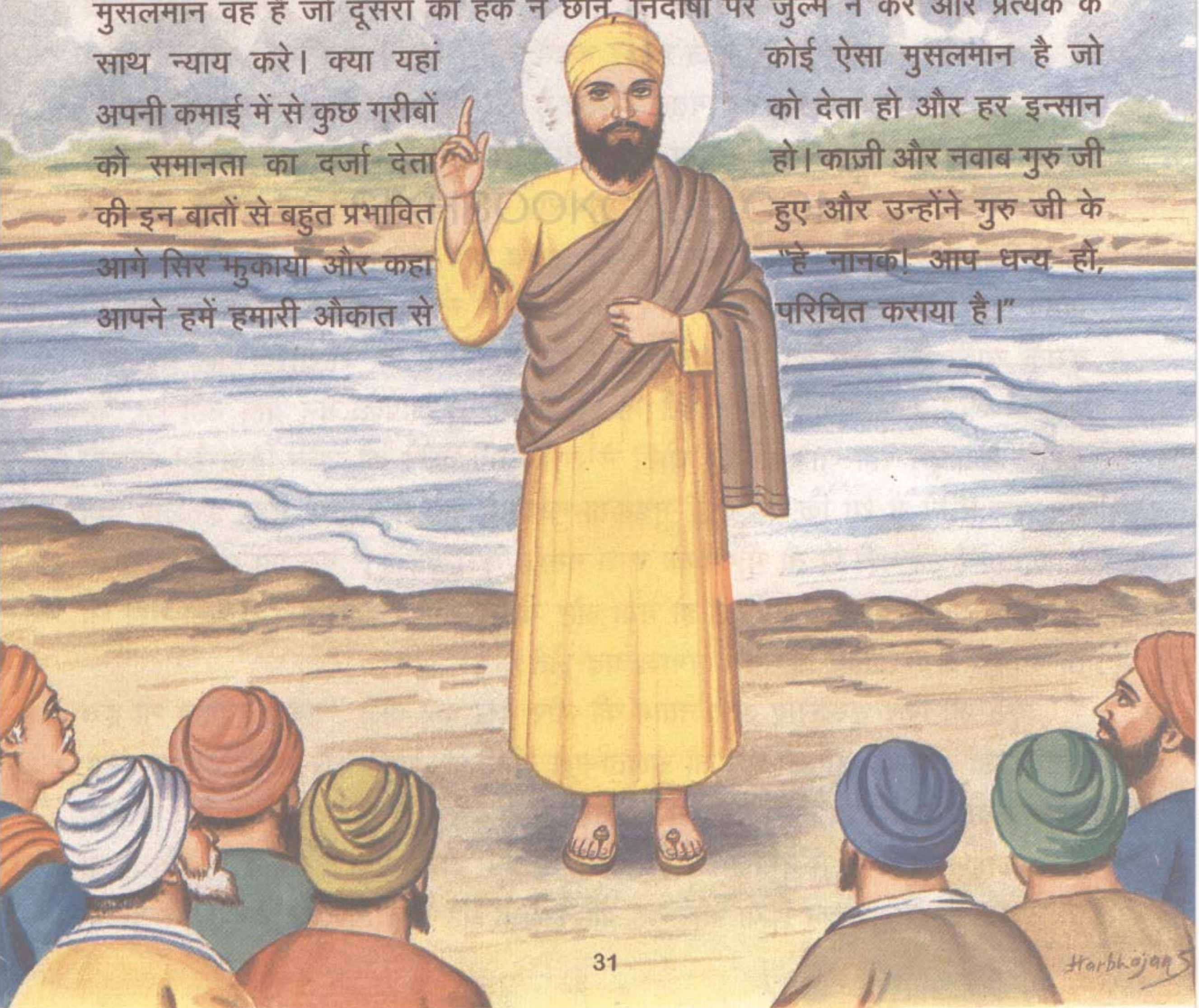

सच्ची नमाज

गुरु जी ने मोदीखाने की नौकरी छोड़ दी और सारा हिसाब-किताब चुकता करके आज़ाद हो गए। अब वे सारा दिन अपनी इच्छा से बिताते थे और हर समय कीर्तन प्रवाह और सत्संग चलता था। एक दिन काज़ी ने नवाब को कहा कि गुरु नानक यह कहते हैं कि न कोई मुसलमान है और न कोई हिन्दू है और यदि उन्हें इन दोनों मजहबों में कोई अन्तर नहीं दिखता तो फिर वह हमारे साथ मस्जिद में नमाज़ पढ़ें। नवाब को काज़ी की यह बात पसन्द आ गई। उन्होंने गुरु जी को सन्देश भेजा कि आज वे हमारे साथ मिल कर नमाज पढ़ें। गुरु जी ने उनकी बात मान ली और वे भी मस्जिद में पहुंच गए। काज़ी और नवाब वहां पहले पहुंच चुके थे। जब नमाज शुरू हुई तो काज़ी नमाज के नियमों के मुताबिक नमाज पढ़ते रहे पर गुरु जी चुप खड़े रहे। जब नमाज समाप्त हुई तो नवाब और काज़ी दोनों नाराज़ होकर कहने लगे, "आपने यहां पहुंच कर भी हमारे साथ नमाज नहीं पढ़ी है। इसका मतलब स्पष्ट है कि आप हिन्दू और मुसलमान में अन्तर समझते हो, यदि आप यह भिन्नता न समझते तो अवश्य हमारे साथ नमाज पढ़ते।

उनकी यह बात सुन कर गुरु जी मुस्कराए और कहने लगे, "मैं नमाज किस के साथ पढ़ता, हे काज़ी साहिब! आप तो उस समय यहां नहीं थे।" काज़ी हैरान हो कर कहने लगा, "मैं यहां क्यों नहीं था, मैंने आपके सामने नमाज पढ़ी है और नवाब जी भी इसके साक्षी हैं।" गुरु जी फिर कहने लगे, "मैं मानता हूँ कि शारीरिक तौर पर आप यहीं थे और आप झुकते और उठते भी रहे हो, परन्तु आपका मन यहां नहीं था, वह आपके घर घूम रहा था। आपकी घोड़ी ने अभी-अभी बछेरे को जन्म दिया है। आपका मन उस बछेरे में था कि वह कहीं भुड़कता-भुड़कता कुएं में न गिर पड़े। इसलिए जब आप यहां है ही नहीं थे तो मैं आपके साथ नमाज कैसे पढ़ता।" गुरु जी की इन सच्ची बातों को सुन कर काज़ी शर्मिंदा हो गया और कहने लगा, "चलो यदि मैं यहां नहीं था तो आप नवाब साहिब के साथ नमाज पढ़ लेते।

गुरु जी फिर मुस्कराए और नवाब की ओर देख कर बोले, "नवाब साहिब भी इस समय यहां कब थे, आपका मन तो सुलतानपुर लोधी में आपके घर में ही घूम रहा था, परन्तु नवाब साहिब तो हिन्दुस्तान से भी बाहर काबुल में घोड़े खरीद रहे थे, फिर बताओ वे तो काबुल पहुंचे थे, मैं नमाज किसके साथ पढ़ता।" जब काज़ी ने नवाब की ओर देखा तो उसने भी सिर झुका दिया और वह कहने लगा यह बात बिल्कुल सच्ची है। नानक

तो कोई औलिया या पैगम्बर है। यह सब के दिलों की जानता है, आज इसने हमारी आंखें खोल दी हैं। यह कह कर नवाब गुरु जी के चरणों पर गिर पड़ा। जब नवाब झुक गया तो काज़ी क्या था वह भी गुरु जी के चरणों पर गिर पड़ा। वे कहने लगे, "ऐ हमारे मुर्शिद! हमें यह समझाओ कि सच्ची नमाज कैसे अदा की जा सकती है।" गुरु जी ने उन्हें समझाया, "सच्ची नमाज तभी अदा हो सकती है यदि हम अल्लाह को हाज़र नाज़र अपने सामने समझें और अपने मन को एकाग्र करके उसके चरणों में टिका दें। दिखावे की नमाज का कोई लाभ नहीं, हम एकान्त में भी अपनी सुरति अल्लाह के साथ जोड़ सकते हैं।"

SIKHBOOKCLUB.COM

चढ़िआ सोधण धरति लुकाई

कुछ दिन सुलतानपुर लोधी में कीर्तन का प्रवाह चलाकर और नगरवासियों को सच्चे धर्म का उपदेश देकर गुरु जी संसार का कल्याण करने के लिए निकल पड़े। उन्होंने अपने इस उद्देश्य के बारे में बेबे नानकी और पत्नी सुलखनी जी को बताया तो वे बहुत उदास हो गईं। बेबे नानकी का प्यारा भाई उसकी आँखों के सामने ही एक पूजनीय हस्ती बन गया था। राय बुलार और बेबे नानकी पहले दो व्यक्ति थे जिन्हें यह पता लग गया था कि नानक निरंकारी रूप हैं और वे इस जलती दुनिया को शांत करने के लिए आए थे। इसलिए उसे यह गर्व था कि उसका भाई अकारण ही परिवार को छोड़ कर नहीं जा रहा था बल्कि वह दुनिया को प्रेम की शिक्षा देने जा रहे थे।

गुरु साहिब ने उन्हें आश्वासन दिया, "हम सब जीव परमात्मा के आसरे हैं, वह सबका पालन करता है, आपका भी वह पालन करेगा। मैं कहीं दूर नहीं चला। सदैव आपके पास हूँ, जब भी आप मुझे स्मरण करेंगे, मैं तत्काल आपके पास पहुँच जाऊँगा।" इस प्रकार परिजनों को धैर्य देकर पूरे नगर को अलविदा कहकर गुरु जी अपने लम्बे मार्ग पर निकल पड़े। नवाब दौलत खां लोधी एवं अन्य अमीर वजीर भी नम आँखों से गुरु जी को अलविदा कहने आए। पूरा नगर इतना उदास हो गया जैसे

उनकी सबसे प्यारी वस्तु कहीं दूर जा रही हो। सुलतानपुर लोधी से चलकर गुरु जी ने ब्यास नदी को पार किया और उस उजाड़ स्थल पर जा बैठे जहाँ आजकल गोइंदवाल नगर बसा हुआ है। गुरु जी ने एक घने पेड़ के नीचे आवास कर लिया।

जब कुछ समय बीत गया तो मर्दाना कहने लगा, "सतिगुरु जी मुझे भूख बहुत लगी है, आप उजाड़ में बैठ गए हो, जहाँ दूर-दूर तक मनुष्य दिखाई नहीं देता है। गुरु जी मर्दाने की यह बात सुनकर मुस्कुराए और फुरमाया, "जिस स्थान पर हम बैठे हैं, यहाँ कुछ समय पश्चात् एक भला पुरुष नगर आबाद करेगा, यहाँ प्रभु के नाम का जाप होगा और हमारी सिक्खी का विस्तार होगा। शेष रही तेरी भूख की बात, अभी तो हमने कुछ राह भी तय नहीं किया है। हमने बहुत लम्बी यात्रा करनी है। तुझे कुछ सब्र-संतोष से भी काम लेना पड़ेगा।"

गुरु जी वहाँ बैठे ही थे तो उस जमीन का मालिक अपने खेतों में घूमने आया। उसने जब देखा कि उसके खेत में दो साधु विश्राम कर रहे हैं, तो वह अपने घर को लौट गया। घर में से वह कुछ भोजन एवं दूध लेकर गुरु जी के पास उपस्थित हो गया। गुरु जी को वंदना करके उसने विनती की, "संत जी मैं कुछ भोजन एवं दूध लेकर आया हूँ, कृपा करके सेवन करो। गुरु जी ने उससे दूध एवं भोजन ले लिया और उस मनुष्य को कहने लगे, हे पुरुष! तेरा कौन-सा गांव है।" उस मनुष्य ने बताया कि वह वैरोवाल का निवासी है।

SIKHBOOKCLUB.COM

गुरु जी ने पुनः पूछा, "क्या यह जमीन तेरी है।" उस मनुष्य ने गुरु जी की ओर देखा, उनके चेहरे पर उसको इलाही नूर दिखाई दिया। आप भी किसी अद्वितीय तेज में भर कर बोला, "महापुरुषो! यह जमीन आपकी ही है, मैं तो आपका रखवाला हूँ।" सतिगुरु जी यह उत्तर सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और कहने लगे, "किसी दिन तेरी इस जमीन पर एक सुन्दर नगर बसेगा और तू अपने इलाके का बड़ा सरदार बनेगा।" यह वर देकर गुरु जी ने मर्दाने को भोजन ग्रहण करने के लिए दिया और दूध का कटोरा भी उसके आगे रख दिया।

यह देखकर वह जमींदार बहुत हैरान हुआ और कहने लगा, "महाराज, आपने तो भोजन को मुँह नहीं लगाया है, मेरी विनती मानकर कुछ भोजन ग्रहण कर मुझे कृतार्थ करो।"

गुरु जी ने उसकी विनती मानकर कुछ दूध लिया।

उसके बाद गुरु जी आगे चलकर उस स्थान पर पहुँच गए, जहाँ आजकल अमृतसर नगर बसता है।

भाई लालो

सुल्तानपुर लोधी को अलविदा कह कर गुरु जी एक लम्बी यात्रा पर चल पड़े। भाई मर्दाना उनके साथ था। सबसे पहले वह तलवंडी राइ भोइ को गए। वहां पर वह अपने माता-पिता तथा गांव के अन्य लोगों को मिले। भाई मर्दाना भी अपने घर वालों को मिलने गया और उसने भी अपना मनोरथ बताया कि गुरु जी के साथ लम्बे मार्ग पर जा रहा है। भाई मर्दाने का नया रूप देखकर उसके घर वाले बहुत प्रसन्न हुए। अपने पुत्र को एक अच्छा गायक व रवाबी देखकर उनकी प्रसन्नता की सीमा न रही। गुरु जी ने भी अपने माता-पिता को अपने लम्बे मार्ग बारे बता दिया। उन्होंने बेशक गुरु जी को रोकने की कोशिश की लेकिन अपने पुत्र के ईश्वरीय मनोरथ के समने वे भी झुक गए और उन्होंने खुशी-खुशी अपने पुत्र को अशान्त लोकाई को शांत करने के लिए रवाना कर दिया।

गुरु जी और भाई मर्दाना अब निश्चिंत होकर अपनी यात्रा के लिए निकल पड़े। इस यात्रा का पहला पड़ाव उन्होंने सैदपुर, जिस को बाद में 'ऐमनाबाद' कहा जाता था, जाकर किया। गुरु जी ने एक नई किस्म का पहनावा पहना हुआ था और भाई मर्दाने ने वैसे ही विचित्र पहनावे के साथ एक विचित्र साज भी उठाया हुआ था। जो भी उन्हें देखता था, उनके अद्भुत रूप से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था। वह जिस ओर भी जाते थे, सैदपुर के लोग उनके पीछे-पीछे हो चले। जब वह चलते जा रहे थे तो गुरु जी ने देखा कि एक कारीगर अपने कार्य में मग्न खेतीबाड़ी से संबंधित औजार बनाने में व्यस्त था। सभी लोग तो गुरु जी को देखते ही उनके पीछे लग जाते थे, लेकिन उस कारीगर ने इतना शोर-गुल होने के बावजूद भी गुरु जी की ओर न देखा। गुरु जी कुछ देर उस ओर देखते रहे, लेकिन फिर भी उसने न देखा और न ही अपने कार्य की ओर से ध्यान हटाया। गुरु जी वहीं रुक गए और भाई मर्दाने को कहने लगे, "हमें आज हमारा पहला सिख मिल गया है, इस मनुष्य की ओर देखो, यह अपने कार्य में इतना विलीन है कि इसे शेष दुनिया का कोई भी अहसास नहीं। जिस तरह इस श्रमिक ने अपने श्रम में मन लगाया है और अपने बाह्य माहौल को भूल गया है, यदि इस तरह ही मनुष्य अपनी चेतना प्रभु के शबद से जोड़े तो वह प्रभु को पा सकता है। आज हमारा पहला पड़ाव यहीं पर ही होगा।"

गुरु जी और भाई मर्दाना भाई लालो की दुकान के सामने जाकर खड़े हो गए। भाई लालो को जब अपने निकट कुछ हिलजुल का अहसास हुआ तो उसने सिर उठाया, क्या

देखता है कि एक ईश्वरीय चेहरा उस ओर देख कर मुस्करा रहा है। उस ने अपना कामकाज बीच में ही छोड़ दिया और गुरु जी को नमस्कार करके कहने लगा, "आओ महापुरुषो! पधारें।" वह उन्हें अपने घर ले गया और मंजी पर बैठने के लिए विनय की। गुरु जी ने उसके संकेत को समझ लिया और मंजी पर वह इस प्रकार बैठ गए जैसे अपने घर में ही आ गए हों।

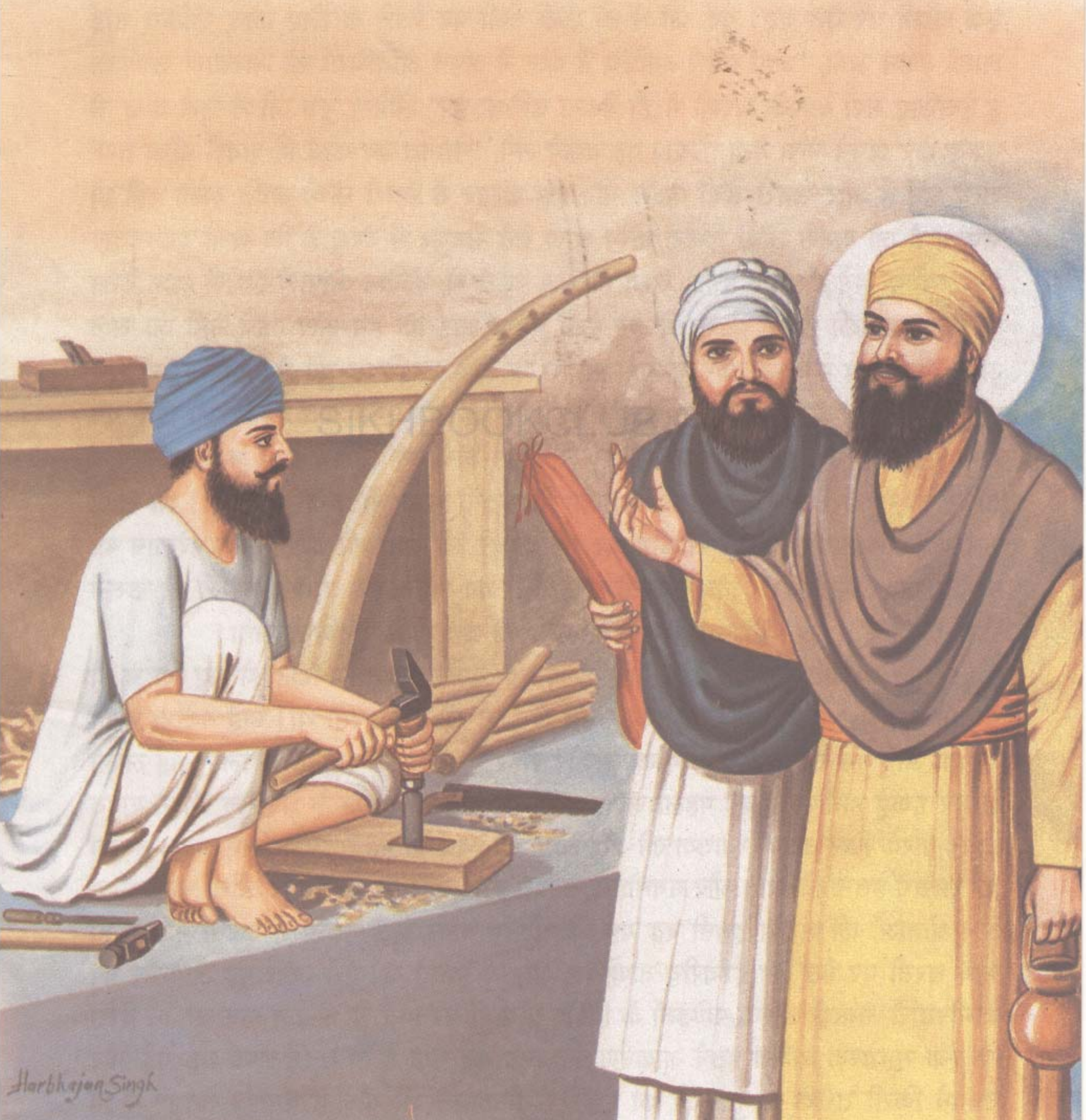

सबसे ऊँची जाति

भाई लालो गुरु जी को मंजी पर बैठा कर अपनी पत्नी को कहने चले गए कि कुछ जल-पान तैयार करें क्योंकि देव अतिथि आए हैं उनकी घरवाली अर्थात् उनकी पत्नी 'हां जी' कह कर अपने कार्य में व्यस्त हो गई और भाई लालो गुरु साहिब के निकट एक चौंकी पर बैठ गए। गुरु जी ने तो उन्हें मंजी पर बैठने के लिए कहा, लेकिन भाई लालो कहने लगा, "आप हमारे अतिथि हैं और मैं अपने अतिथियों को सिरताज समझता हूं इसलिए मेरा आपके चरणों में ही बैठना उचित है।" लेकिन गुरु जी ने उसे बाजू से पकड़ कर अपने पास बैठा लिया। वह कहने लगे, "मेहनत का कार्य ही सबसे ऊँचा तथा सत्य धर्म है और सबसे उँची जाति भी। इस संसार में सबसे ऊँची जाति वाला वही हो सकता है जो सबसे ऊँची किरत करे। आज मैंने सैदपुर में देखा है कि सभी दुकानदार और श्रमिक हमें देखकर हमारे साथ ही चल पड़ते थे, लेकिन आप ने हमारी ओर देखा भी नहीं, आपकी सच्ची किरत में हमें ऐसी महक आई कि हम और आगे नहीं जा सके और आज तुझे प्रभु जानकर तुम्हारी संगति के लिए उपस्थित हुए हैं। भाई लालो गुरु साहिब की ऐसी बातों से बहुत प्रभावित हुए और वह थोड़ी देर बाद कोधरे की रोटी पर साग रख कर ले आए। गुरु जी तो तुरन्त खाने लग गए लेकिन भाई मर्दाना निवाला तोड़ने से भी डरता था, वह समझ रहा था कि इतनी सख्त रोटी कैसे खाएगा। जो सारी उम्र बढ़िया खाना खाने का शौकीन था, वह कोधरे की रोटी को देखकर ही परेशान था लेकिन जब उसने देखा कि गुरु जी उस रोटी को बड़े स्वाद से खा रहे हैं तो उसने ग्रास लिया और ज्यों ही उसने मुंह में डाला तो वह अति स्वादिष्ट लगा।

इसके पश्चात् गुरु जी और भाई लालो एक दूसरे के इतने निकट हो गए कि न ही गुरु जी का और न ही भाई लालो का उनसे बिछुड़ने को मन करता था। भाई मर्दाना रवाब बजाता और गुरु जी शबद गायन करते और शहर के आम लोग सुनने के लिए भाई लालो के घर इकट्ठे होने लगे। वह पहला सत्संग था जब भाई लालो जी के घर गुरु जी ने शबद गायन करके फिर उसकी व्याख्या की और लोगों को स्वयं को पहचानने के लिए कहा। उनका यह सत्संग इतना विख्यात और मनमोहक साबित हुआ कि सारा ही सैदपुर खींचा चला आया और श्रोताओं की संख्या इतनी बढ़ गई कि सत्संग बाहर खुले मैदान में करना पड़ा, जहां लोग धरती पर बैठ कर ईश्वरीय वाणी का आनन्द मानते थे। ऐसे जनसमूह आमतौर पर जागीरदारों, नवाबों अथवा पण्डितों के विशेष प्रोग्रामों पर होते थे, लेकिन जब उन्होंने देखा कि एक साधारण व्यक्ति इतने आकर्षण का केन्द्र बन गया है तो उनमें ईर्ष्या बढ़ गई और उन्होंने किसी तरीके से गुरु जी को शहर से निकालने की योजना बनाई। सैदपुर में ही

मलक भागो, वहां का कार-मुख्त्यार था, वह सरकारी बल पर अति जुल्म करके धन कमाता था और स्वयं को परमात्मा समझता था। स्वयं को श्रेष्ठ बताने के लिए उस ने एक दिन ब्रह्म-भोज किया और अपने सेवकों को कहा कि प्रत्येक संत-महात्मा इस भोज में उपस्थित हो। भाई लालो तथा गुरु जी को भी यह सन्देश पहुंचा लेकिन गुरु जी ने जाने से साफ इन्कार कर दिया। मलक भागो ने बहुत यत्न किए कि वह गुरु जी को अपने ब्रह्म-भोज पर ले आए लेकिन गुरु जी किसी भी तरह न माने। दरअसल उस समय पण्डितों तथा क्षत्रियों को यह पता चल चुका था कि गुरु जी एक ऊँची बेदी क्षत्रीय वंश से संबंधित हैं, इसलिए वह नहीं चाहते थे कि गुरु जी एक नीच जाति डूम मुसलमान के साथ घूमें और एक कमीन जाति के बढ़ई के घर ठहरें।

मलक भागो

इस तरह जब गुरु जी ने मलक भागो के छत्तीस पदार्थों को खाने से इन्कार कर दिया और उनको विशेष तौर पर बुलाने आए मलक भागों के दूतों को यह कह भिजवा दिया कि मलक भागो के रक्त भीगे पदार्थों से मुझे भाई लालो के सूखे टुकड़े अच्छे हैं तो मलक भागो बहुत क्रोध में आ गया। उसने अपने नौकरों को आदेश दिया कि वह किसी भी तरह से गुरु नानक को उसके ब्रह्म-भोज पर लेकर आएं और उसे बताएं कि कैसे उसके पकवान में रक्त भरा हुआ है। जब गुरु जी को यह संदेश मिला तो वह भाई लालो और अपने अन्य सैंकड़ों श्रद्धालुओं को लेकर मलक भागो के ब्रह्म-भोज पर पहुंच गए तथा मलक भागो ने बड़े सत्कार से गुरु जी को बैठने के लिए कहा लेकिन गुरु जी ने कहा, "हम भोजन खाने नहीं बल्कि आपके आदेश की पालना करने आए हैं।" फिर मलक भागो क्रोध में आ गया और उसने गुरु जी को कहा, "आपने मेरे पकवान को रक्त भीगा कहा है जबकि इसकी तैयारी में मैंने कई मण घी लगा दिया है।" गुरु जी भी फिर जलाल में आ गए और वह उठकर कहने लगे, "इस में क्या शंका है कि कमीन की मेहनत की किरत अमृत का रूप है और यह उँची जाति के जुल्म तथा जब्र से छीनी रोटी, जो कितने ही लोगों के रक्त को चूस कर बनी है, रक्त के घूटों से कैसे कम है। इसलिए मैं दावे से कह सकता हूं कि आपके घी के बने पदार्थों में रक्त है और कोधरे की रोटी में दूध समान अमृत है। मलक भागो ने यह बात सुनकर चिड़कर कहा कि आप या तो यह बात प्रमाणित करो या फिर मेरा यह ब्रह्म-भोज खाओ। गुरु जी ने कहा, "यदि आप यह सब अपनी आंखों से देखना चाहते हो तो इसमें मुझे कोई एतराज नहीं, लेकिन पहले भाई लालो के घर से भी कुछ सूखी रोटियां मंगवाओ। उसी समय भाई लालो के घर से कोधरे की रोटी मंगवाई गई और मलक भागो के बढ़िया पकवान भी एक चांदी के थाल में डालकर लाए गए। गुरु जी ने एक हाथ में कोधरे की सूखी रोटी पकड़ ली और दूसरे हाथ में मलक भागो का एक माल पूड़ा पकड़ लिया, फिर सब के सामने उन्होंने दोनों हाथों को दबाया। भाई लालो की रोटी में से दूध टपका और माल पूड़े में से रक्त की बूंदें पृथ्वी पर गिरीं। अब तक वहां हजारों लोग इकट्ठे हो चुके थे। सब ने यह कौतुक अपनी आंखों से देखा। आज तक जितने भी श्रमिक मलक भागो को अपना अधिकारी मानते थे, वे सब उस को तुच्छ समझने लग पड़े। सारे शहर में गुरु जी तथा भाई लालो की जय-जयकार हो गई और मलक भागो पर थू-थू करने लगे। अब तक मलक भागो का भी अभिमान टूट चुका था। वह समझ गया था कि उसकी कमाई सच्ची किरत नहीं

SIKHBOOKCLUB.COM

थी, बल्कि लोगों की किरत में से मारी हुई ठगी थी। इसलिए उसे यूं अनुभव हुआ जैसे सच्चे परमात्मा ने उसे स्वयं प्रताड़ित किया हो। उन हजारों लोगों के सामने, जिनको वह अपने कामे व सेवक समझता था, वह गुरु जी के चरणों में गिर गया। गुरु जी ने उसे अपने हाथों से उठाया और समझाया कि जो सुख व शान्ति मेहनत की किरत में है, वह अन्य कहीं नहीं। यह ब्रह्म-भोज करवाने से केवल अपने अहंकार को ही बढ़ावा मिलता है, इस से अपने जीवन का किसी तरह से भी कल्याण नहीं होता। मलक भागो तो क्या, अब सारा शहर ही गुरु जी का श्रद्धालु हो गया था। अब लालो के घर के सामने सत्संग होता और हजारों लोग गुरु साहिब का सत्संग सुनने के लिए नियमबद्ध हो गए। छोटे बच्चे भी जब गुरु जी की मीठी आवाज़ सुनते तो बंध जाते, वह भी अब अपनी अन्य खेलों को भूल गए थे और कीर्तन सुनने के अभ्यस्त हो गए थे। मलक भागो भी गुरु जी का सिक्ख बना और गुरु जी ने उसे उपदेश दिया कि प्रायः सत्य बोलना चाहिए और सत्य व शुद्ध किरत करनी चाहिए। इन्सान जाति, वंश के कारण ऊँचा नहीं होता, बल्कि अपने कार्यों से ऊँचा होता है।

SIKHBOOKCLUB.COM

सज्जन ठग

गुरु जी कुछ समय सैदपुर ठहर कर फिर आगे चल पड़े। चलते-चलते गुरु जी और मर्दाना एक ऐसे नगर में पहुंचे जिसका नाम तुलम्भा था। यह नगर शाह मार्ग पर था और नगर के बाहर ही एक बहुत बड़ी हवेली बनी हुई थी। हवेली के एक ओर मन्दिर बना था तथा दूसरी ओर मसीत बनी हुई थी। मध्य बहुत ऊँचे ऊँचे चुबारे और सुन्दर कमरे थे। जब गुरु जी हवेली की ओर गए तो हवेली के द्वार पर दो सेवक खड़े थे जो प्रत्येक राही को स्वागतम् कहते थे ठहरने के लिए विनय करते थे।

यह हवेली एक सज्जन नामक ठग की थी। वह प्रायः सफ़ेद वस्त्र पहनता और एक हाथ में सुमिरणी तथा गले में रुद्राक्ष की माला डालता। नगर के लोग उस को एक महान धर्मात्मा समझते थे क्योंकि वह प्रत्येक अतिथि की सेवा करता था। हर समय लंगर चलता था। मुसलमान मुसाफिरों के लिए उसने मसीत बनाई थी तथा हिन्दुओं के लिए मन्दिर बनाया हुआ था लेकिन वह दिल का बहुत नीच व जालिम था। रात को भोजन खाकर जब मुसाफिर सुन्दर बिस्तरों पर सो जाते तो वह उनके सामान की तलाशी लेता, जिनके पास कुछ माल-धन होता उनको वह अपने नौकरों से गला घोंट कर मरवा देता और हवेली के तहखाने में बने कुओं में फैंकवा देता। सारा माल धन उसका हो जाता लेकिन जिसके पास कुछ न होता उसे अगले दिन जाने देता। इस तरह जो व्यक्ति बच कर निकल जाते थे, वह उसकी उपमा करते, जिस कारण कोई भी उस पर शंका न करता।

गुरु जी तथा मर्दाना जब मुख्य द्वार पर पहुंचे तो उसके सेवक बड़े सत्कार के साथ उन्हें अन्दर ले गए। गुरु जी के चेहरे के नूर तथा उनके साथ एक सेवक को देखकर वह समझ गए कि वे कोई हीरों केव्यापारी हैं। उन्होंने तुरन्त अपने मालिक को समाचार दिया और उसने भी आकर गुरु जी को आदाब किया।

गुरु जी ने मुस्कराते हुए उसका नाम पूछा। वह कहने लगा, "जी मेरा नाम सज्जन है, मुसलमान मुझे शेख सज्जन कहते हैं और हिन्दू मुझे सज्जन मल कहते हैं। न तो मैं हिन्दू हूँ तथा न ही मुसलमान, मैं तो प्रत्येक का सज्जन हूँ।"

उसने अपने सेवकों के गुरु जी की सेवा करने में लगा दिया। वह गर्म पानी लाए और उन्होंने गुरु जी का हाथ मुंह धुला कर चरण धोए। सज्जन बहुत खुश था कि उसे अच्छा शिकार मिला है, क्योंकि उसे दृढ़ निश्चय हो गया था कि गुरु जी एक बड़े व्यापारी हैं और जान बूझ कर फकीरी भेष धारण किया है ताकि किसी को शंका न हो।

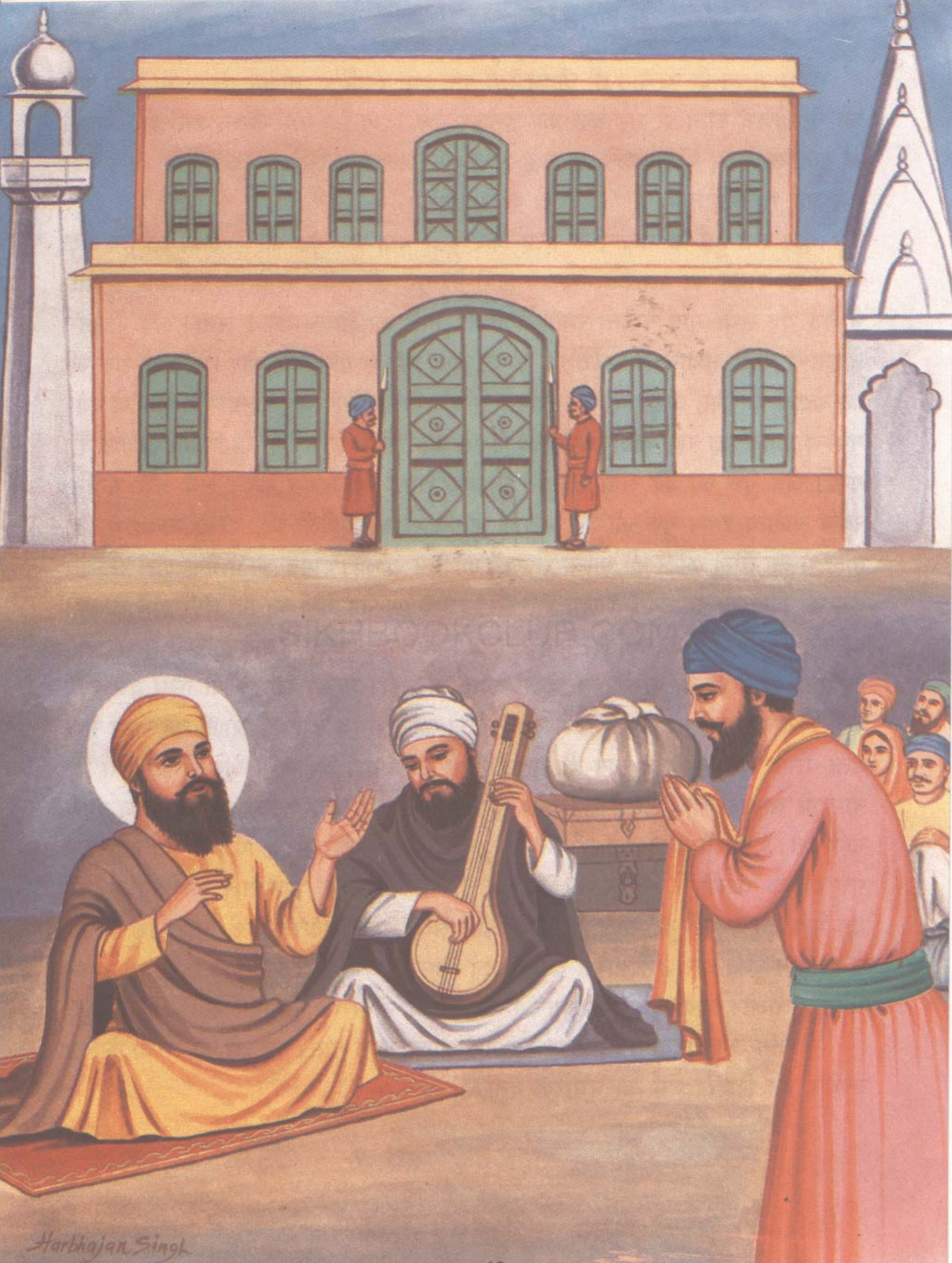
Harbhajan Singh

कुछ समय के पश्चात् ही नौकर गर्म-गर्म तथा स्वादिष्ट भोजन लेकर आ गए। गुरु जी ने भोजन खाने से यह कह कर इन्कार कर दिया कि वह भोजन रात को आरती के बाद खाते हैं। भाई मर्दाने का चाहे चित्त कुछ ललचाया लेकिन गुरु जी की ओर देख कर वह भी चुप रहा।

जब रात हुई तो भोजन के लिए फिर पूछा गया तब गुरु जी ने कहा कि हम एक बंदगी का शबद पढ़ कर फिर भोजन खाते हैं। गुरु जी शबद से चेतना जोड़कर समाधि में बैठ गए तथा भाई मर्दाना रवाब बजाकर वाणी का गायन करने लगा। जब सज्जन ने इतनी मीठी आवाज में शबद का गायन सुना तो वह बंध गया और धीरे-धीरे गुरु जी को देखने के लिए आया जो कि आंगन में ही चौकड़ा मार कर अन्तर्ध्यान बैठे थे और मर्दाना शबद पढ़ रहा था। कुछ समय के पश्चात सज्जन गुरु जी के निकट आकर बैठ गया। जब गुरु जी की समाधि खुली तो वह शबद का गायन करने लगे और मर्दाना रवाब बजाता रहा। गुरु जी की आवाज मर्दाने से भी सुरीली थी, परन्तु शबद के जो बोल थे वह तीखे काटों की भान्ति सज्जन को चुभ रहे थे। शबद का प्रत्येक बोल सज़्जन ठग की जिन्दगी से संबंधित लग रहा था। शबद का यह भाव था कि धर्मी होने के झूठे दिखावे किसी काम के नहीं हैं। यदि मन ठगियों, पापों, दुष्कर्मों, बदियों तथा बदकारियों से भीगा हुआ हो तो दान-पुण्य किसी काम का नहीं। मनुष्य कितने भी छिप कर पाप करे, लेकिन परमात्मा से वह छिपे नहीं रहते। अन्त समय कोई भी प्राणी का साथ नहीं देता, सिर्फ परमात्मा का नाम ही सहाई होता है। अगले जहान में केवल परमात्मा का नाम ही साथ जाता है, शेष सब कुछ यहीं रह जाता है। यह महल आदि उसका साथ नहीं देते। गुरु जी के शबद सुनकर सज्जन ठग का कठोर ह्रदय पिघल गया और वह गुरु जी के चरणों में गिर पड़ा। गुरु जी ने उस को कहा, "यह सारे कुकर्म छोड़ दो, यह पाप की कमाई के महल गिरा दो और सच्ची-सुच्ची किरत करो और उस किरत में से दान-पुण्य करो। परमात्मा के नाम का सिमरण करो और उस को कभी भी अपने से न भुलाओ। प्रत्येक मनुष्य समान है किसी को ऊँचा या नीचा न समझो।"

सज्जन ठग नाम की भेंट प्राप्त कर भाई सज्जन बन गया। गुरु जी का सच्चा सिक्ख बनकर वह सिक्ख धर्म का प्रचारक बना।

सूर्य ग्रहण सभय कुरुक्षेत्र गए

गुरु जी का प्रचार ढंग बड़ा नाटकीय था। वह प्रसिद्ध तीर्थ स्थानों पर उस समय जाते, जबकि वहां कोई बड़ा मेला लगता। वहां जाकर भी लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए समयानुसार वह कई बार अजीबो-गरीब पहनावा पहनते थे। कोई ऐसा कर्म करते जो अन्यों के उल्ट होता। जैसे आजकल के समय में इकट्ठ करने के लिए पहले कोई जादू का खेल दिखाते हैं और फिर अपनी वस्तु की मशहूरी करके बेचते हैं।

सूर्य ग्रहण के मौके पर भारत के बड़े-छोटे साधु-महात्मा कुरुक्षेत्र के सरोवर पर स्नान

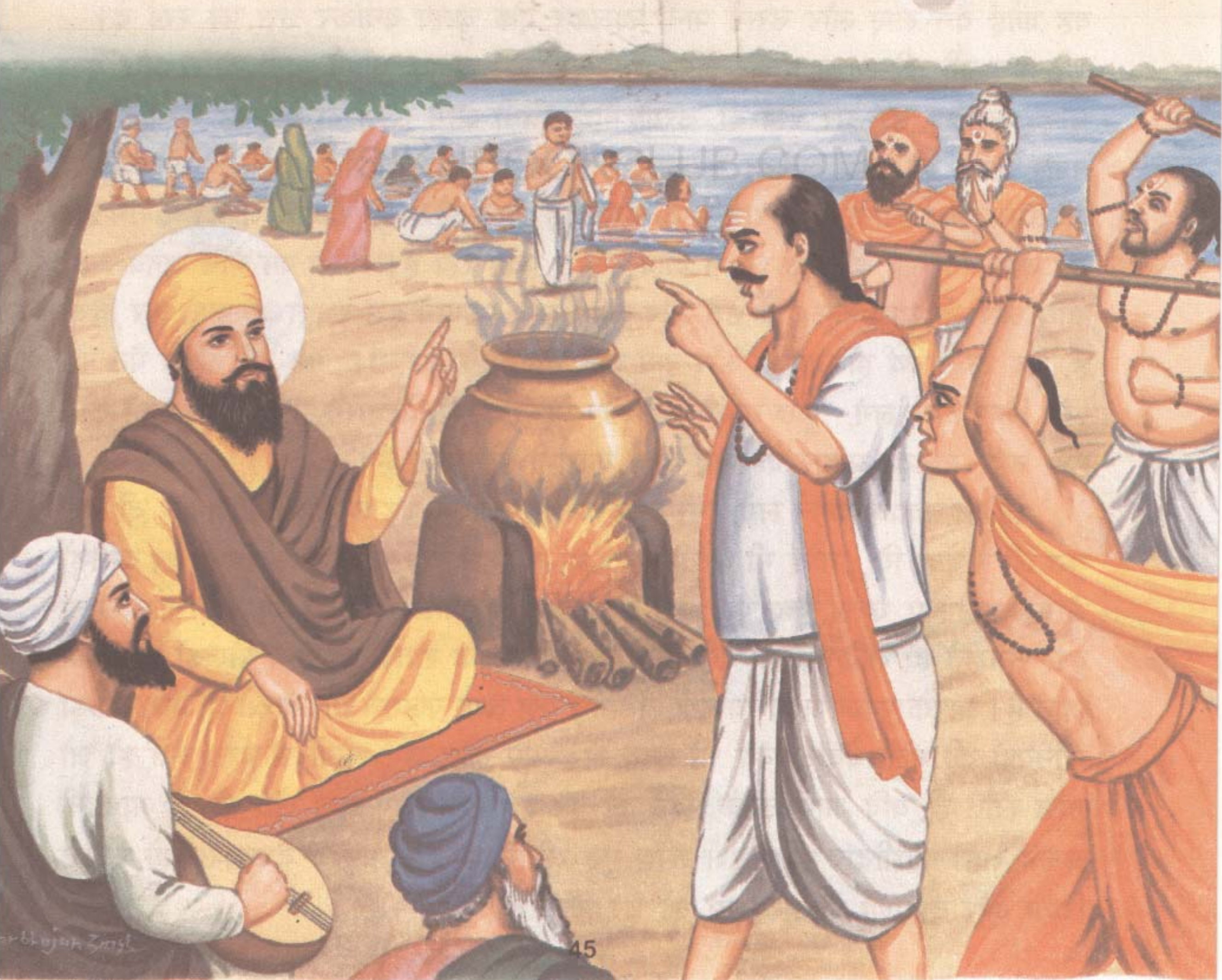

करने आते हैं। यह समझा जाता है कि सूर्य ग्रहण के समय राहू तथा केतु अपना कर्ज वसूल करने के लिए सूर्य को घेरते हैं, जिस कारण यह भय व्याप्त है कि वह सूर्य को नष्ट न कर दें और सारी दुनिया में अन्धेरा न छा जाए। इसलिए उस मौके पर साधु महात्मा पवित्र सरोवरों में स्नान करते हैं और आम लोग ब्राह्मणों को दान देते हैं। असल में यह ब्राह्मणों की दान लेने की ही एक खोज है।

जब गुरु जी कुरुक्षेत्र पहुंचे तो एक सरोवर पर अनगिनत साधु स्नान कर रहे थे। सरोवर के चारों ओर मानव समूह भरपूर था। गुरु जी के साथ कई सिक्ख भी मेला देखने आए थे। गुरु जी सरोवर के बिल्कुल निकट जा बैठे। उनका पहनावा न साधुओं वाला था और न ही गृहस्थियों वाला, बल्कि दोनों का ही सुमेल था। लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए उन्होंने मर्दाने को कीर्तन करने के लिए कहा। शेष सिक्ख उनके निकट बैठ गए लेकिन उनके कीर्तन की किसी ने भी परवाह न की। गुरु जी ने फिर एक और आलौकिक नाटक खेलने के लिए सोचा। उन्होंने अपने सिक्खों को कहा कि वह कोई देग लाएं और उसमें पानी डालकर एक चुल्हा बनाकर उस पर रख दें।

गुरु जी की आज्ञा पाकर सिक्खों ने एक देग लाकर उसमें पानी डाला और एक चुल्हा बनाकर उस पर रख दी, उसके नीचे इतनी आग जला दी कि वह दूर-दूर तक नजर आती थी। जब सरोवर में नहाते और बाहर बैठे साधुओं ने देखा कि सूर्य ग्रहण के समय कोई खाना पका रहा है तो वह दौड़े आए और बड़े रोआब से कहने लगे कि यह क्या बना रहे हो, गुरु जी ने कहा, "मांस पका रहा हैं।" मांस का नाम सुनकर तो साधु और भी आग-बबूला हो उठे और कहने लगे, "आपने इस स्थान को भ्रष्ट कर दिया है, अब तो अनर्थ हो जाएगा और सब कुछ तबाह हो जाएगा।" गुरु जी शान्त बैठे रहे और फिर कहने लगे, "कुछ नहीं होगा, आप मिथ्या अन्ध-विश्वासी हो, आग जलाना कोई पाप नहीं, मानवी आहार के लिए आग जलानी ही पड़ती है।

लेकिन ब्राह्मण कहने लगे, "पर आपने मांस पकाकर यह धरती अपवित्र कर दी है।" गुरु जी ने कहा कि, "कोई भी धरती पवित्र या अपवित्र नहीं। क्या जिस धरती पर करोड़ों सैनिक मारे गए, कत्ल किए गए , वह धरती आपके ख्याल में पवित्र है। आप मांस खाना बुरा समझते हो लेकिन मांस कहां नहीं है, हम प्रत्येक श्वास के साथ सैंकड़ों जीव खा जाते हैं। आपके पूर्वज अश्वमेध यज्ञ, गैंडामेध यज्ञ तथा गजमेध यज्ञ करते थे और सैंकड़ों जानवरों की बली देकर स्वयं भी खाते थे। आप लोग उन लोगों से दान लेते हो जो मांस खाते हैं, यदि आप उनके पापों को दूर करने के लिए दान लेते हो तो आप भी उनके साथ सांझीदार हो।" इस तरह गुरु जी ने बहुत से प्रमाण देकर उनको संतुष्ट किया और ब्राह्मणों के झूठे भ्रम को दूर किया।

SIKHBOOKCLUB.COM

हरिद्वार

गुरु जी नाम-दान के खुले भण्डार वितरण करते हुए और प्रेम जीत प्राप्त करते हुए हरिद्वार पहुंच गए। हरिद्वार पहुंचकर वह 'खुशवंत घाट' गए, जहां हिन्दुस्तान के प्रत्येक भाग से लोग अपने पित्रों को मुक्त करवाने के लिए ब्राह्मणों की विधि अनुसार रीति-रिवाज करते थे। वह अपने आप को मल-मल कर ऐसे धो रहे थे जैसे वह अपने पापों की मैल धो रहे हों। उस समय प्रभात थी। सूर्य पूर्व की ओर से उदय हो रहा था। सूर्य को उदय होते देखकर वह सभी यात्री और साधु-सन्त सूर्य की ओर मुंह करके पानी फैंकने लगे। गुरु जी उनके इस व्यर्थ भ्रम को दूर करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने सोचा कि इन लोगों को सीधे मार्ग पर चलाने के लिए कोई नाटकीय कार्य करना पड़ेगा। इस लिए वह भी अपने कपड़े उतार कर गंगा के पानी में चले गए और पश्चिम की ओर मुंह करके शीघ्रता से पानी फैंकने लगे। सभी देखने वाले उनकी इस क्रिया पर बहुत चकित हुए। उन्होंने सोचा यह कोई मुसलमान.

SIKHBOOKCLUB.COM

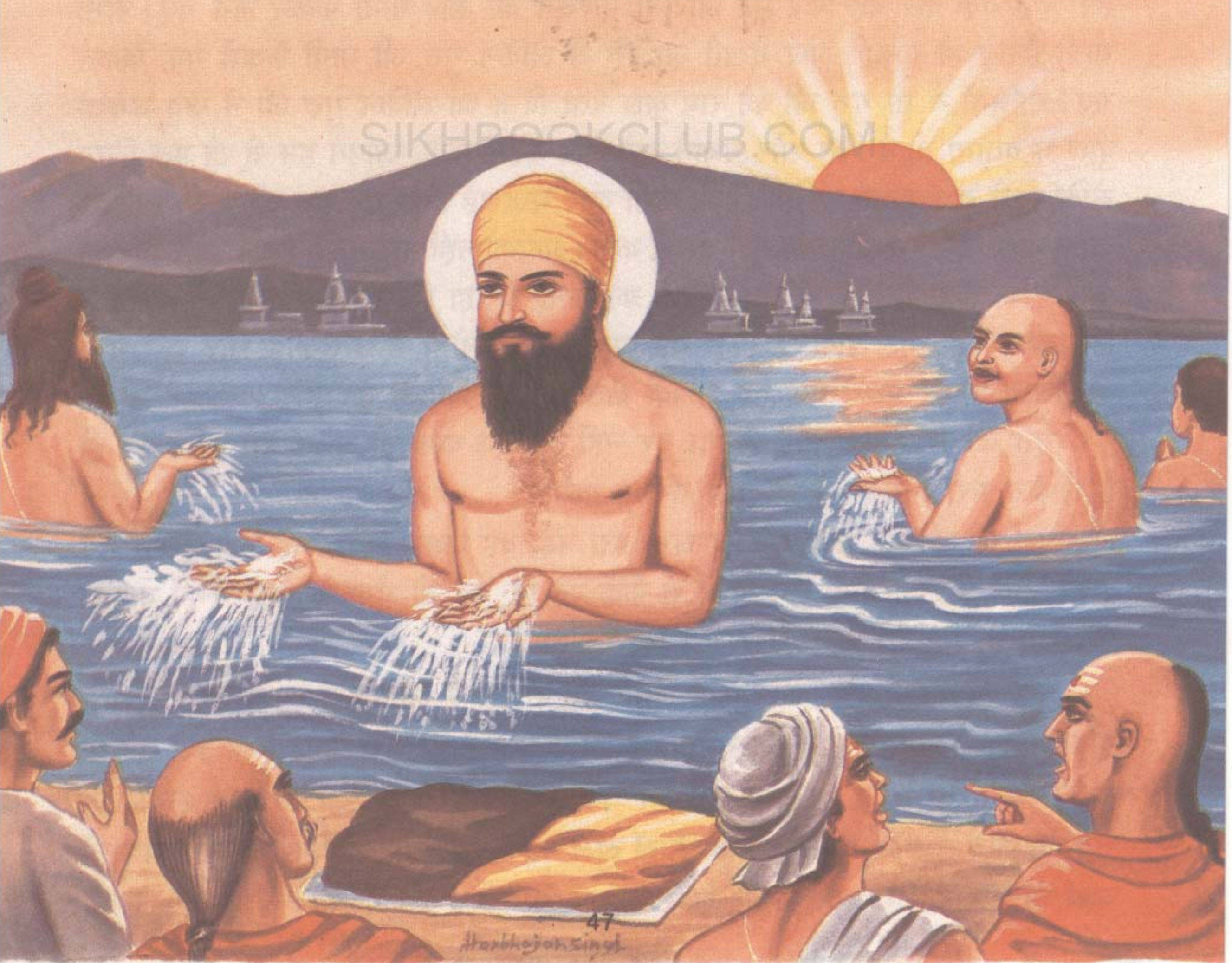

है जो परमात्मा को पश्चिम की ओर मान कर पानी फेंक रहा है। थोड़े समय बाद ही वे सभी लोग उनकी ओर आ गए और कहने लगे, "आप कौन हो? आपको इतना भी मालूम नहीं कि सूर्य तो सामने पूर्व की ओर से उदय हो रहा है लेकिन आप पानी पश्चिम की ओर फेंक रहे हो।" गुरु जी मुस्करा पड़े और कहने लगे, "भाई सज्जनो ! मैं तो किसी खास मनोरथ के लिए और किसी विशेष लाभार्थ इधर पानी फैंक रहा हूं। लेकिन कृपा कर मुझे यह बताएं कि आप पूर्व की ओर पानी क्यों फैंक रहे हो?" वह गुरु जी को अनजान समझते थे। इसलिए सभी बोल उठे, "हम अपने पित्रों को पानी पहुंचा रहे हैं। गुरु जी ने उनकी बात सुनकर बहुत हैरानगी प्रकट की और उन्होंने फिर पूछा, "आपके पित्र रहते कहां हैं, वह इस स्थान से कितनी दूर हैं?"

सभी कहने लगे, "वह तो दूसरी दुनिया में बसते हैं और वह दूरी हमारी समझ से बाहर है, हो सकता है लाखों करोड़ों कोस दूर हो। गुरु जी उनकी यह बात सुन कर खुश होते हुए बोले, "आपका बहुत-बहुत धन्यवाद, आपने तो मेरा निश्चय दृढ़ कर दिया है।" यह कह कर वह फिर पूरे ज़ोर से पश्चिम की ओर पानी फेंकने लग गए। सभी यात्री हैरान हो उनकी ओर देखते जा रहे थे लेकिन गुरु जी पानी फैंकते गए, फैंकते गए। यात्रियों ने तो गुरु जी को सब कुछ बता दिया था लेकिन गुरु जी ने जब उनको कुछ न बताया तो वे फिर शोर मचाने लगे और कहने लगे, "आपने हम से तो पूछ लिया लेकिन हमें कुछ बताते नहीं कि आप पानी कहां भेज रहे हो।" तब गुरु जी थोड़ा रुककर कहने लगे, "देखो, भद्रपुरुषो! मुझे तंग न करो। आपको नहीं मालूम कि हमारी ओर कितना सूखा पड़ा हुआ है और मैं अपने खेतों को पानी दे रहा हूँ, उधर मेरे खेत सूख रहे हैं और इधर आप मुझे रोक रहे हो।" यह बात सुनकर लोगों में उत्सुकता और बढ़ी तथा वह हैरान होकर पूछने लगे कि आपके खेत यहां से कितनी दूर हैं?"

गुरु जी ने कहा, "कोई ज्यादा दूर नहीं हैं, यही कोई दो-अढ़ाई सौ कोस पर ही हैं लेकिन मेरा निवेदन है कि मुझे तंग न करें।"

गुरु जी की यह बात सुनकर सभी हंस पड़े, वह कहने लगे, "भई भले पुरुष! तुम इतने भोले हो, जो पानी तुम हाथों से फैंक रहे हो, वह तो गंगा के जल में ही वापिस पड़ रहा है, यह तेरे खेतों तक कैसे जा सकता है।"

गुरु जी कहने लगे, "आप कोई विवेक की बात करें, आप कोई न्याय की बात करें, यदि आपका फैंका पानी दूसरी दुनिया में जा सकता है तो मेरा फैंका हुआ इस दुनिया में दो-अढ़ाई सौ क़ोस पर क्यों नहीं जा सकता?" गुरु जी के इस साधारण सवाल ने सब को सोच में डाल दिया। उनकी आंखें खुल गईं। उन्हें समझ आ गई कि ब्राह्मण उन्हें व्यर्थ ही ठग रहे हैं। गंगा में से बाहर आकर सभी गुरु जी के साथ हो लिए।

शुद्धता व भ्रष्टता

जब सभी यात्री गुरु जी के चरणों में पड़ गए तो गुरु जी ने उनको उपदेश दिया, "यह सभी रस्मो-रिवाज तथा भ्रम मात्र व्यर्थ ही नहीं बल्कि हानिकारक भी हैं। इन तीर्थों के स्नान करने अथवा दान-पुण्य करने से प्रभु नहीं मिलता। जो मनुष्य प्रभु को प्रायः अपने निकट समझते हुए सच्ची व नेक किरत करते हैं। वह सहज स्वभाव ही प्रभु को पा लेते हैं।"

गुरु जी उन यात्रियों को उपदेश देकर जब अपने निवास स्थान की ओर आए तो उन्होंने देखा कि एक ब्राह्मण माथे पर तिलक लगा, गले में जनेऊ डाल तथा धोती बांधे भोजन तैयार कर रहा था। उसने अपने चौंके के चारों ओर लकीर लगाई हुई थी, गुरु जी ने सोचा कि इस ब्राह्मण की शुद्धता व भ्रष्टता का भ्रम दूर करना चाहिए। वह अपना सामान अपने

स्थान पर रख कर सहज स्वभाव ही उस ब्राह्मण के रसोई घर में दाखिल हो कर कहने लगे, "पण्डित जी मुझे भी एक जलता हुआ कोयला दे दो, मैं भी रसोई तैयार कर लूं।"

जब ब्राह्मण ने गुरु जी को अपने रसोई घर के अन्दर देखा तो वह भी कोयले की भान्ति जल उठा और चिल्लाता हुआ बोला, "कौन हो तुम ? मेरा चौंका भ्रष्ट कर दिया है, मेरी सारी सामग्री भ्रष्ट हो गई है, मेरी इतनी मेहनत व्यर्थ हो गई है, मैंने पहले पोंछा लगाया फिर लकीर लगाकर लकड़ों के धोया और सुकाया। फिर सभी बर्तन धो-संवार कर रखे और बाद में स्वयं स्नान करके शुद्ध होकर रसोई तैयार की थी, लेकिन तुमने भ्रष्ट करके सब कुछ नष्ट कर दिया है। निकल जा मेरे रसोई घर में से इससे पहले कि मैं जलता कोयला तुम्हारे सिर पर दे मारूं।

गुरु जी उसकी यह भड़काहट सुन कर बड़े शान्तिमयी स्वभाव से बोले, "पंडित जी! धैर्य करो मैंने तो केवल एक जलता हुआ कोयला मांगा था ताकि मैं भी रसोई तैयार कर लूं। आप तो कोयले की भान्ति जल उठे हो। मैंने आपका क्या भ्रष्ट कर दिया, मैंने तो आपकी किसी वस्तु को अथवा सामग्री को हाथ तक भी नहीं लगाया, क्या एक इंसान के निकट आने से ही सब कुछ भ्रष्ट हो जाता है।"

ब्राह्मण और क्रोधित होकर बोला, "क्या मैं डूमों, कसाइयों, शुद्र तथा चण्डालों को अपने चौंके में दाख़िल होने दिया करूं, क्या मैं आप जैसे व्यक्तियों की खातिर अपना जन्म भ्रष्ट कर लूं। एक ऊंची जाति का सारस्वत ब्राह्मण मैं अपना धर्म गंवा लूं?

यह सुनकर गुरु जी ने मुस्करा कर कहा, "क्या आप यह समझते हो कि इस समय चौंके में आप अकेले बैठे हो तथा शुद्ध हो, मैं तो यह देख रहा हूँ कि आपके साथ नीच से नीच जाति के चार व्यक्ति बैठे हैं।"

ब्राह्मण गुरु जी की बात सुनकर बौखला गया, वह तुंरत बोला, "मैं तो यहां अकेला हूं, चार ऐसे नीच मेरे पास कौन-से बैठे हैं, मुझे तो कोई दिखाई नहीं देता।"

गुरु जी ने उत्तर दिया, "यही तो रहस्य है कि आपकी आंखों पर अज्ञानता का पर्दा पड़ा हुआ है, जो आपको कुछ देखने नहीं देता, इन चारों नीचों के बारे मैं तुझे बताता हूँ।"

कुबुद्धि जिस कारण हम दुष्कर्म करते हैं नीच डूमणी है, जब्र-जुल्म कसाइण है, औरों की निन्दा करना और पापों की मैल इकट्ठी करके बिखेरने वाली शुद्र है। चौथा क्रोध जो अभी आपके अन्दर अग्नि समान जल रहा है, चाण्डाल है। हे पण्डित जी! यह चारों भ्रष्ट करने वाले आपके अन्दर हैं, फिर आप शुद्ध कैसे हुए?

ब्राह्मण को समझ आ गई और उसने गुरु जी से क्षमा मांगी। वह जिस भ्रम में फंसा हुआ था उससे आजाद हो गया और गुरु जी का सिक्ख बन गया।

बनारस, पंडित चतुर दास को उपदेश

गुरु जी और भाई मर्दाना कलयुगी जीवों का उद्धार करते और उन्हें सत्य का मार्ग बताते हुए बनारस पहुंच गए। बनारस विद्वान पण्डितों का शहर माना जाता है।

गुरु जी और भाई मर्दाना बनारस के एक प्रसिद्ध चौक में जाकर बैठ गए। गुरु जी ने एक अजीब किस्म का लिबास पहना हुआ था, जिस से यह पता नहीं लग सकता था

कि वह किस समुदाय से संबंधित हैं। गुरु जी के इस पहनावे को देख कर शहर के लोग उनके पास इक्ट्ठे होने लगे। जब कुछ विद्वान पण्डितों को गुरु जी के बारे में पता चला तो वह भी गुरु जी को देखने के लिए आए। इन पण्डितों में चतुर दास सब का मुखिया था। वह गुरु जी के पास आकर बैठ गया और कहने लगा, "आप किस समुदाय से संबंध रखते हो, क्योंकि न तो आप मुसलमान फकीर लगते हो और न ही हिन्दू सन्त लगते हो, न आपके पास शालिग्राम है तथा न ही तुलसी की माला। फिर आप किस तरह के सन्त हो ?"

गुरु जी पण्डित को समझाते हुए बोले, "आपके यह शालिग्राम व तुलसी की मालाएं व्यर्थ हैं। यदि आपने भक्ति करनी है तो प्रभु को अपना शालिग्राम बनाओ और अच्छे कर्म करना तुलसी की माला समझो। राम नाम के जाप की नाव बनाओ और प्रभु से विनय करो कि आपके ऊपर दया करें। जो कुछ आप कर, रहे हो यह किसी अर्थ नहीं, क्योंकि यह तो ऐसे है जैसे बंजर भूमि को पानी देने से कुछ भी प्राप्त नहीं होता। इस प्रकार आपको पत्थरों की पूजा करने से कुछ भी लाभ नहीं होगा, यदि आप मुक्ति प्राप्त करना चाहते हो तो लोक सेवा के लिए कुएं व बावड़ी आदि बनवाओ तथा मन की एकाग्रता को जोत कर कुएं को चलाओ। प्रभु की प्राप्ति रूप अमृत से क्यारी भरो, तब माली रूप प्रभु आपका अपना हो जाएगा। काम क्रोध जो मनुष्य के वैरी हैं, उनको रम्भे बनाओ और इस धरती की खुदाई करो, इस तरह की प्रभु प्राप्ति के लिए की हुई मेहनत व्यर्थ नहीं जाएगी। यदि परमात्मा हम पर दया करें तो हम बगुले से हंस भी बन सकते हैं, लेकिन वह हम पर तभी कृपालू होगा, यदि हम नम्रतापूर्वक 'स्वः' को त्याग कर उसकी सृष्टि की सेवा करें।"

पण्डित चतुर दास और बनारस के अन्य लोग गुरु जी की यह रहस्य भरी गहरी बातें बड़ी दिलचस्पी से सुन रहे थे। वह लोग यही समझते थे कि केवल माला फेरने से और पत्थरों की पूजा करने से ही प्रभु प्रसन्न हो जाता है लेकिन जब गुरु जी ने उनको समझाया कि हमें केवल एक प्रभु की ही एकाग्र चित्त होकर अराधना करनी चाहिए और लोगों की सेवा करनी चाहिए। उनके लिए यह बिल्कुल विचित्र बात थी।

पण्डित चतुर दास गुरु जी का उपदेश सुनकर प्रसन्न हो गया और गुरु जी के चरणों में वन्दना करता हुआ बोला, "अब मुझे ज्ञान हुआ है कि आप किसी भी समुदाय से संबंधित नहीं हो। आप तो स्वयं हरि स्वरूप हो।"

बनारस में रुक कर गुरु जी बनारसवासियों और वहां आने वाले यात्रियों को एक प्रभु के नाम सुमिरण का उपदेश देते रहे।

गया के ठग पांडों को उपदेश

कुछ समय बनारस रुककर सिक्ख धर्म का प्रचार करते गुरु जी मर्दाने सहित 'गया' पहुंचे। बनारस की भान्ति 'गया' भी हिन्दुओं तथा बोद्धियों का पवित्र स्थान है। बिहार प्रदेश में यह वह स्थान है जहां महात्मा बुद्ध ने घोर तपस्या और त्याग किया था।

ब्राह्मणों ने भी इस शहर में एक पक्का चबूतरा बनाया हुआ था तथा यहां के पांडे यह दावा करते थे कि इस चबूतरे से वह हिन्दुओं के पित्रों की सात कुलों को मुक्ति दिला सकते हैं। वह यह भी आश्वासन दिलाते थे कि वह उनके पित्रों को चावलों की पिन्नियां खिला सकते हैं, दीपक जला कर आसमान के बीच के मार्ग को रोशन कर सकते हैं।

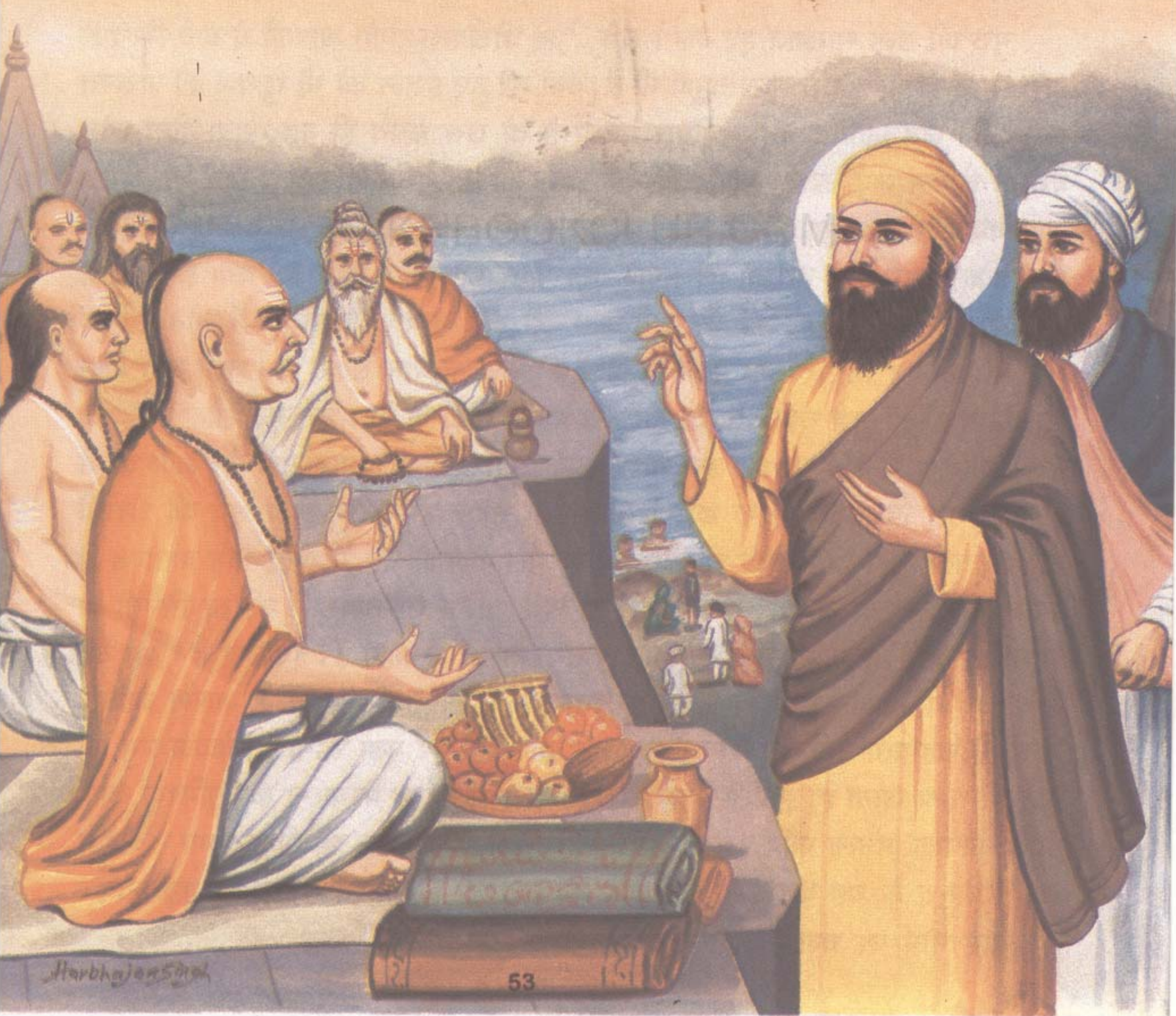

इन रस्मों के बदले वह चौगुना धन लोगों से लूटते थे।

गुरु नानक देव जी को देखकर बहुत सारे पांडे उन के पास आकर इकट्ठे हो गए और गुरु जी को कहने लगे, "आपके पित्र भूखे हैं, उनको अन्न-पानी की जरूरत है, उनके वस्त्र फट चुके हैं, इसलिए उनको नए वस्त्रों की आवश्यकता है। आप पिण्ड दान करो, हम सब कुछ मन्त्र पढ़ कर आपके पित्रों के पास पहुंचा देंगे। आपके पित्र अन्धेरे में हैं उन्हें रोशनी की आवश्यकता है। इसलिए हमें घी भेंट करो ताकि हम दीपक जलाकर उनका अन्धेरा दूर करें।"

गुरु जी उनकी बातें सुनकर हंसने लगे और काफी देर तक हंसते रहे। पांडे कुछ घबरा कर पूछने लगे कि इसमें हंसने वाली कौन-सी बात है। क्या यह सब कुछ आपको हास्यास्पद लग रहा है।

गुरु जी उन्हें समझाते हुए कहने लगे, "ओ धोखेबाज ठगो! आपकी ये बातें बिल्कुल हास्यास्पद ही नहीं, बल्किमूर्खतापूर्ण भी हैं। क्या मरे हुए इंसान को भी खुराक की जरूरत पड़ती है। जब जीवित मनुष्य बीमार पड़ता है तो उस समय ही वह खाना-पीना छोड़ देता है लेकिन जब उसका शरीर ही नहीं रहता तो वह दुनियावी पदार्थ कैसे खा लेगा। आप कहते हो कि आप हमारे पित्रों को वस्त्र तथा खाने-पीने की वस्तुएं पहुंचा सकते हो, लेकिन पहले मुझे बताओ कि हमारे पित्र किस मण्डल में रहते हैं? क्या हमारे पित्र आपको अपना पता देकर मरे थे? यदि आप मुझे नहीं पहचान सकते कि मैं कौन हूं तथा कहां से आया हूं तो मेरे सात पीढ़ी के पित्रों को कैसे पहचान सकते हो। चलो यदि आप अन्तर्यामी हो तो मुझे यही बता दो कि मेरी पहली पीढ़ी के पित्र इस मृत्युलोक में है कि दूसरी दुनिया में चले गए हैं। इस बारे आपके लेश मात्र भी ज्ञान नहीं है। आप कहते हो कि हमारे पित्रों को दीपक की रोशनी पहुंचा सकते हो, परन्तु जहां सूर्य की रोशनी नहीं पहुंचती, वहां दीपक की रोशनी क्या करेगी। आपको यह भी पता नहीं ब्रह्माण्ड में केवल तीन मण्डल अथवा सात मण्डल ही नहीं, बल्कि उन मण्डलों की तो गिनती हो ही नहीं सकती। ब्रह्माण्ड में लाखों पाताल तथा लाखों आकाश हैं। इसलिए हे ठगो! यह ठगी छोड़ दो। आप ने भी किसी दिन मरना है। आपकी इन करतूतों के कारण आपकी किसी ने सहायता नहीं करनी। यह लूट का माल यहीं पर पड़ा रहना है। केवल प्रभु का नाम ही साथ जाना है, इसलिए सच्ची किरत करो और एक परमात्मा का सुमिरण करो, ताकि आपका अगला जीवन मुक्त हो तथा आपको किसी शह की फिर तृष्णा न रहे।"

सतिगुरु के यह वचन सुनकर पांडों की तसल्ली हो गई तथा उन्होंने गुरु साहिब के बताए मार्ग पर चलने का निश्चय किया।

सालिस राय जौहरी

गया के पांडों को उपदेश देकर गुरु जी गांव-गांव घूमते, लोगों को नाम-दान प्रदान करते, पटने शहर में जा पहुंचे। गंगा नदी पटने के निकट से बहती है। गुरु जी ने गंगा नदी के किनारे पर आ डेरे लगाए। उन दिनों वहां एक विशाल मेला लगा हुआ था और हजारों लोग स्नान करने के लिए आ जा रहे थे। गुरु जी जब यहां पर कीर्तन करने लगे तो यात्री उनके दरबार में आने लगे और गुरु जी के आलौकिक कीर्तन का आनन्द मानते हुए उनके उपदेश को भी सुनते।

एक दिन मर्दाना कहने लगा, "महाराज मेरा मन करता है कि पटना शहर में जाऊं तथा यदि मेरे पास कुछ पैसे हों तो कुछ खाने-पीने तथा पहनने की वस्तु खरीद कर ले आऊं।" उसकी यह बात सुनकर गुरु जी ने कहा, "तुझे पैसों की क्या कमी है, यह लो तुझे एक हीरा देता हूं यह बहुत कीमती है, तुम इसकी कीमत डलवा कर इसे बेच दो और जो पैसे मिलें, उससे जो चाहे खरीद लो।"

SIKHBOOKCLUB.COM

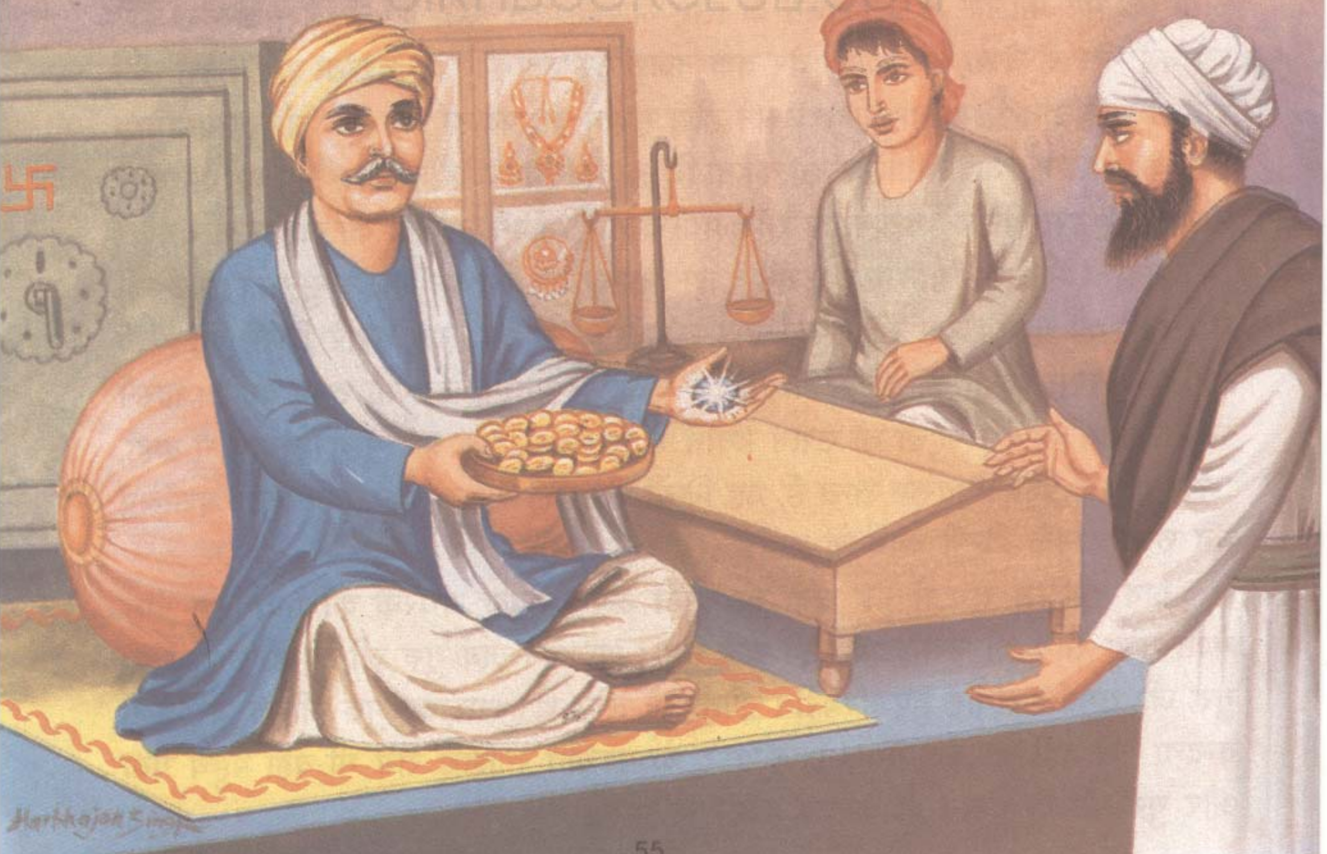

मर्दाना भी हीरा देखकर बहुत हैरान हुआ तथा उसे लेकर पटना शहर चला गया। जब वह शहर में दाखिल ही हुआ तो उसने फलों की बहुत बड़ी दुकान देखी। वह हीरा लेकर उस दुकान पर चला गया तथा दुकानदार को कहने लगा कि वह यह हीरा बेच कर कुछ फल खरीदना चाहता है। जब मर्दाने ने हीरा दुकानदार को दिया तो वह कहने लगा, " इस पत्थर का मैंने क्या करना है, यह मेरे काम का नहीं। हां, यदि तुमने एक दो फल लेने हैं तो ले जाओ।" मर्दाने ने उससे हीरा वापिस लिया तथा एक पंसारी की दुकान पर चला गया और कहने लगा कि "मैं यह हीरा बेचकर कुछ बादाम छुआरे लेना चाहता हूं।" जब पंसारी ने हीरा पकड़ा तो वह उसे उलट-पलट कर देख कर कहने लगा, "ऐसे लाल पत्थरों की भी कोई कमी है। यदि कोई सोने की मुहर है तो निकाल। हां, तुम मुझे कोई प्रदेशी लगते हो। यदि तुमने दो-चार बादाम लेने हैं तो मुफ्त ले जा।" मर्दाने ने उससे हीरा वापिस लिया और फिर वहां की सब बड़ी-बड़ी दुकानों पर गया लेकिन उस हीरे के बदले कोई उसे एक रुपया भी देने को तैयार न हुआ। इसी तरह ही जब वह घूम रहा था तो एक दुकानदार ने बताया कि यहां एक सालिस राय जौहरी है, वही असली हीरों की पहचान रखता है। इसलिए वह ही इसे खरीदेगा। फिर मर्दाना सालिस राय की दुकान ढूंढ कर उसके पास चला गया और उसे हीरा पकड़ाकर कहने लगा कि मेरे मालिक ने इसे बेचने के लिए आपके पास भेजा है। सालिस राय ने हीरे को बड़े गौर से देखा, वह काफी देर तक नज़र भर उस हीरे को देखता रहा। जैसे उस हीरे ने उसे बांध लिया हो। फिर उसने हीरा मर्दाने को पकड़ा कर एक सौ रुपया दिया और कहने लगा, "अपने मालिक को कहना कि इस हीरे का कोई मूल्य नहीं है, यह अनमोल हीरा है, मैं इस हीरे को देखने का सौ रुपया देता हूँ, अपने मालिक को जाकर दे देना।"

मर्दाना भी हैरान रह गया, उसने सारा वृत्तान्त गुरु जी को आकर सुनाया। गुरु जी ने मर्दाने को कहा, "यह सौ रुपया उस जौहरी को दे आ। यह हमारे किसी काम का नहीं, हम मुफ्त किसी का सौ रुपया नहीं ले सकते।" मर्दाना जब सौ रुपए वापिस करने सालिस राय केपास पहुंचा तो उसने मर्दाने से उसके मालिक बारे पूछा। मर्दाने ने कहा, "मेरे मालिक ईश्वर स्वरूप सन्त हैं, वह किसी से भिक्षा अथवा दान नहीं लेते। इसलिए यह रुपए उनके किसी काम के नहीं।"

जब सालिस राय ने यह सुना तो उसने अपने सेवक अधरके को मर्दाने के पीछे भेजा तथा स्वयं भी उसके पीछे ही चल पड़ा। अधरका जब गुरु जी के डेरे पहुंचा तो गुरु जी समाधि लगाए हुए ईश्वरीय कीर्तन में लीन थे। अधरका गुरु जी के चरणों में वन्दना कर वहीं पर बैठ गया। कुछ समय के पश्चात् सालिस राय भी वहां पहुंच गया और गुरु जी के दर्शन करके वह प्रसन्न हो गया।

कामरूप की सुंदरियें

गुरु जी पटने में काफी समय ठहरे। फिर वह सालिस राय जौहरी को पटने का प्रचारक बनाकर आगे चल पड़े। बिहार बंगाल में से होते हुए वह कामरूप पहुंचे। कामरूप में एक स्त्री नूरशाह की हकूमत थी। इस स्त्री ने एक नूरशाह नामक जादूगर से जादू सीखा हुआ था और उस जादूगर के नाम पर ही उसका नाम नूरशाह पड़ गया था। नूरशाह एक बहुत सुन्दर, कोमल तथा आकर्षक स्त्री थी। वह जिसे एक बार देख लेती थी वह उसका ही हो जाता था। उसकी सेविकाएं भी बहुत सुन्दर तथा मनमोहक थीं। बड़े-बड़े अमीर, वजीर, साधु, सन्त तथा तपस्वी उसने अपने जाल में फंसा रखे थे।

शहर के बाहरवार ही गुरु जी ने अपना डेरा जमा लिया और भजन बंदगी में लग

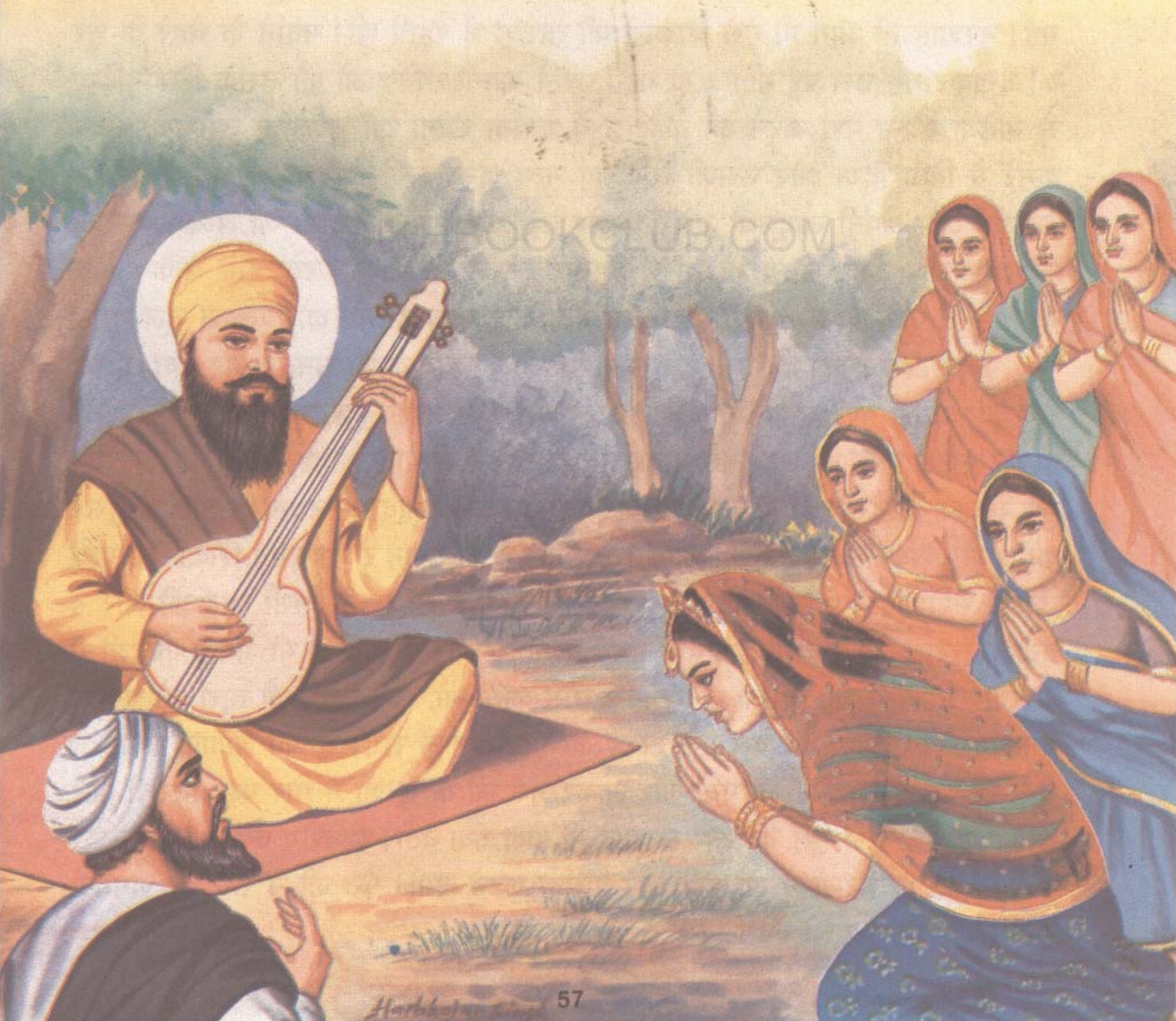

गए। एक दिन मर्दाना गुरु जी को कहने लगा, "महाराज! मैंने कई दिनों से कोई स्वादिष्ट भोजन नहीं खाया, यदि मुझे आज्ञा दो तो मैं इस शहर में जाकर कुछ खा पी आऊं।" गुरु जी तो कामरूप शहर के बारे में जानते थे। उन्होंने मर्दाने को जाने की आज्ञा तो दे दी तथा साथ ही सुचेत भी कर दिया कि इस शहर की स्त्रियां बहुत जादूमयी हैं। किसी के जाल में फंस न जाना। यदि कोई ऐसी विपत्ति आ भी जाए तो 'सत्य करतार' 'सत्य करतार' करते रहना, फिर कुछ नहीं होगा।

मर्दाना जब कामरुप शहर में पहुंचा तो उस शहर की सुंदरता देखकर हैरान हो गया। प्रत्येक वस्तु मनमोहक थी। वह शहर की सुंदरता को देखता-देखता रानी नूरशाह के महलों के सामने पहुंच गया। जब नूरशाह की सेविकाओं ने उसे देखा तो वह उसे बड़े प्रेम-प्यार से मिलीं तथा बड़े आदर सत्कार से अपनी महारानी नूरशाह के पास ले गईं। नूरशाह तो आगे ही ऐसे शिकारों की तलाश में रहती थी। मर्दाने के चेहरे के नूर को देखकर वह उस पर मोहित हो गई। उसने अपनी सेविकाओं को उसके लिए बढ़िया से बढ़िया खाना पेश करने को कहा। जब मर्दाना खाना खा चुका तो उसे एक सुंदर कमरे में बिठा दिया और उसकी सेविकाएं नृत्य करने लगीं। नूरशाह मर्दाने के निकट बैठ गई और अपनी जादूमयी आंखों के तीर उसे मारने लगी, मर्दाना जो लम्बे सफर का थका हुआ था कुछ समय तो 'सत्य करतार', 'सत्य करतार' करता रहा लेकिन फिर नूरशाह के जादू के प्रभाववश होश गंवा बैठा और बाह्य दुनिया को बिल्कुल भूल गया।

गुरु साहिब काफी देर इन्तजार करते रहे लेकिन जब काफी समय गुजर गया तो वह सब कुछ समझ गए। उन्होंने एक विचित्र पहनावा पहना तथा नूरशाह के महल में दाखिल हो गए। नूरशाह की सेविकाएं बड़े आदर-सत्कार से उन्हें नूरशाह के महल में ले गईं। नूरशाह गुरु साहिब को देखते ही बौखला गई। कहां तो वह अपने जादूमयी नयनों के तीरों से दूसरे को अपना शिकार बना लेती थी, लेकिन गुरु साहिब को देखने से वह स्वयं शिकार हो गई। उसकी सेविकाएं कई प्रकार के पदार्थ लाईं लेकिन गुरु साहिब ने किसी वस्तु की ओर न देखा। नूरशाह की हिदायत पर वह नाचने व गाने लगीं। गुरु जी ने भी अपनी कम्बली में से रवाब निकाली, जो मर्दाना उनके पास छोड़ आया था, और रवाब की तारों को उन्होंने तुनकाया, फिर आंखें बंद कर एक शबद का गायन करने लगे। उनकी आवाज़ मर्दाने ने सुनी तो वह भी होश में आ गया और आकर गुरु जी के चरणों में गिर पड़ा। दूसरी ओर सेविकाएं नाच-गाना भूल गईं और नूरशाह भी होश गंवा बैठी। ईश्वरीय ज्योति को देखकर वह गुरु जी के चरणों में आ पड़ी और प्रार्थना करने लगी। गुरु जी ने उसे बुरे कर्मों से रोका। वह भी गुरु जी की सिक्ख व प्रचारक बनी।

SIKHBOOKCLUB.COM

बसता रहे - उजड़ जाए

गुरु जी नूरशाह की प्रार्थना स्वीकार कर कुछ समय कामरूप ठहरे। इस दौरान नूरशाह ने अपनी समस्त जायदाद लोगों में बांट दी और अपने सेवक-सेविकाओं को आज़ाद कर दिया। उसने अपना नया नाम 'पार्वती' रख लिया और वह तन-मन से सिक्खी के प्रचार में व्यस्त हो गई।

इस तरह नूरशाह का उद्धार करके गुरु जी फिर अपने मार्ग पर चल पड़े। गांवों-गांव सिक्खी का प्रचार करते हुए वह एक गांव के बाहर जा बैठे। कुछ समय ठहर कर भाई मर्दाने ने गुरु जी से प्रार्थना की कि यदि आज्ञा हो तो वह गांव में जाकर कुछ खा-पी आए। गुरु जी ने उसे जाने की आज्ञा दे दी। भाई मर्दाना बड़े चाव से गांव में चला गया, लेकिन जब वह गांव में जाकर प्रशादों की मांग करने लगा तो लोग उसके पीछे पड़ गए, वह जिस घर में भी जाए उस घर के ही लोग उसे गालियां देकर बाहर भगा दें। यदि भाई मर्दाना मिन्नत भी करता तो वह उसके पीछे कुत्ते डाल देते। सारा गांव घूम कर भूखा-प्यासा भाई मर्दाना भटकता हुआ गुरु जी के पास वापिस आ गया। वह बहुत दुखी

SIKHBOOKCLUB.COM

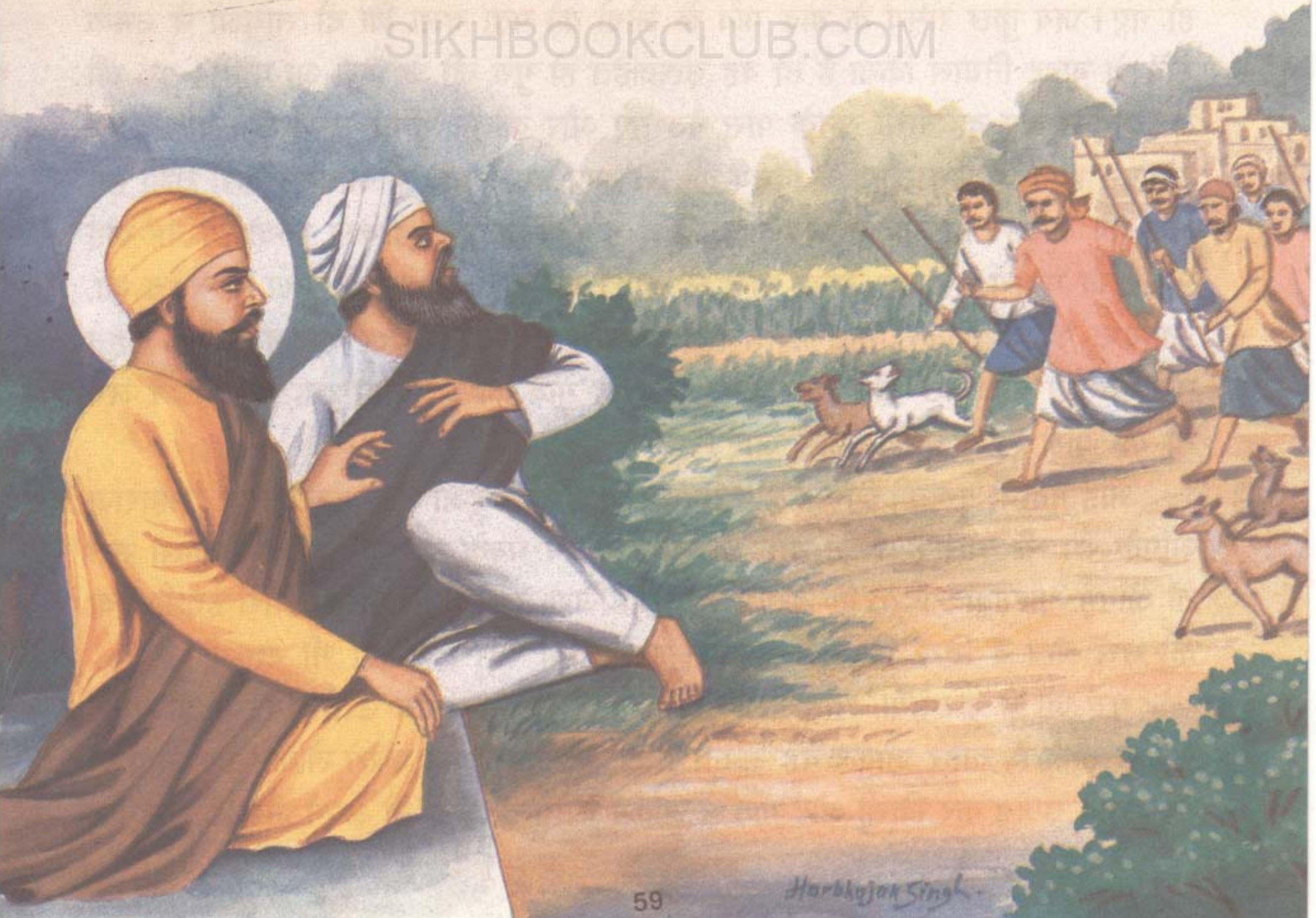

होकर गुरु जी को कहने लगा, "इस गांव के लोग बड़े दुष्ट और बेरहम हैं, मुझे उन्होंने रोटी-पानी क्या देना था, बल्कि गालियां दीं और मेरे पीछे कुत्ते डाल दिए। गुरु जी मुस्कराने लगे। इतने में गांव के कुछ लोग और लड़कों की टोली भी गुरु जी के डेरे की ओर आती दिखाई दी। गुरु जी कहने लगे, "मर्दाने तेरे साथी तो यहां भी पहुंच गए हैं। मर्दाना हंस पड़ा और बड़े मान के साथ कहने लगा, "अब मुझे कोई डर नहीं। अब मैं अपने खसम के पास पहुंच गया हूं।"

कुछ देर बाद वह लोग गुरु जी के पास पहुंच गए और कहने लगे, "अरे भिक्षुओ! यहां क्या कर रहे हो, निकलो इस गांव की सीमा से बाहर।"

गुरु जी हंस कर बोले, "भले पुरुषो! हम कौन-सा यहां बसने आए हैं, हम तो चले ही हैं, हमारी तो परमात्मा के आगे यही प्रार्थना है कि आप हमेशा यहां बसते रहे।" गांव के लोग यह आशीष सुनकर हैरान हुए और फिर और कुछ न बोले। गुरु जी ने भाई मर्दाने को वहां से चलने का इशारा किया।

इस गांव से चलकर गुरु जी और भाई मर्दाना चलते-चलते एक अन्य गांव में पहुंच गए। इस गांव के ही बाहर उन्होंने अपना डेरा लगा लिया तथा ईश्वरीय कीर्तन में विलीन हो गए। जब कुछ समय के बाद गांव के लोगों को पता चला कि दो साधुओं ने उनके गांव के बाहर निवास किया है तो वह उत्साहित हो गुरु जी के पास आ पहुंचे। गुरु जी को वन्दना कर वह सभी उनके पास बैठ गए और कीर्तन सुनने लगे। जब कीर्तन का समापन हुआ तो उन लोगों ने विनय की कि आप हमारे गांव में आगमन करो तथा हमें सेवा का अवसर दो लेकिन जब गुरु जी ने गांव में जाने से इन्कार किया तो वह कई प्रकार के पदार्थ बनाकर उनके पास ले आए। मर्दाना जो आगे ही भूख से बेचैन था, स्वादिष्ट पदार्थ खाकर बहुत प्रसन्न हुआ। अच्छी सेवा होती देख कर मर्दाने के कहने पर गुरु जी वहां कुछ दिन ठहर गए। जब वह गांव को अलविदा कह कर चलने लगे तो वह बोले, "यह नगर उजड़ जाए।"

भाई मर्दाना गुरु जी का यह श्राप सुनकर बहुत हैरान हुआ और कहने लगाा, "महाराज आपके रंग भी न्यारे हैं, जिस नगर के लोगों ने हमें धक्के मार कर बाहर निकाला उसे तो आपने आशीर्वाद दिया कि बसता रहे तथा जिस नगर के लोगों ने हमारी इतनी सेवा की उसे श्राप दे दिया कि उजड़ जाए। इसमें क्या रहस्य है, हमें भी बताओ।"

गुरु जी ने फुरमाया, "वह मलीन तथा नीच बुद्धि के लोग उसी नगर में ही बसते रहें तो ठीक है, बाहर जाकर वह अपनी भ्रष्ट बुद्धि का प्रयोग करेंगे लेकिन इस गांव के लोग यदि उजड़ कर किसी और गांव में जाकर बसेंगे तो उन्हें भी अपने जैसा कर लेंगे।"

जगन्नाथ पुरी

गुरु जी तथा भाई मर्दाना उस सन्त वृत्ति वाले लोगों के गांव से विदायगी लेकर आगे चल पड़े। भाई मर्दाना उदास चित्त से चलता जा रहा था। भाई मर्दाने को उदास देखकर अन्तर्यामी गुरु जी सब कुछ समझ गए। वह बोले, "मर्दाने! तुम उदास हो गए हो, मेरा ख्याल है तुझे उस गांव के कुत्ते याद आ रहे हैं, जिन्होंने तुझे साहोसाही कर दिया था, लेकिन एक बात मैं तुझे बता दूं कि वह लोग भी सुखी नहीं रहेंगे, क्योंकि वह अपने कुस्वभाव के कारण शेष इलाके से टूट जाऐंगे तथा आपस में ही लड़ते हुए मर जाएंगे।" भाई मर्दाने का हृदय गुरु जी का यह वचन सुन कर शान्त हो गया।

चलते-चलते वे बिहार, बंगाल तथा बर्मा में से होते हुए वहां पहुंचे, जहां हिन्दुओं का पवित्र धार्मिक स्थान 'पुरी' है। पुरी, वैष्णव हिन्दुओं का बड़ा पवित्र स्थान है। यहां कृष्ण जी की एक विशाल आकार की प्रतिमा है जिसे 'जगन्नाथ' कहा जाता है। इस प्रतिमा

को रथ में बिठा कर शोभायात्रा निकाली जाती है, जिसें 'रथ-यात्रा' कहा जाता है।

उन दिनों में यह भ्रम था कि जो व्यक्ति इस रथ के आगे आकर जान देता है वह मुक्त हो जाता है। गुरु जी ऐसे आत्मघाती भ्रम को दूर करने के लिए वहां पहुंचे।

पुरी पहुंच कर गुरु जी ने जगन्नाथ के मन्दिर के बाहर ही अपना डेरा लगा दिया तथा ईश्वरीय कीर्तन में विलीन हो गए। हज़ारों की गिनती में श्रद्धालु उस प्रतिमा की पूजा करने के लिए आते थे। जब उन्होंने गुरु जी के अमृतमयी स्वरों को सुना तो वह मोहित हो गए तथा सभी गुरु जी के पास आकर कीर्तन का आनन्द उठाने लगे। उन्होंने यह अनुभव किया कि कृष्ण की प्रतिमा तो कुछ बोलती नहीं, लेकिन वह महात्मा तो उनके हृदय के किवाड़ खोल रहा है। वह हज़ारों की गिनती में गुरु जी के पास आने लगे। फिर क्या था? पण्डित व पुजारी भी हिल गए, उनके हृदय तो गुरु जी के साथ थे लेकिन उनके सांसारिक शरीर माया के मोह में डूबे हुए थे।

एक दिन जब वह भी कृष्ण की प्रतिमा की आरती उतार रहे थे तो गुरु जी बाहर अपने डेरे में बैठे परमात्मा की आरती उतारने लगे। सारी संगत, जो कृष्ण की प्रतिमा की आरती में लगी थी, गुरु जी की संगत में आ जुड़ी। गुरु जी ने उन लोगों को उपदेश दिया कि आप एक मन्दिर के घेरे में बैठे एक मूर्ति स्वरूप जगन्नाथ की आरती उतार रहे हो, लेकिन मैं तो इस विश्व रचयिता जगत के नाथ की आरती उतार रहा हूं। इस आरती में किसी प्रकार की सामग्री की आवश्यकता नहीं, जो भी सामग्री आप इस आरती के लिए उपयोग करते हो, वह तो इस सृष्टि में पहले ही मौजूद है। फिर गुरु जी ने उन्हें जगन्नाथ की वास्तविक आरती सुनाई। जिसका भाव है कि "आरती के लिए जो थाल प्रयोग किया जाता है वह हमारा आकाश है, जो इसमें दीप जलाए जाते हैं, वह हमारे चांद, सूर्य व तारे हैं, धूप हवा की सुगंध है, देवालौकिक ध्वनि शबद नगारे का रूप है। उसके सहस्त्र रूप तथा नेत्र होने के बावजूद भी वह इन सब कुछ से रहित है। उसके सहस्त्र पवित्र चरण हैं लेकिन वास्तव में उसका कोई भी पांव नहीं है। उसकी अथाह सूंघने की शक्ति है लेकिन उसका कोई नाक नहीं है। इस तरह वह जगत का नाथ सर्वव्यापक है लेकिन किसी को दिखाई नहीं देता। जो कुछ हमें दिखाई दे रहा है, सब कुछ वह स्वयं ही है। इसलिए वह किसी एक स्थान पर मूर्ति में ही स्थाई नहीं है तथा न ही वह किसी रथ की यात्रा करता है। मानव जीवन अमूल्य है, यह शरीर, जगत का नाथ मनुष्य को केवल एक बार ही देता है। इस अमूल्य शरीर को रथ के आगे फैंक कर आत्मघात करना परमात्मा की आज्ञा का उल्लंघन है। इस शरीर को किसी अच्छे कार्य में लगाओ, आपके अच्छे कर्म ही आपको प्रभु से मिलाने के लिए सेतू का कार्य करेंगे।"

SIKHBOOKCLUB.COM

रुहेल खण्ड

जगन्नाथ पुरी के लोगों को उपदेश देकर गुरु जी रुहेल खण्ड की ओर चल पड़े। उस समय रुहेल खण्ड एक बहुत ही पिछड़ा हुआ इलाका था। यहां के वासी बड़े दुष्ट और दरिंदे थे। वह लोग दूर-दूर तक निकल जाते थे और यात्रियों को जबरदस्ती पकड़ लाते थे और फिर उन्हें अपना गुलाम बना लेते थे। उन गुलाम सेवकों से वह बड़ी निर्दयता से काम लेते थे। गुरु जी उन गुलामों का छुटकारा करवाना चाहते थे। इस लिए वह जानबूझ कर रुहेल खण्ड के क्षेत्र में पहुंच गए। कुछ रुहेलों ने जब उन्हें देखा तो वह उन्हें पकड़ कर रुहेल खण्ड में ले गए। वहां जाकर उन्होंने गुरु जी और मर्दाने को एक रुहेलें सरदार के पास बेच दिया। वह रुहेला सरदार बहुत ज़ालिम व निर्दयी था। वह अपने सेवकों को बहुत कष्ट देता था और थोड़ी-सी खुराक देकर बहुत ज्यादा काम लेता था। उसने बहुत सारे बदमाश रखे हुए थे, जिस कारण अन्य रुहेले भी उससे भयभीत थे।

गुरु जी तथा भाई मर्दाने को सीधे-सादे इंसान समझकर उसने अपने घर की सेवा

के लिए रख लिया। गुरु जी बड़ी नम्रता से सब कार्य करते थे। जो भी कार्य उन्हें सौंपा जाता, वह उसे नियमबद्ध करते। रुहेला सरदार गुरु जी के काम पर अति प्रसन्न था। एक बार रुहेले सरदार ने उन्हें पानी का घड़ा भर कर लाने के लिए कहा। जब गुरु जी पानी का घड़ा लेकर आ रहे थे तब रुहेले सरदार ने देखा कि वह घड़ा गुरु जी के सिर ऊपर हवा में ही तैर रहा था। रुहेला सरदार इसे देखकर चकित हो उठा। इसके बाद जब भी कभी वह गुरु जी से आंख मिलाता तो उसके शरीर में एक तरंग-सी उठती।

जब कुछ रात्रि बीत जाती तथा शेष सब सो जाते तो गुरु जी ईश्वरीय कीर्तन करने लग जाते। रुहेला सरदार तथा उसकी पत्नियों के कानों में भी कई बार वह आवाज़ पड़ी और रुहेला सरदार इस आवाज़ को बड़े ध्यान से सुनता लेकिन सेवकों का डेरा कुछ दूर होने के कारण उसे यह पता न चलता कि वह देव तुल्य सुरीली ध्वनि कहां से आ रही है। एक रात्रि जब उस ने उस दैवी ध्वनि को फिर सुना तो वह उस आवाज़ की तलाश में निकल पड़ा। यह आवाज़ उसे अपने सेवकों के अहाते में से आती सुनाई दी। रुहेले के घर में सात-आठ नौकर थे जो कि रात्रि में एक ही अहाते में बंद कर दिए जाते थे तथा बाहर पहरा लगाया जाता था ताकि कोई भाग न जाए। रुहेला सरदार मशाल ले कर जब अहाते में दाखिल हुआ तो वह क्या देखता है कि गुरु जी शबद का गायन कर रहे थे और मर्दाना रबाब बजा रहा था। शेष सेवक दिन की कड़ी मेहनत से थके होने के कारण सोए हुए थे। गुरु जी ने आंखें बन्द की हुई थीं लेकिन उनके चेहरे पर एक दिव्य नूर चमक रहा था। रुहेला सरदार यह सब कुछ देखकर चकित हो गया। वह कुछ देर बैठ कर कीर्तन सुनता रहा। वह पहले भी कई बार गुरु जी के हंसमुख चेहरे को देखकर हैरान हुआ था क्योंकि आज तक उसने कोई ऐसा दास नहीं देखा था जो बहुत कम खाकर भी हर समय प्रसन्न रहे लेकिन गुरु जी को जो भी कार्य कहा जाता वह मिनटों में कर देते थे। इसलिए उस दिन रुहेले सरदार का विश्वास दृढ़ हो गया कि उसका नया सेवक कोई परमात्मा का स्वरूप है। उससे अब और न रहा गया तथा वह गुरु जी के चरणों में गिर पड़ा। गुरु जी के चरणों को स्पर्श करते ही उसके कपाट खुल गए तथा वह एक मालिक से दास बन गया। वह गिड़गिड़ाते हुए बोला, "हे मालिक! मुझे माफ करो, मैं तो परमात्मा से नौकरों वाला काम ले रहा था, आज से मैं आपका खादिम और आप मेरे मालिक हो।" गुरु जी मुस्कराए और बोले, "सरदार! यह जो कुछ तुम लूट-खसोट कर ला रहे हो, यह सब यहीं रह जाना है। इन में से कुछ भी आपके साथ नहीं जाना, यदि कुछ जाना भी है तो केवल अच्छे कार्य ही तेरे साथ जाएंगे। इसलिए इन सब गुलामों को आज़ाद कर दे और धर्म की किरत करके खा तथा प्रभु को प्रायः स्मरण कर।" रुहेले सरदार ने गुरु जी सहित सभी गुलामों को आज़ाद कर दिया।

SIKHBOOKCLUB.COM

तलवंडी वापसी

रुहला सरदार गुरु जी का परम सिक्ख बन गया और उसने गुरु जी को कुछ और दिन अपने पास ठहरने के लिए निवेदन किया। वह चाहता था कि वह भी कुछ दिन गुरु जी की सेवा कर सके। अल्प दिनों में ही रुहेल खण्ड के सभी लोग गुरु जी की शरण में आ गए और उन्होंने सौगन्ध उठाई कि भविष्य में वह अपने हाथों से नेक कमाई करके खाएंगे और किसी भी निर्दोष को लूटेंगे अथवा मारेंगे नहीं।

रुहेलों का उद्धार कर गुरु जी पंजाब की ओर चल पड़े। वह गांव-गांव सत्य का प्रचार करते हुए, सुल्तानपुर लोधी पहुंचे। उस समय तक गुरु नानक देव जी का नाम

सारे हिन्दुस्तान में वित्ख्यात हो चुका था और पजाब में तो क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, बच्चा-बच्चा उनके नाम से वाकिफ था।

जब सुल्तानपुर लोधी के लोगों को पता चला कि काफी लम्बे समय के पश्चात् गुरु जी उनकी नगरी में आए हैं तो सारा शहर उनके दर्शनों के लिए उमड़ पड़ा। जब बेबे नानकी तथा जै राम जी को यह पता चला तो उनकी प्रसन्नता की कोई सीमा न रही। वह सभी कार्य छोड़ गुरु जी को मिलने गए। मर्दाने ने उन्हें अपनी विचित्र यात्राओं के बारे में बताया। से सब सुनकर बेबे नानकी अपने भाई से कुर्बान जा रही थी। नवाब दौलत खां लोधी और उसके कर्मचारी भी गुरु जी से मिलने आए। उन्होंने बहुमूल्य तोहफे गुरु जी के चरणों में अर्पित किए, जिनको तत्पश्चात् गुरु जी ने गरीबों में बांट दिया। गुरु जी किसी के घर जाना पसंद नहीं करते थे क्योंकि वह छोटे घरों में सैंकड़ों लोगों को नहीं मिल सकते थे। कुछ दिन वह वेईं नदी के किनारे ही बैठे रहे तथा कीर्तन प्रवाह चलता रहा और लोग गुरु जी के उपदेश सुनकर निहाल होते रहे।

सुल्तानपुर लोधी के वासियों से विदा लेकर गुरु जी तलवंडी की ओर चल पड़े। जिन मार्गों से वह अब गुजरते थे, लोग बहुसंख्या में उनके दर्शनों के लिए एकत्र हो जाते थे।

SIKHBOOKCLUB.COM

लाहौर के भाई मनसुख के घर वह कुछ दिन ठहरे और यहां लाहौर वासियों को उन्होंने सत्य का संदेश दिया। लाहौर से चल कर वह तलवंडी जा पहुंचे। तलवंडी से बाहर ही उन्होंने अपना डेरा लगा लिया। जब नगरवासियों ने उन्हें देखा तो सारे इलाके में ढिंडोरा पीटा गया। भाई मर्दाना गांव को चला गया, लेकिन गुरु जी अपने डेरे में ही रहे। कुछ समय के पश्चात् ही महता कालू जी, माता तृप्ता जी, माता सुलखणी जी तथा दोनों साहिबजादे बाबा श्री चन्द तथा बाबा लखमी चन्द भी गुरु जी को आ कर मिले। गुरु जी समस्त परिवार को बड़े प्यार से मिले और उन्हें समझाया कि एक प्रभु पर विश्वास करो, वही सब दुःख दूर करने वाला है। प्रभु सब का रोजी-दाता है। इसलिए किसी भी तरह की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं।

यहीं पर ही राय बुलार भी गुरु जी के दर्शन करके प्रसन्न हुआ। कुछ समय और रुक कर गुरु जी लोकाई के कल्याण हेतु अपने नए पथ पर चल पड़े। भाई मर्दाना भी उनके साथ ही था।

भक्त की छपरी तोड़ना

अपने माता-पिता एवं परिवार को मिलकर गुरु जी मर्दाने को लेकर आगे चल पड़े। चलते-चलते एक गांव आया। वहाँ एक बढ़ई रहता था, जिसका भक्ति से बहुत प्रेम था। गुरु जी उसके घर चले गए। उस बढ़ई ने उठकर आदरपूर्वक बिठाया। रात को उसने बड़ा मन लगाकर सेवा की। जब दिन हुआ तो गुरु जी ने आगे चलने की तैयारी की और उस बढ़ई की छपरी तोड़ दी।

जो पलंघ गुरु जी को शयन के लिए दिया था, उसको भी तोड़ दिया। जो मिट्टी के बर्तन बने थे, वे भी सब फोड़ दिए। इस तरह उस बढ़ई का पूरा घर उजाड़ दिया और गुरु जी ने चलने की तैयारी कर ली। वह बढ़ई मन स्थिर करके गुरु जी को विदा करने के लिए साथ ही चल पड़ा।

बाहर निकल कर मर्दाना ने पूछा, "हे कृपानिधान! मुझे कृपा करके समझाओ, इस गांव में आपको किसी ने भी अपने घर में नहीं रखा है, यदि इस गरीब बढ़ई ने अपनी छपरी में आपकी सेवा की है तो उसका सब कुछ ही तोड़-फोड़ दिया है। फिर यह हमें विदा करने आया है, हर प्रकार से इसने भलाई की है।"

SIKHBOOKCLUB.COM

यह सुनकर गुरु जी ने कहा, "इस बढ़ई ने जो सेवा की है, वह परवान हो गई है, इस बात को मन में भलीभांति समझ लो।"

यह कहकर बढ़ई को वापिस लौटा दिया और आप आगे चल पड़े।

जब बढ़ई ने जाकर अपना घर देखा तो वहाँ सुन्दर महल बना हुआ था। जिस में सोने के बर्तन भरे हुए थे, अनेक प्रकार के सुन्दर वस्त्र मौजूद थे। बढ़ई उन वस्त्रों को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने गुरु जी को अकाल पुरुष वाहिगुरु पहचाना। चार पदार्थ पा कर वह निहाल हो गया पर दिल में बड़ा पछताया कि वह गुरु जी के वास्तविक भेद को नहीं जान सका है।

वह बढ़ई यह सोच-सोचकर बहुत व्याकुल हो गया कि वह गुरु जी को पहचान नहीं सका। वह तुरंत भाग उठा और उस दिशा की ओर चलता रहा जिधर गुरु जी गए थे। आखिर एक गांव के बाहर वह गुरु जी को जा मिला।

वह गुरु जी के चरणों में नतमस्तक हो गया और विनती करने लगा, "हे प्रभु! मुझे क्षमा कर दो, मैं आपको पहचान नहीं सका हूँ, आप तो स्वयं मालिक हो। मैं जब अपने छपरी वाले स्थान पर पहुँचा तो वहाँ एक सुन्दर महल बना देखा। अंदर सब बर्तन सोने के बने थे और अमूल्य साजो-सामान मौजूद था। मुझे तो आपने एक पल में राजा बना दिया है।"

कोढ़ी का उद्धार

तलवंडी में कुछ समय ठहर कर गुरु जी तथा मर्दाना पश्चिम दिशा की ओर चल पड़े। पाकपटन, दयालपुर, कंगणपुर आदि नगरों में से होते हुए, दुखी ह्रदयों के ठारते हुए वह एक शाम एक गांव में पहुंचे। गांव के बाहर ही उन्होंने एक झोंपड़ी देखी। गुरु जी मर्दाने सहित उस झोंपड़ी के पास पहुंचे। उस झोंपड़ी में एक कोढ़ी फकीर रहता था, जिससे सभी लोग घृणा करते थे। किसी भले पुरुष को जब दया आती थी तब वह उसके खाने-पीने का सामान दूर ही रख जाता था लेकिन उसके निकट कोई नहीं जाता था और न ही कोई उसकी कुशलता पूछता था। वह गरीब पशुओं से भी बदतर जीवन गुजार रहा था। जब गुरु जी झोंपड़ी के निकट पहुंचे तो वह कहने लगे, "भाई सज्जन! हम मुसाफिर लोग हैं, आज रात आपकी झोंपड़ी में गुजारना चाहते हैं।"

कोढ़ी फकीर बहुत हैरान हुआ क्योंकि आज तक तो कोई उसकी झोंपड़ी के निकट भी नहीं आया था, यह ऐसा कौन था जो उसे भाई सज्जन कह रहा था और उसके साथ रहना चाहता था? जब उसने झोंपड़ी का झरोखा खोलकर देखा तो उसे दो विचित्र पहनावे वाले इन्सान दिखाई दिए। गुरु जी ने उसे देख कर कहा, "गुरमुख! हमने रात गुजारनी है, क्या हम तुम्हारी संगति का आनन्द मना सकते हैं? कोढ़ी फकीर के होंठ फरके लेकिन कुछ बोल न सका। वह एक नज़र गुरु जी की ओर देखता रहा और उस दृष्टि से उसके शरीर में एक अजीब झंकार छिड़ गई। वह गुरु जी को बताना चाहता था कि वह एक कोढ़ी है और ऐसे मनुष्य के पास ह्रष्ट-पुष्ट व्यक्ति का आना खतरे से खाली नहीं, क्योंकि गांव का कोई आदमी भूलकर भी उसके पास नहीं आता था, सभी उसकी बीमारी से डरते थे लेकिन चाहता हुआ भी वह गुरु जी को कुछ बता न सका। गुरु जी उसके संकोच को समझ गए। वह फिर बोले, "प्यारे मित्र! यदि झोंपड़ी में ठहराने में कोई मुश्किल हो तो हम झोंपड़ी के बाहर ही ठिकाना कर लेते हैं।"

गुरु जी तथा भाई मर्दाना अपनी चटाइयां बिछाकर बाहर ही बैठ गए। कुछ समय बाद गुरु जी ने भाई मर्दाने को रबाब छेड़ने के लिए कहा और वह ईश्वरीय कीर्तन में विलीन हो गए। कोढ़ी फकीर गुरु जी के ईश्वरीय कीर्तन को सुनने लगा और अपने कोढ़ी हाथों को जोड़कर बैठ गया। जब शबद का भोग पड़ा और गुरु जी ने आंखें खोलीं तो उस कोढ़ी ने गुरु जी को माथा टेका। गुरु जी ने मुस्करा कर उस की ओर देखा और बोले, "क्यों भाई सिक्ख! ठीक ठाक हैं, गांव से बाहर इतनी दूर झोंपड़ी बनाकर

क्यों रह रहा है ? यहां रक्षा के लिए नजदीक कोई फसल आदि भी दिखाई नहीं देती।" गुरु जी की यह बात सुनकर उसका हौसला बढ़ गया था। अपनी दुख भरी कहानी बताने के लिए वह तैयार हो गया और नम्रतापूर्वक बोला, "महात्मा जी! मैं क्या बताऊं, मेरे जैसा इस दुनिया में कोई भी नीच नहीं है। मैं बहुत बदकिस्मत हूं जिसे परमात्मा ने कुष्ठ रोग लगा दिया है। लोग मुझसे नफरत करते हैं, मैं गांव में नहीं जा सकता। आज मेरे घर के भी मेरे अपने नहीं रहे। मुझे यहां झोंपड़ी बनाकर दे गए हैं और खाना-पीना उस दूर पड़े कटोरे में फैंक जाते हैं।"

गुरु जी ने उसकी यह बात सुनकर कहा, "भाई सिक्खा! तू नीच नहीं हैं, नीच तो वह हैं जो तुझे गांव से बाहर निकाल गए हैं, कहां है तुझे कोढ़ हम भी देखें।" लेकिन जब उसने अपने हाथों को देखा तो उन्हें बिल्कुल आरोग देखकर वह बहुत हैरान हुआ और गुरु जी के चरणों में गिर पड़ा, गुरु जी ने उसे उठाया और अपने गले से लगा कर कहा, "मित्र! प्रभु का स्मरण किया कर , वही लोग तेरे इन हाथों को चूमा करेंगे।"

SIKHBOOKCLUB.COM

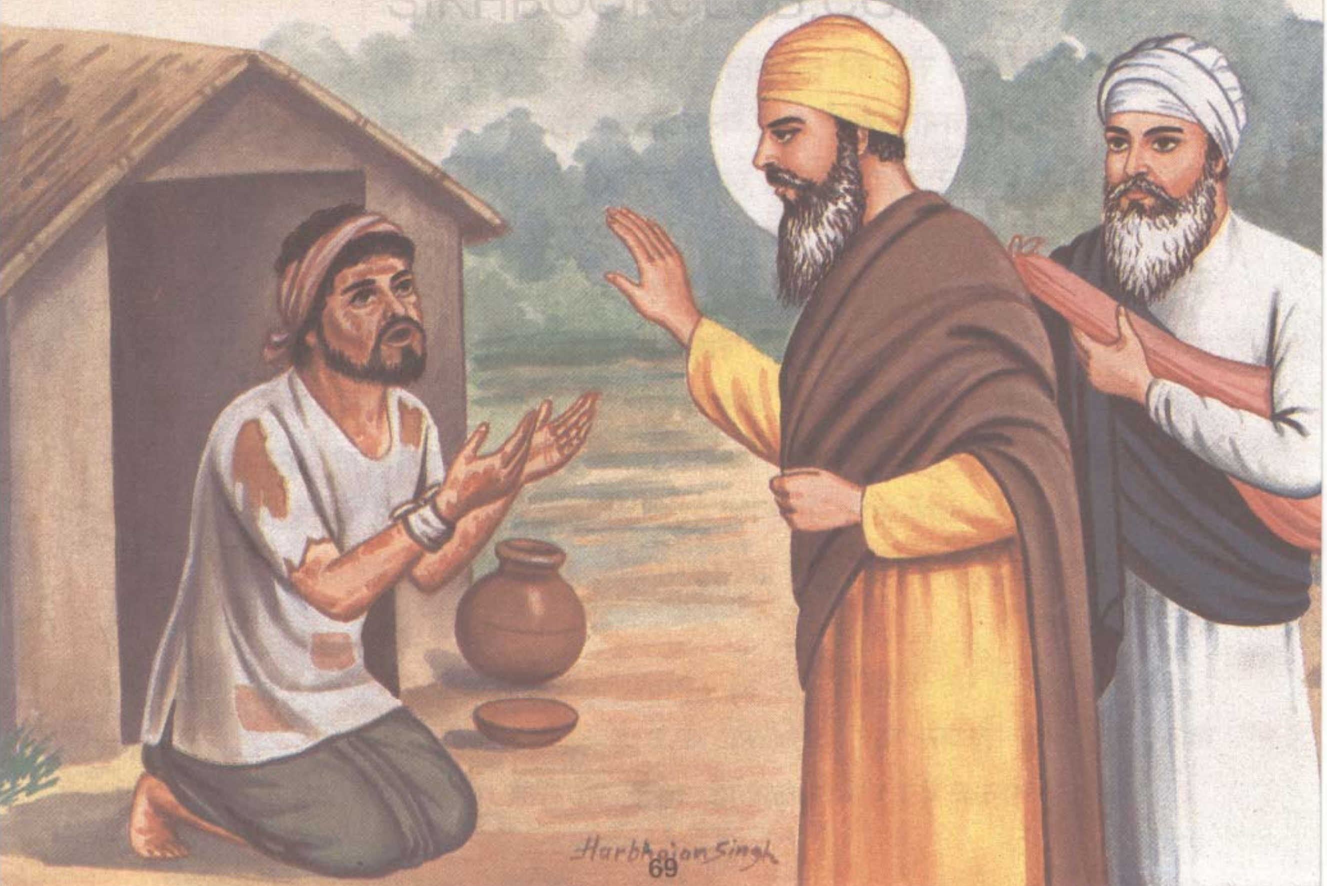

पीर हमज़ा गौंस

गुरु जी कोढ़ी का उद्धार कर सैदपुर को चले गए, वहां कुछ दिन भाई लालो के पास सत्संग करके स्यालकोट शहर की ओर चले गए। स्यालकोट में उन दिनों एक हमज़ा गौंस नामक विख्यात सूफी फकीर रहता था। उसने कई प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि द्वारा शक्तियां प्राप्त की हुई थीं और कई प्रकार के तप तथा चालीसे सिद्ध किए हुए थे।

स्यालकोट शहर में एक बहुत धनवान् खत्री रहता था। कोई सन्तान न होने के कारण वह बहुत चिंतित था। लोगों के कहने पर वह पीर के पास गया और बेनती की कि उसे पुत्र की भेंट प्राप्त हो। उसने पीर के साथ यह भी इकरार किया कि वह अपना पहला पुत्र पीर के डेरे को अर्पण करेगा।

कुछ समय के पश्चात् सेठ के घर तीन पुत्र पैदा हुए, यह अपने ज्येष्ठ पुत्र को लेकर पीर हमज़ा गौंस के पास गया और कहने लगा, "पीर जी मैं अपने वायदे के मुताबिक अपना पहला, पुत्र आपके डेरे को अर्पण करने आया हूं। आज के बाद यह आपका हुआ। अब आप इसका जो भी मूल्य पाओगे, मैं देने के लिए तैयार हूं। इसके मूल्य की अदायगी करके मैं इसे अपने साथ वापस ले जाऊंगा।

SIKHBOOKCLUB.COM

लेकिन पीर उस सेठ की यह बात सुनकर बहुत क्रोधित हुआ और गरज कर बोला, "मैंने इस पुत्र को बेचना नहीं है, मुझे धन-दौलत की कमी नहीं, मुझे पुत्र चाहिए। इसलिए इसे यहीं छोड़ दे और यहां से चला जा।" लेकिन सेठ फिर मिन्नतें करने लगा और वह अपने पुत्र के लिए बड़ी से बड़ी रकम देने के लिए तैयार था लेकिन जब पीर ने उसकी एक न मानी तो वह अपने पुत्र को अपने घर वापस ले गया। पीर को सेठ के इस मिथ्या वचन पर बहुत क्रोध आया। वह अपने शिष्यों को कहने लगा, "मैं चालीस दिन का चालीसा करूंगा और जिस शहर में यह सेठ बस रहा है, उस शहर को जला कर भस्म कर दूंगा।"

अपने कथनानुसार वह एक गुम्बदनुमा कमरे के अन्दर चला गया और अपने शिष्यों को चेतावनी दी कि चाहे कोई भी आए, मुझे नहीं बुलाना और न ही मेरा द्वार खटखटाना है। उसने दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया और शहर की ओर मुंह करके घोर तपस्या करने लग गया।

जब शहर में यह खबर पहुंची तो लोग बहुत भयभीत हो उठे और इक्ट्ठे होकर पीर के दर पर आए लेकिन पीर के शिष्यों ने उन्हें आगे न जाने दिया।

जब गुरु नानक देव जी स्यालकोट पहुंचे तो उन्हें पीर के इस अहकार और क्रोध

का पता चला तो वह पीर के गुम्बद से कुछ दूर, गुम्बद की ओर ध्यान लगा कर बैठ गए। गुरु जी ने भी पहले एक-दो सिक्ख पीर के पास भेजे लेकिन उसके सेवकों ने उन्हें मिलने न दिया तो उन्होंने यह सन्देश भेज दिया कि आज दोपहर के समय गुम्बद फट जाएगा। जब शहर के लोगों को गुरु जी के बारे में पता चला तो वह इकट्ठे होकर गुरु जी के पास पहुंच गए। गुरु जी के लिबास और उनके चेहरे के नूर को देखकर वह हैरान हुए।

जब दोपहर हुई तो गुम्बद फट गया, पीर हमज़ा गौंस भयभीत हो गया और तुरन्त दरवाजा खोलकर बाहर आ गया। इस तरह पीर का चालीसा टूट गया। सभी लोगों ने सुख की सांस ली और वह धन्यवाद के तौर पर गुरु जी के चरणों में गिर गए। पीर को जब पता चला तो वह भी गुरु जी के पास आया। गुरु जी ने उसे उपदेश दिया, "जो ध्यान तुम श्राप की ओर लगा रहे थे यदि वही ध्यान अपने अल्लाह के साथ जोड़ते तो तुम्हारा उद्धार हो जाता। पीरों-फकीरों का काम है कि वह लोगों में प्यार और इन्साफ का प्रचार करें और उनके तपते हृदयों को शान्त करें, न कि उनके हृदयों को स्वयं साड़ने लग जाएं।

SIKHBOOKCLUB.COM

मियां मीठे शाह

गुरु जी पीर हमज़ा गौंस को ईश्वरीय रोशनी और ईश्वरीय नूर दिखा कर आगे चल पड़े। स्यालकोट में ही गुरु जी को पता चला कि यहां से थोड़ी ही दूरी पर मियां मीठे शाह एक प्रसिद्ध करामाती फकीर रहता है। अपनी करामातों के बल पर उसने कई हिन्दुओं को भी मुसलमान बना लिया है। वह कई प्रकार के तप और चालीसे करता रहता है। अपनी करामातों के अभिमान में वह बहुत निर्दयी, कठोर तथा अहंकारी हो गया है।

गुरु जी उसका अहंकार तोड़ने के लिए मीठनकोट पहुंच गए। वहां उन्होंने मियां मीठे शाह के डेरे से कुछ दूर एक बाग में डेरा लगा लिया। वह वहां जाकर ईश्वरीय कीर्तन करने लगे और दूर-दूर से लोग उनके दर्शनों को आने लगे। पीर हमज़ा गौंस का चालीसा तोड़ने के कारण गुरु जी की महिमा दूर-दूर तक फैल गई थी। मियां मीठे शाह को इसके बारे में पता चला था लेकिन उसे यह सुनकर बहुत क्रोध आया कि एक मुसलमान एक हिन्दू फकीर के आगे झुक गया।

उसके शिष्य गुरु जी का सत्संग सुनने जाते थे और वह गुरु जी के वचन सुनकर बहुत प्रभावित हुए थे। उन्होंने भी मियां मीठे शाह को गुरु जी के दर्शन करने के लिए प्रेरित किया लेकिन झूठे अभिमान ने उसकी बुद्धि खराब की हुई थी। गुरु जी की शोभा सुनकर एक दिन उसने भी विचार किया कि गुरु जी को मिलने जाए और उन्हें मुसलमान बनने के लिए समझाए लेकिन जब उसने जाकर गुरु जी के नूरानी चेहरे की ओर देखा तो वह हिचकिचा गया। फिर भी वह अपनी जिद्द का पक्का था, वह गुरु जी को कहने लगा, "आप हिन्दू फकीर हो, आप किस देवता को मानते हो?," गुरु जी मुस्कराते हुए मियां मीठे शाह की ओर देखकर बोले, "मैं सिर्फ एक ईश्वर को मानता हूं जो सबका सृजनहार है।" मियां मीठे शाह चकित हुआ कि हिन्दू तो कई देवी-देवताओं को मानते हैं लेकिन यह तो मुसलमानों की भांति एक ही परमात्मा को मानते हैं। अपनी शंका दूर करने के लिए उसने कहा, "लेकिन एक परमात्मा को पाने के लिए रसूल की आवश्यकता है, आपका रसूल कौन है?" गुरु जी मीठे शाह के भेद को समझ गए थे, उन्होंने उत्तर दिया, "परमात्मा के बन्दे! परमात्मा को पाने के लिए किसी माध्यम की आवश्यकता नहीं होती। परमात्मा केवल उन्हें ही मिलता है जो किसी मध्यस्थ के बिना परमात्मा का सुमिरण करते हैं। मुसलमानों और हिन्दुओं में फिर अन्तर क्या हुआ? मुसलमानों का एक रसूल

है और हिन्दुओं के कई देवी-देवता रसूल का रूप हैं। इसलिए चाहे एक मध्यस्थ हो चाहे दस, कोई फर्क नहीं पड़ता। परमात्मा केवल उन्हें मिलता है जो मध्यस्थ का सहारा लिए बिना उसके साथ लिप्त होते हैं।"

मियां मीठे शाह गुरु जी की यह बातें सुनकर निरुत्तर हो गया लेकिन उसके सामने कई अन्य शंकाएं खड़ी हो गई थीं। जिस कारण वह मुसलमानों को हिन्दुओं से अच्छा समझता था। उसने फिर पूछा, "परंतु क्या आप इस बात को मानते हो कि कयामत वाले दिन मुसलमानों की रूहें, जो धरती के अधीन की हैं, अल्लाह के फरिश्ते की ओर से तुरी बजाने से स्वर्गों में चली जाएंगी, लेकिन हिन्दुओं बेचारों का क्या बनेगा, जिनके शरीरों को साड़ दिया जाता है और हड्डियों को पानी के सुपुर्द कर दिया जाता है?"

गुरु जी उसकी बात सुनकर मुस्कराए और कहने लगे, "मियां जी! जब शरीर को आत्मा छोड़ जाती है तो उस मिट्टी रूपी शरीर को चाहे मिट्टी में गाल दो अथवा चाहे आग में जला दो, कोई फर्क नहीं पड़ता। आगे जाकर तो किए कार्यों और अमलों पर ही निर्णय होंगे, चाहे कोई किसी जाति से संबंध रखता हो।"

मियां मीठे शाह पर गुरु जी का बहुत प्रभाव पड़ा और तत्पश्चात् वह अपना सारा अभिमान छोड़ कर गुरु जी का सिक्ख बन गया।

SIKHBOOKCLUB.COM

दूनी चन्द करोड़पति

लाहौर में एक दूनी चन्द नामक करोड़पति खत्री रहता था। उन दिनों में वह अपने पिता का श्राद्ध करवा रहा था। इस मौके पर उसने अपने इलाके के सभी ब्राह्मण और सन्त फकीर बुलाए हुए थे। जब दूनी चन्द को यह पता चला कि बाबा नानक जी भी रावी दरिया के किनारे पर आए हैं तो वह तुरन्त अपनी बग्घी लेकर उनके पास पहुंचा। गुरु जी से विनय करके अपने घर ले आया।

जब गुरु जी तथा भाई मर्दाना उसकी बड़ी हवेली में पहुंचे तो उन्होंने देखा कि वहां हजारों ही ब्राह्मण तथा साधु-फकीर अन्न पानी खा रहे थे। उन लोगों को देखकर गुरु जी ने पूछा, "सेठ जी! यह इतना विशाल इक्ट्ठ किस लिए है?" दूनी चन्द ने कहा, "महाराज! आज मेरे पिता जी का श्राद्ध है। इसलिए मैंने बड़े उच्च व शुद्ध ब्राह्मणों को बुलाया है, उन्हें भोजन खिलाया है, दक्षिणा दी है, वस्त्र दिए हैं ताकि मेरे पिता जी को किसी वस्तु की कमी न रहे।" गुरु जी फिर कहने लगे, "हे भले पुरुष! तुझे यह दृढ़ निश्चय है कि जो कुछ तुमने पण्डितों को दिया है वह तुम्हारे पिता जी के पास पहुंच गया है।"

SIKHBOOKCLUB.COM

दूनी चन्द ने उत्तर दिया, "महाराज यह पण्डित तो यही कहते हैं कि जो कुछ मैंने आज दिया है। इससे मेरे पिता जी को एक साल तक किसी वस्तु की आवश्यकता अथवा भूख नहीं रहेगी।"

गुरु जी मुस्करा कर बोले, "दूनी चन्द तुम भी बहुत भोले आदमी हो, क्या कोई वस्तु परलोक में भी पहुंच सकती है? क्या आत्माएं कुछ खाती हैं! वह शरीर तो यहां छोड़ गए थे, फिर उन्हें वस्त्र और राशन की क्या आवश्यकता है?

गुरु जी की बातें सुनकर दूनी चन्द हैरान होकर बोला, "इसका मतलब है कि यह सब कुछ बेकार है।"

गुरु जी ने कहा, "बिल्कुल व्यर्थ, तेरे पिता जी ने जब मानव देह का त्याग किया तो वह एक भेड़िए की योनि में पड़ गए। वह भेडिया भूखा-प्यासा अपनी खुराक के लिए भटक रहा है। जितना तुमने ब्राह्मणों को दिया है उस में से कुछ भी उसके पास नहीं पहुंचा। यदि तुम इस बात की तसल्ली करना चाहते हो तो तुम रावी के किनारे जाकर एक ऊँचे बड़ के वृक्ष के निकट सघन घास में उसे देख सकते हो।"

दूनी चन्द चकित हो उठा और गुरु जी की कही बात का परीक्षण करने के लिए वह बहुत उत्सुक हो गया। अपने साथ कोई घोड़ा अथवा बग्घी लेकर जाने की बजाय

वह नंगे पांव उस बड़ वृक्ष की ओर दौड़ पड़ा। वहां जाकर उसने किसी के चीखने तथा उसका नाम ले लेकर आवाज़ें लगाने की गूंज सुनी। जब वह उस ओर गया तो देखा कि एक भेड़िया घास की गांठों के निकट चीख रहा था। जब दूनी चन्द उसके निकट गया तो वह भेड़िया तो आलोप हो गया लेकिन उसके स्थान पर उसका पिता उसके सामने खड़ा था। अपने पिता को जीवित देखकर दूनी चन्द डर गया लेकिन उसके पिता ने कहा, "दूनी चन्द डर मत, मैं अपनी मंद बुद्धि के कारण भेड़िए की भांति भूख ही भूख करता रहा था। किसी को लूटता था, किसी से ठगी करता और किसी के साथ जबरदस्ती करके धन एकत्र करता रहा और तुझे करोड़पति बना दिया तथा तुमने मुझ से भी ज्यादा लूट-खसोट करके सात करोड़ रुपया जोड़ लिया है लेकिन यह किस काम का? जो कुछ तुमने ब्राह्मणों को दिया है, मेरे पास कुछ भी नहीं पहुंचा। यदि मैं एक नेक इन्सान की ज़िन्दगी जीता, सच्ची कमाई करता तो आज मैं इस दुर्दशा में न होता। इसलिए मेरी बात मान और नेक कमाई कर, लूट का समस्त माल गरीबों में बांट दे। मनुष्य के मरनोपरान्त कुछ भी साथ नहीं जाता।" यह कह कर उसका पिता आलोप हो गया। दूनी चन्द को अब ज्ञान हो गया था, वह घर जाकर गुरु जी के चरणों में गिर पड़ा और आगे से उसने नेक कमाई करने का वचन देकर अपनी हराम की कमाई गरीबों में बांट दी तथा शेष सब कुछ गुरु घर के लेखे लगा दिया।

कौडा राक्षस

करतारपुर में कुछ समय कीर्तन प्रवाह चला कर गुरु जी फिर दक्षिण देश की यात्रा पर निकल पड़े। भाई मर्दाना भी खाब बजाता और ईश्वरीय गीत गाता हुआ उनके साथ ही जा रहा था। राजस्थान और मध्य प्रदेश के वासियों को उपदेश देते हुए जब वह आगे निकले तो वहां के लोगों ने उन्हें बताया कि आगे जंगल में भील वंश के लोग रहते हैं जो आदमखोर हैं। उन्होंने यह भी सूचित किया कि वह लोग भूले-भटके यात्रियों को पकड़ लेते हैं और मारकर तल कर खा जाते हैं। जब गुरु जी ने उन लोगों से यह पूछा कि भीलों का सरदार कौन है तो उन लोगों ने बताया कि उस वंश का राजा कौडा राक्षस है, जो बहुत जालिम और निर्दयी है।

उन लोगों की यह बात सुनकर गुरु जी ने विचार किया कि वह इन आदमखोर लोगों का भी उद्धार करेंगे और उनको नेक कमाई करने का उपदेश देंगे।

वे लोग महलादि बनाना नहीं जानते थे बल्कि तिनके व घास-फूस की बनी झोंपड़ियों में ही रहते थे। वे वस्त्र भी नहीं डालते थे और कमर पर केवल पशुओं की चमड़ी ही बांधते थे।

SIKHBOOKCLUB.COM

घने जंगल के दुर्गम मार्गों पर चलते हुए गुरु जी वहां पहुंचे जहां पर भीलों का वास था। चलते-चलते उनको रात पड़ गई तथा वह एक सघन वृक्ष के नीचे आराम करने हेतु बैठ गए। रात गुजरने के पश्चात् जब प्रभात हुई तो गुरु जी ने मर्दाने को रवाब बजाने के लिए कहा। मर्दाना रवाब बजाने लग पड़ा और गुरु जी बड़ी सुरीली व मधुर आवाज़ में शबद का गायन करने लग पड़े।

भीलों की बस्ती उनके बिल्कुल ही निकट थी। जब कुछ भीलों ने यह मधुर आवाज़ सुनी तो वे बहुत अचंभित हुए। एक दिव्य-शक्ति उनके हृदयों को आकर्षित कर रही थी। कुछ प्रातः होने पर भील उस ओर दौड़े जिधर से यह आवाज़ आ रही थी। उन्होंने उस सघन वृक्ष के निकट जाकर देखा कि दो विचित्र मनुष्य अपनी धुन में मस्त होकर गायन कर रहे थे। उनके लिए यह दृश्य बिल्कुल नया था। उन्होंने आज तक किसी मनुष्य को अपनी बस्ती की ओर आते नहीं देखा था। लोग तो उनसे डरते हुए कई कोस दूर ही रहते थे। उन्होंने तुरंत जाकर अपने सरदार कौडे राक्षस को इस बारे सूचना दी। कौडा भी हैरान रह गया वह सोचने लगा कि ऐसा मनुष्य कौन हुआ जो निडर होकर उनकी बस्ती के बाहर बाजे बजा रहा है। अपने कुछ साथियों को साथ लेकर वह तुरंत वहां

पहुंच गया जहां गुरु जी आनन्दमयी अवस्था में मस्त हुए शबद गायन कर रहे थे। गुरु जी की मीठी आवाज़ सुनकर वह सभी बंध गए। कोई भी आगे न बढ़ा और न ही पीछे हटा। कुछ देर बाद गुरु जी ने शबद गायन का समापन किया तथा आंखें खोलकर अपने सामने भीलों व कौडे राक्षस को देखा। गुरु जी मुस्करा कर बोले, " आओ मित्रो! आपका क्या हाल है?" गुरु जी के यह बोल सुनकर कौडा भयभीत हो गया। उसने अपने साथियों से कहा, "ये मानव नहीं हैं, ये तो कोई दैवी-शक्ति हैं, इनको मारने की कोशिश न करना, नहीं तो हमारा सब कुछ तबाह हो जाएगा।" फिर कौडा कुछ हौसला करके अकेला ही गुरु जी के पास आया और बोला, "आप कौन हैं तथा यहां क्यों आए हो?" गुरु जी ने मुस्करा कर कौडे की आंखों से अपनी आंखें मिलाईं और कहा, "हम तुम्हें मिलने आए हैं, तुम मनुष्यों को मार कर खाते हो। यह अच्छा काम नहीं है। सभी प्राणी एक करतार के बनाए हुए हैं और यह सभी भाई-भाई हैं। भाई-भाई पर जुल्म करे, यह बहुत बड़ा पाप है, इससे तुम्हारा सब कुछ बर्बाद हो जाएगा। प्राकृति ने तुम्हें कितना कुछ दिया है, यह जंगल फलों के पौधों से भरा हुआ है। सच्ची किरत करो और मनुष्यों को मारने की जगह उनकी सेवा करो।" कौडा तो दृष्टि पड़ने पर ही गुरु जी का हो चुका था। यह बातें सुनकर तो वह उनके चरणों में गिर पड़ा।

SIKHBOOKCLUB.COM

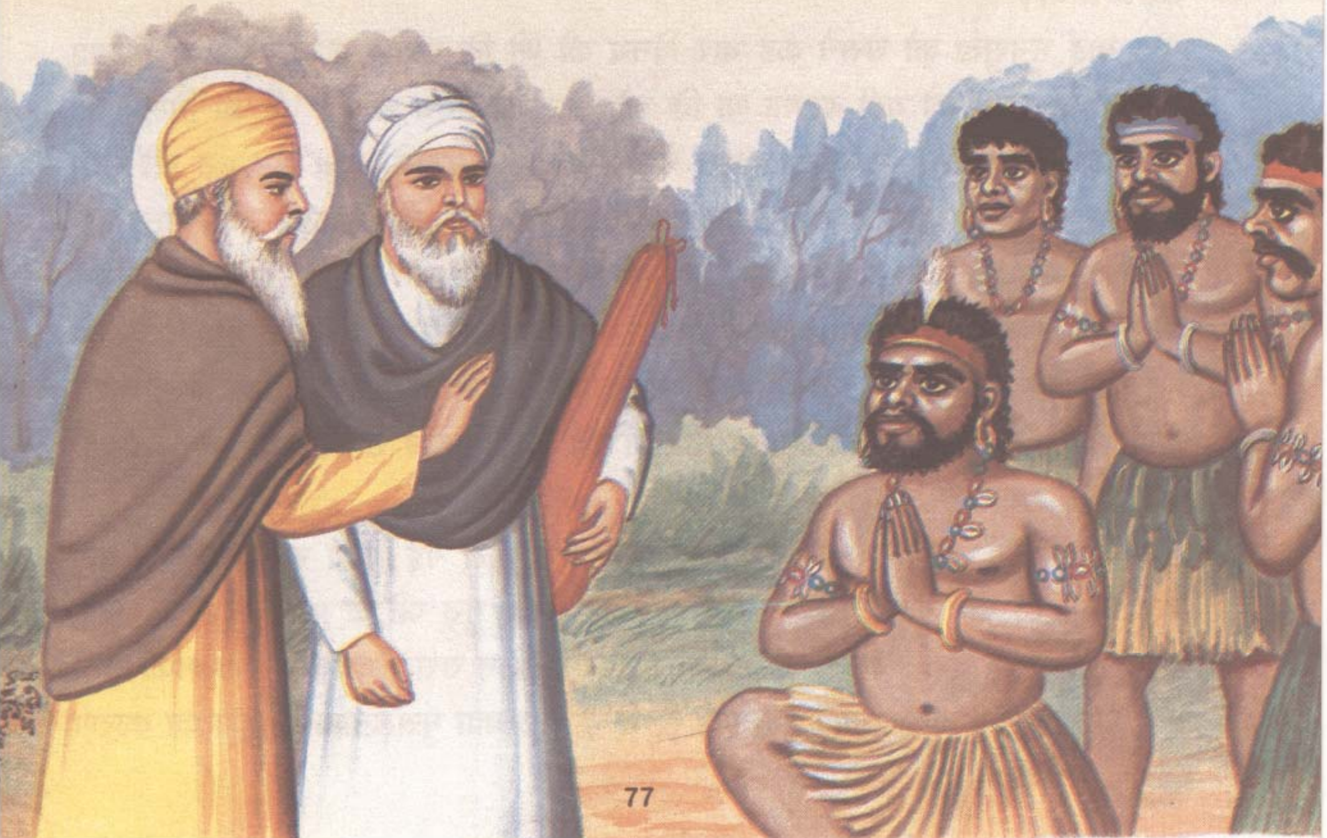

राजा शिवनाभ

सारे भील गुरु जी के दर्शनों को आए। उन सब की काया-कल्प हो गई थी। उन्होंने बहुत-से फल और मेवे गुरु जी को भेंट किए। गुरु जी कई दिन उनके पास रहे और फिर उन्होंने नई यात्रा प्रारंभ कर दी। कौडा, जिसे गुरु जी अब प्यार से कौडण देव कहने लगे थे, बहुत दूर तक उन्हें छोड़ने के लिए आया। वह डरता था कि कहीं कोई नासमझ भील उन पर वार न कर दे लेकिन गुरु जी एक करतार के बिना अन्य किसी से नहीं डरते थे।

दक्षिण के बड़े-बड़े शहरों में से होते हुए वह रास कुमारी में समुद्र के किनारे पहुंचे। वहां कई बेड़े लंका (सिंघलाद्वीप) को जा रहे थे। गुरु जी तथा भाई मर्दाना भी एक बेड़े में चढ़ गए। यह बेड़ा जहां पहुंचा, वह राजा शिवनाभ की राजधानी थी।

गुरु जी का एक लाहौर निवासी सिक्ख भाई मनसुख व्यापार के संबंध में सिंघलाद्वीप जाया करता था। वह आमतौर पर राजा शिवनाभ को भी मिला करता था। राजा को उसने गुरु जी के बारे में बताया हुआ था। राजा भाई मनसुख की बातों से गुरु जी के प्रति बहुत प्रभावित हुआ था और उसके हृदय में गुरु जी को मिलने की इच्छा व उत्तेजना थी।

SIKHBOOKCLUB.COM

भाई मनसुख को उसने कई बार विनय की थी कि उसे गुरु जी के साथ मिलाए लेकिन वह राजा को यही बताता था कि जो भी सच्चे हृदय से गुरु जी को मिलने की इच्छा प्रकट करता है, उसे हर हालत में वे मिलते हैं। मटाले पहुंच कर गुरु जी तथा भाई मर्दाने ने एक बाग में डेरा लगाया। वहां वह प्रतिदिन कीर्तन करते तथा सत्संग में लोगों को उपदेश देते। थोड़े समय में ही बड़ी संगत इक्ट्ठी होने लगी। इस बारे शिवनाभ को भी पता चला कि उसके बाग में एक महान् सन्त ठहरे हुए हैं शिवनाभ ने परीक्षा हेतु बड़ी सुन्दर स्त्रियों व पदमनियों के भेजा, जो गुरु जी के सामने आकर नृत्य करने लगीं लेकिन गुरु जी अपनी समाधि में लीन रहे तथा उन्होंने उन स्त्रियों के नृत्य की ओर कोई ध्यान न दिया।

वह स्त्रियां अन्त उकताकर शिवनाभ के पास चली गईं। जब राजा को इस बारे पता चला तो वह अपने पुत्र व पत्नी को साथ लेकर गुरु जी के पास पहुंचा।

गुरु जी के दर्शन करके वह प्रसन्न हो गया लेकिन उसके हृदय में एक शंका उठी कि यह महापुरुष कोई ब्राह्मण है, योगी है, हिन्दू है अथवा मुसलमान है। इस का कारण

रीठे मीठे कीये

दक्षिण से चलकर बड़े-बड़े शहरों नगरों तथा गांवों में प्रचार करते हुए गुरु जी करतारपुर पहुंचे। जब पंजाब की संगत को पता चला कि गुरु जी वापस करतारपुर आ गए हैं वह हर्षोल्लास के साथ दर्शनों के लिए पहुंची। यहां आकर गुरु जी फिर खेती के कार्य में जुट गए। वह अपने सिक्खों को यह निश्चय करवाना चाहते थे कि गृहस्थ में रह कर भी प्रभु का सुमिरण किया जा सकता है। केवल दुनिया से विरक्त होकर साधु संन्यासी, योगी अथवा फकीर बन कर कठिन तपस्या करके ही प्रभु की प्राप्ति नहीं हो सकती।

कुछ समय करतारपुर में ठहर कर गुरु नानक देव जी उत्तर दिशा की ओर चल पड़े। अपने सत्य धर्म का प्रचार करते और लोगों का उद्धार करते हुए वह गोरख मते पहुंचे। यह स्थान पीलीभीत से 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह गोरख मता योगियों का केन्द्र-बिन्दू था। यह गोरख मते योगी दुनिया से विरक्त होकर तप तथा कई प्रकार की साधनाएं करते थे। साधारण लोग उनसे डरते थे क्योंकि वह लोग समझते थे कि योगी जिसे वर देते हैं उसकी चारों कुलें तर जाती हैं और जिस को श्राप देते हैं उसकी चारों कुलों की तबाही हो जाती है। इसलिए श्राप के भय और वर की प्राप्ति के लिए लोग उनको कई प्रकार के चढ़ावे चढ़ाते थे। गुरु जी इन पाखंडी साधुओं को सत्य के मार्ग पर चलाना चाहते थे। गुरु जी ने योगियों के डेरे के बाहर ईश्वरीय नाद छेड दिया। झंगर नाथ, भंगर नाथ नामक योगी गुरु जी के पास आ इक्ट्ठे हुए और वह गुरु जी को कई तरह के प्रश्न करने लगे। गुरु जी ने उनके सब प्रश्नों के संतुष्टिपूर्ण उत्तर दिए। फिर गुरु जी ने उन्हें समझाया कि असल योगी वह है जो संसार की उलझनों में रहता हुआ भी निर्लेप परमात्मा में समाया रहे। भेष धारण करने से, गोदड़ी डाल लेने से, डण्डा हाथ में पकड़ लेने से, कानों में मुंदरे डाल लेने से और सिंगी बजाने से कोई योगी नहीं बन जाता । मन को विषय-विकारों से रोकने के लिए दुनिया का त्याग करने की आवश्यकता नहीं। प्रभु की सच्चे मन से अराधना करने से ह्रदय को विषय-विकारों से रहित किया जा सकता है। हठ योग साधना करने की जरूरत नहीं, हमारे शरीर में प्रायः सहज ध्वनि जारी रहती है। अपने चित्त को प्रभु से जोड़ कर आनन्दमयी संगीत सुना जा सकता है और यही असीम वाणी है। सिंगी बजाने का कोई लाभ नहीं, हमारे अन्दर ही अपार ध्वनि बज रही है। आवश्यकता है इस अपार ध्वनि को सुनने की तथा विश्वास

SIKHBOOKCLUB.COM

करने की। जो इस अपार ध्वनि को सुनता तथा मानता है, वह इस सांसारिक चक्र से मुक्त हो जाता है।

गुरु जी कुछ दिन योगियों के पास रहे और उनकी सब शंका निवृत्त कर दी। वह गुरु जी के अनन्य श्रद्धालु तथा सिक्ख बन गए। वह स्थान जो गोरख मतों का केन्द्र बन गया था बाद में उसका नाम नानक मता हो गया। योगियों को शिक्षा देकर गुरु जी भाई मर्दाने को लेकर हिमालय पर्वत की ओर चल पड़े। मार्ग में वे एक रीठे के वृक्ष के नीचे विश्राम करने के लिए बैठ गए। वहां मर्दाने ने विनय की, "महाराज! मुझे भूख लगी है, मैं जंगल में से कोई फल ढूंढ कर खा आऊं।"

गुरु जी ने रीठे के वृक्ष की एक टहनी की ओर इशारा करके कहा कि इस टहनी के रीठे तोड़ कर खा ले। मर्दाने ने जब वह रीठे खाकर देखे तो वह बहुत मीठे थे, वह धीरे-धीरे उस टहनी के सभी रीठे खा गया लेकिन जब वह दूसरी टहनी के रीठे तोड़ कर खाने लगा तो वह अत्यन्त कड़वे थे। वह वृक्ष अभी तक कायम है तथा इसकी एक टहनी के रीठे छुआरे की भांति मीठे हैं। यहां आजकल गुरुद्वारा रीठा साहिब है।

सुमेर पर्वत तथा सिद्ध

गुरु जी ने फिर कश्मीर की ओर चक्कर लगाया। श्रीनगर में कुछ समय ठहर कर वह उत्तर दिशा की ओर चल पड़े। दुर्गम पहाड़ियों को वह बड़ी हिम्मत से चढ़ते जाते थे। मार्ग में बड़े घने जंगल तथा फूल-पौधे आदि थे। इन जंगलों में कई तरह के भयानक तथा डरावने जानवर थे। ऊंची पहाड़ियों पर चढ़ते गुरु जी सुमेर पर्वत पर पहुंच गए। वहां उन्हें बहुत प्रसिद्ध सिद्ध मिले। यह लोग संसार को त्यागकर व्यर्थ जीवन व्यतीत कर रहे थे। करामातों का भय देकर पहाड़ी लोगों को मूर्ख बना कर बहुत ऐश्वर्य का जीवन बिता रहे थे।

एक साधारण मनुष्य को सुमेर पर्वत पर पहुंचा देखकर वह हैरान हुए और तुरंत गुरु जी के इर्द-गिर्द आ गए। वह पूछने लगे, "न ही आप सिद्ध लगते हो और न ही कोई संन्यासी, फिर कौन-सी शक्ति आपको यहां लेकर आई है?" गुरु जी ने उत्तर दिया, "मैं सर्वशक्तिमान प्रभु के नाम का जाप करता हूं, उसकी कृपा से ही मैं यहां पहुंच गया हूं।"

फिर सिद्धों ने पूछा, "आपका नाम क्या है और किस मत से संबंधित हो?" गुरु जी ने कथन किया, "नाम मेरा नानक निरंकारी है और मत मेरा परमात्मा और उसकी रचित कायनात को प्यार करना है।"

SIKHBOOKCLUB.COM

फिर सिद्ध कहने लगे, "आप मृत्युलोक में से आए हो, वहां का क्या हाल है।"

गुरु जी मुस्करा कर बोले, "आप तो भय के कारण मृत्युलोक को छोड़ कर यहां छिपे बैठे हो, अब आपको मृत्युलोक से क्या मतलब? यदि आप जैसे सिद्धियों के मालिक ही पहाड़ों पर चढ़कर छिप जाएं और गरीब पहाड़ियों को लूट-लूट कर खाते रहे तो मृत्युलोक की कौन खबर लेगा। आज मृत्युलोक में अंधेरा छाया हुआ है, हर तरफ कुकर्म का प्रसार है, सत्य तथा धर्म आपकी भांति छिप कर बैठ गए हैं। राजा प्रजा की रक्षा करने की बजाय, उल्टा उन पर जुल्म कर रहे हैं, प्रजा चिल्ला रही है, लेकिन उनकी कोई अगुवाई नहीं कर रहा। आप व्यर्थ इन पहाड़ों पर चढ़े बैठे हो, क्यों नहीं मृत्युलोक में जाकर लोगों के दुखों के सांझीदार बनते?"

गुरु जी की यह बात सुनकर सिद्ध बोले, "हमारे अनेक शिष्य मृत्युलोक में भ्रमण कर रहे हैं और वह लोगों का कल्याण कर रहे हैं। सिद्धों की इस टिप्पणी पर गुरु जी जलाल में आकर बोले, "उन भिखारियों ने किसी का क्या कल्याण करना है जो स्वयं ही दर-दर के भिखारी बने हुए हैं, वह तो केवल अपने भेष का मूल्य बटोर रहे हैं, झूठी

करामातों का भय देकर वह लोगों को लूट रहे हैं।" सिद्धों को इसके बाद कोई बात न आई। उन्होंने विचार बनाया कि इन को अपनी जादुई शक्ति दिखा कर भ्रमित करें। इसलिए उन्होंने गुरु जी को एक कटोरा देकर नीचे सरोवर से पानी लाने को कहा। जब गुरु जी सरोवर पर गए तो उन्होंने देखा कि सरोवर हीरे-जवाहरात से भरा हुआ था। गुरु जी समझ गए कि सिद्धों ने उन्हें लालच देकर भ्रमित करने का प्रयत्न किया है। वह वापस आकर कहने लगे, "नाथ जी! सरोवर में पानी नहीं है।"

जब सिद्धों ने यह देखा कि गुरु जी पर जादुई शक्ति नहीं चल सकती तो उन्होंने स्वयं को उनसे निम्न मान लिया। गुरु जी कुछ दिन उनके पास रुककर उन्हें सत्य-मार्ग का ज्ञान देते रहे।

सुमेर पर्वत से गुरु जी नेपाल, सिक्किम, भूटान तथा तिब्बत के रास्ते चीन देश में पहुंचे। चीन में नानकिन में एक धर्मशाला कायम की। नानकिन शहर का नाम गुरु जी के नाम पर ही रखा बताया जाता है।

मक्के का हज्ज

करतारपुर में कुछ समय ठहर कर गुरु जी फिर पश्चिम के लम्बे मार्ग पर चल पड़े। गुरु जी व मर्दाने ने हाजियों की भांति नीले वस्त्र पहन लिए और सिंध प्रांत की ओर चल पड़े। सिंध में पहुंच कर वह एक हाजियों के काफिले से मिल गए और मक्के की ओर चल पड़े। मक्का अरब में मुसलमानों का एक पूजनीय धार्मिक स्थान है। मक्के पहुंच कर उन्होंने अन्य हाजियों की भांति सभी कर्म किए। जब रात हुई तो वह परिक्रमा में काबे की ओर पांव पसार कर सो गए। मुसलमान काबे को परमात्मा का घर मानते हैं और काबे की ओर पांव पसारना वह बहुत अनिष्ट मानते थे। जब हाजियों ने गुरु जी को ऐसी बेअदबी करते देखा तो वह भागते हुए गुरु जी की ओर आए। एक हाजी जिसका नाम 'जीवन' था, गुरु जी को पांव की ठोकर मारकर कहने लगा, "अरे ओह! तुम कौन हो, जो परमात्मा के घर की ओर पांव पसार कर सोए हुए हो?"

गुरु जी आंखें खोलकर बड़ी नम्रता से बोले, "खुदा के बन्दे! क्रोध न कर, मैं बहुत थका हुआ हूं, इसलिए ख्याल न रहा, मुझसे अब उठा भी नहीं जाता। इसलिए आप ही मेरे पांव उस ओर घूमा दो जिधर परमात्मा का घर न हो।" जीवन ने क्रोध में आकर गुरु जी की टांगें दूसरी ओर कर दीं, लेकिन वह देखकर चकित हो गया कि काबा भी उस ओर घूम गया जिधर गुरु जी की टांगें थीं। फिर उसने टांगें अन्य दिशा की ओर घुमाईं, परंतु काबा भी उधर ही घूम गया। जीवन तथा अन्य हाजी अत्यन्त चकित हुए कि अब वह क्या करें जिससे गुरु जी की टांगें काबे से उल्ट दिशा की ओर हों। जब वह इस कार्य में असमर्थ रहे तो वह गुरु जी के निकट बैठकर विनय करने लगे, "अल्लाह के बन्दे! हम तो हार चुके हैं, आप ही परमात्मा के घर के दूसरी ओर अपने पांव कर लें।"

SIKHBOOKCLUB.COM

गुरु जी ने कथन किया, "भले लोगो! मैं पांव किधर करूं, मुझे तो परमात्मा हर तरफ नज़र आता है। वह तो सर्वव्यापक है, समस्त सृष्टि में समाया हुआ है, इसलिए वह किसी एक छोटे स्थान में छिप कर नहीं बैठ सकता। मैं काबे को एक पवित्र स्थान मानता हूं लेकिन यह नहीं मान सकता कि यह स्थान ही केवल परमात्मा का घर है, यदि आप मुझे निश्चय से यह कह दो कि परमात्मा किस ओर नहीं है तो मैं अपने पांव तुरंत उधर कर लेता हूं।"

हाजी गुरु जी के इस सवाल का जवाब न दे सके, वह खामोश होकर उनकी बातें बहुत ध्यान से सुनने लगे। गुरु जी ने उन्हें समझाया, "परमात्मा प्रत्येक स्थान, मनुष्य,

जीव, पौधे-इत्यादि में व्यापक है, यदि हम समस्त सृष्टि को प्रेम करें तो समझो हम परमात्मा को प्यार करते हैं। परमात्मा किसी एक समुदाय, एक मज़हब अथवा एक धर्म तक सीमित नहीं है। वह सब का सांझा है।"

गुरु जी की ऐसी बातें सुनकर हाजी कहने लगा, "यदि आप यह कहते हो कि परमात्मा सब का सांझा है तो फिर हमें यह समझाओ कि हिन्दू बड़ा है कि मुसलमान?"

गुरु जी मुस्करा कर बोले, "न हिन्दू बड़ा है न मुसलमान, इन्सान अपने कर्मों तथा व्यवहार से ही बड़ा बनता है। जो नेक कार्य तथा शुभ अमल करता है, वह बड़ा है और जो दुष्कर्म करता है, वह छोटा है।" सभी हाजी गुरु जी के इन वचनों से सहमत थे।

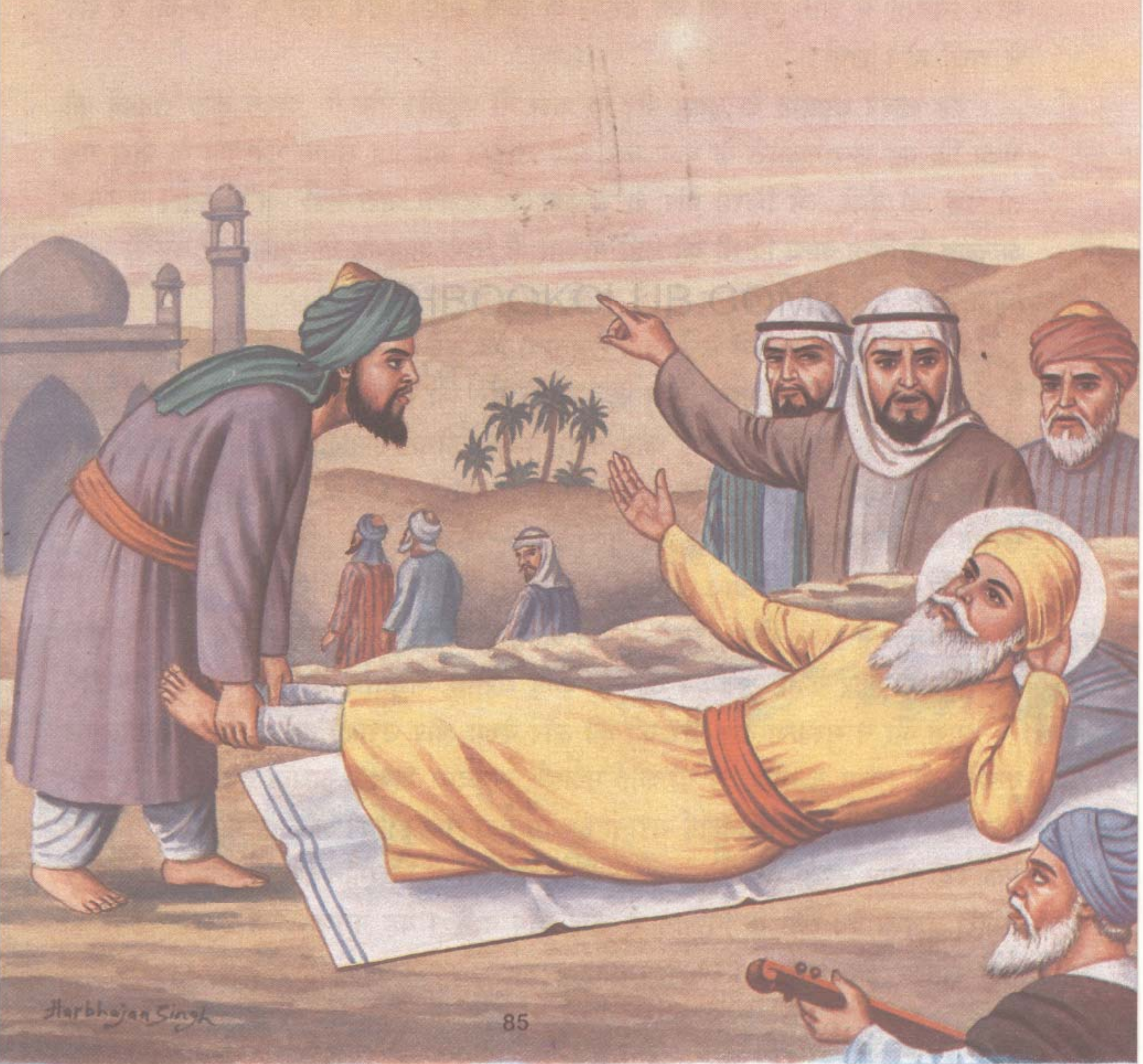

बाबा गया बगदाद

मक्के से गुरु जी मिश्र, तुर्क आदि देशों में सत्य का प्रचार करते हुए ईराक के बगदाद शहर में पहुंचे। बगदाद एक बहुत बड़ा शहर था और, वहां हिन्दुस्तान के बनारस की भांति बहुत बड़े-बड़े विद्यालय तथा विश्व प्रसिद्ध विद्वान रहते थे।

गुरु जी ने बगदाद के बाहर ही एक सुनसान स्थान पर अपना डेरा जमा लिया। जब संध्या की नमाज का समय हुआ तो गुरु जी ने बड़ी सुरीली तथा ऊंची आवाज़ में बांग दी। शहर के लोग बहुत हैरान हुए। उन्होंने ऐसी बांग पहले कभी नहीं सुनी थी। भारी गिनती में लोग गुरु जी को देखने के लिए आए। सारे शहर में गुरु जी के बारे में चर्चा होने लगी।

यह खबर बगदाद के मुख्य पीर के पास भी पहुंची। पीर ने अपने कुछ सेवकों को भेजा कि वह उन फकीरों के बुला कर लाएं लेकिन जब वह सेवक गुरु जी के पास गए तो गुरु जी बोले, "मैं किसी पीर के सन्देश पर उसके पास नहीं जा सकता। मैं सिर्फ अल्लाह के बिना अन्य किसी को नहीं मानता, मैं सिर्फ अल्लाह का गुलाम हूं, वह अल्लाह जिस तरह मुझे आज्ञा करता है, मैं उसी तरह करता हूं।"

SIKHBOOKCLUB.COM

जब पीर के सेवकों ने उसे जाकर बताया कि गुरु जी ने आने से इन्कार कर दिया है तो वह कुछ क्रोध में आया, फिर जब उसने गुरु जी की अन्य बातें सुनीं तो वह शांत हो गया। वह समझ गया कि वह कोई महान् फकीर होगा। इसलिए वह अपने एक विद्वान लड़के तथा अन्य आलम-फाज़िलों को साथ लेकर गुरु जी के पास पहुंचा। पीर तथा उसके साथी गुरु जी के पास बैठ गए।

पीर जी ने पूछा, "आप कौन हैं और किस घराने के फकीर हो?"

गुरु जी ने उत्तर दिया, "मुझे नानक कहते हैं, मैं सिर्फ एक अल्लाह का फकीर हूं।"

पीर ने फिर कहा, "लेकिन आपका कोई घराना, समुदाय, देश आदि तो होगा ही?

गुरु जी ने मुस्करा कर पीर जी की ओर देखा और उसकी आंखों में आंखें डालकर कहने लगे, "क्या अल्लाह का भी कोई मज़हब, समुदाय, घराना अथवा देश है? इस तरह अल्लाह के फकीरों का भी कोई घराना अथवा देश नहीं होता। अल्लाह पाक किसी खास एक स्थान पर रहता हुआ, अनन्त आकाशों-पातालों में विद्यमान होकर सृष्टि का भरपूर ख्याल रखता है। उस के निज़ाम में कोई दोष नहीं । यह मनुष्य तथा इसके रहबर ही यहां आकर बांट डालते हैं।"

गुरु जी की बातों से पीर प्रभावित तो हुआ लेकिन लाखों आकाश, लाखों पाताल वाली बात उसकी समझ में नहीं आई थी। वह कहने लगा, "जहां तक हमारा ज्ञान है हमने तो सात आकाश तथा सात पाताल ही सुने हैं और पवित्र किताबों में भी पढ़े हैं लेकिन लाखों आकाश तथा लाखों पाताल वाली बात तो हमने कहीं पढ़ी अथवा सुनी नहीं, कृपा करके हमें इस बारे समझाओ।"

पीर का लड़का भी निकट ही बैठा था, गुरु जी ने उसके माथे पर हाथ रखा और उसे आंखें बन्द करने का आदेश किया। पीर के बेटे ने पलों में ही लाखों आकाश तथा पाताल देख लिए। पीर के पुत्र ने जब वह वास्तविकता अन्य सभी को बताई तो वह सभी गुरु जी के चरणों में गिर पड़े।

वली कंधारी अति अहंकारी

बगदाद से चल कर गुरु जी तथा मर्दाना हिन्दुस्तान वापस आ गए। लोगों को नाम-दान प्रदान करते हुए वह उस स्थान पर पहुंचे जिस नगर को हसन अबदाल कहा जाता था। गांव हसन अबदाल एक ऊंची पहाड़ी की ढलान के नीचे बसा हुआ था। वहीं पर एक ऊंची चोटी पर कंधारी नामक फकीर रहता था जो अपनी जादुई-शक्ति के कारण विख्यात था। उस के निवास के निकट ही एक चश्मा था जिसका पानी एक बड़े सरोवर में इक्ट्ठा होता था तथा सरोवर भरने के बाद शेष पानी पहाड़ी से नीचे आ जाता था, जिससे गांव के लोग पीने के लिए घड़े भर लेते थे।

गुरु जी एक पहाड़ी की ओट में बैठ गए। वहां उन्होंने मर्दाने को रवाब बजाने के लिए कहा तथा स्वयं ईश्वरीय शबद का गायन करने लगे। गांव के लोगों ने जब यह आलौकिक गायन सुना तो वह गुरु जी के पास आकर एकत्र हो गए तथा इस मनमोहक कीर्तन को सुनकर बंध-से गए। गुरु जी ने फिर उनको नेक कमाई तथा एक प्रभु की अराधना करने की शिक्षा दी।

तत्पश्चात् वे सभी प्रतिदिन गुरु जी के सत्संग में आने लगे। जब वली कंधारी के पास लोग जाने से हट गए तो वह बहुत क्रोधित हुआ। वह गांव के लोगों को सबक सिखाना चाहता था, इसलिए उसने एक दिन तालाब का पानी नीचे गिरने से रोक दिया। पानी की कमी के कारण गांव के लोग घबरा गए, कुछ ही देर बाद मर्दाने को प्यास लगी। गुरु जी ने उसे समझाया कि उधर पहाड़ पर एक चश्मा है, जिस में काफी पानी है, उस पानी का मालिक वली कंधारी बना बैठा है लेकिन वह एक फकीर है, यदि तुम उससे विनय करोगे तो वह जरूर तुम्हें पीने के लिए पानी दे देगा। मर्दाना पहाड़ पर चढ़ता हुआ वली कंधारी के पास पहुंचा और पीने के लिए पानी मांगा लेकिन वली कंधारी कड़क कर बोला, "जिस फकीर के तुम शिष्य बने हो क्या वह तुम्हें पीने के लिए पानी भी नहीं दे सकता?" मर्दाना प्यासा ही गुरु जी के पास वापस पहुंच गया। गुरु नानक देव जी ने उसे फिर निवेदन करने के लिए भेजा, लेकिन मर्दाना दूसरी बार भी निराश ही लौटा। फिर गुरु जी ने संगत में बैठे कुछ व्यक्तियों को एक विशेष पत्थर की ओर इशारा करते हुए आदेश दिया कि वह उस पत्थर को उठाएं। जब उन लोगों ने उस पत्थर को उठाया तो वहां से पानी का एक विशाल चश्मा फूट पड़ा।

वली कंधारी का वह सरोवर बिल्कुल सूख गया। वह क्रोध से लाल-पीला हो गया

SIKHBOOKCLUB.COM

तथा उसने अपनी करामाती शक्ति से एक बड़ा पत्थर गुरु जी की ओर फैंका ताकि वे पत्थर के नीचे दब कर मर जाएं लेकिन जब वह पत्थर लुढ़कता हुआ गुरु जी की ओर आया तो गुरु जी ने अपना हाथ उस पत्थर के आगे कर दिया और वह पत्थर वहीं रुक गया। गुरु जी का पंजा उस पत्थर में धंस गया। गुरु जी के पंजे का निशान आज भी उस पत्थर पर स्थिर है। जब गुरु जी के इस विचित्र कौतुक का पता गांव वालों को लगा तो वे आकर गुरु जी के चरणों में गिर पड़े।

गुरु जी ने केवल उनको पीने के लिए ही पानी नहीं दिया था बल्कि प्रभु की कृपा से उनकी फसलें भी उस पानी से आनन्दित होने लगीं।

वली कंधारी का सरोवर बिल्कुल सूख गया, क्योंकि जो पानी वली कंधारी के सरोवर तक जाता था वह सीधा ही नीचे की ओर बहने लगा। जब वली कंधारी को इन सभी करामातों की अनुभूति हुई तब वह बड़ी नम्रता व प्यार से गुरु जी के चरणों में गिर पड़ा तथा अपने किए पर क्षमा याचना करने लगा। गुरु जी ने उसको समझाया कि हमें मांग कर खाने की आदत छोड़ देनी चाहिए। एक अल्लाह के नाम का सुमिरण करना चाहिए और परमात्मा के प्राणियों को प्यार करना चाहिए। तदोपरान्त वली कंधारी गुरु जी का सिक्ख बन गया। उस स्थान पर गुरुद्वारा 'पंजा साहिब' स्थित है।

बाबर का हमला

अभिमानी वली कंधारी को अपना सिक्ख बना कर गुरु जी सैदपुर (ऐमनाबाद) की ओर चल पड़े। मार्ग में गांव के लोगों को नाम-दान का भण्डार बांटते हुए वह सैदपुर पहुंचे। सैदपुर में गुरु जी का प्यारा सिक्ख भाई लालो रहता था। गुरु जी भाई लालो को सैदपुर का प्रचारक बना कर गए थे। गुरु जी की कृपा से चाहे भाई लालो को अब किसी चीज़ की कमी नहीं थी, लेकिन फिर भी वह सच्ची किर्त करके ही निर्वाह करता था। जब गुरु जी उसके घर पहुंचे तो वह बहुत प्रसन्न हुआ। गुरु जी को उसने बैठने के लिए आसन दिया और जल-पान से सेवा की। फिर जब गुरु जी ने ऐमनाबाद के बारे में पूछा तो भाई लालो कहने लगा, "गुरु जी कुछ न पूछो, ये पठान हाकिम बहुत दुष्ट हो गए हैं जो गरीबों के पास खाने के लिए कुछ भी नहीं रहने देते। मुफ्त में ही लेते रहते हैं जो कोई जरा-सा भी विरोध करता है, उस पर भयानक ज़ुल्म करते हैं।" भाई लालो की यह बात सुनकर गुरु जी कहने लगे, "कोई बात नहीं, कुछ दिनों के बाद ही उनसे भी बड़ा ज़ालिम और दुष्ट यहां आ रहा है जो इन ज़ालिमों को तो मिट्टी में मिलाएगा ही, लेकिन साथ ही अनेकों निर्दोषों को भी पीस देगा।"

SIKHBOOKCLUB.COM

जब गुरु जी कुछ दिन सैदपुर (ऐमनाबाद) ठहरे तो उसी समय ही बाबर की सेनाओं ने हमला कर दिया। उन सभी हाकिमों को लूट लिया तथा सारे शहर में कहर बरसा दिया। लूटा हुआ माल उन्हीं लोगों के सिर पर रख दिया और अपने तम्बू में ले जाने के लिए आगे-आगे चला लिया। गुरु जी, भाई मर्दाना तथा भाई लालो भी पकड़े गए। उनके सिरों पर भी सामान रख दिया तथा अपने साथ ले लिया। उन लोगों का सारा सामान एक स्थान पर रखवा कर उन्हें बन्दी बना लिया। सभी को एक कारागार में बन्द करके उन्हें अनाज पीसने के लिए चक्कियां चलाने पर लगा दिया। गुरु जी कारागार में भी चढ़ती कला में थे। वह स्वयं आंखें बन्द करके एक ईश्वरीय शबद का गायन करने लगे। गुरु जी की मीठी सुरीली वाणी ने सभी बंधियों को मस्त कर दिया तथा वह अपने सभी दुख भूल गए।

पहरेदारों को भी गुरु जी की मधुर आवाज़ ने कील लिया तथा जब उन्होंने गुरु जी तथा भाई मर्दाने की ओर देखा तो हैरान रह गए कि गुरु जी तो शबद गायन कर रहे हैं लेकिन उनकी चक्कियां अपने आप ही चल रही हैं। कुछ सिपाही दौड़ कर गए और उन्होंने इस विचित्र घटना के बारे बाबर को बताया। बाबर भी इस आलौकिक घटना

को सुनकर बहुत प्रभावित हुआ तथा वह तुरंत बंदीगृह की ओर चल पड़ा। वहां उसने देखा कि गुरु जी शबद गा रहे हैं तथा भाई मर्दाना रवाब बजा रहा है लेकिन उनके हाथ लगने के बिना ही चक्कियां अपने आप चल रही हैं। कुछ देर खड़े होकर बाबर गुरु जी का गायन सुनता रहा। गायन समाप्त करके जब गुरु जी ने अपनी आंखें खोलीं तो उन्होंने अपने सामने बाबर को देखा। बाबर कहने लगा, "अल्लाह के फकीर! आप क्या गा रहे हो।" गुरु जी ने फारसी में सारे शबद का अर्थ बताया। जिसका भाव था, "परमात्मा सबका पिता है और हम उसकी सन्तान हैं। आप ने निर्दोष लोगों के घर-बार तथा स्त्रियों को लूटा है। किसी ने तुम्हारा कोई नुक्सान नहीं किया था लेकिन फिर भी आपने उन्हें अपने ज़ुल्म का शिकार बनाया।"

बाबर ने अपने कुःकृत्य पर अफसोस प्रकट किया और गुरु जी को कहने लगा, "अब मुझे क्या करना चाहिए कि खुदा मुझे माफ कर दे।" गुरु जी ने उसे कहा कि वह सभी कैदियों को छोड़ दे तथा उनका लूटा हुआ सारा माल उन्हें वापिस करे और आगे से किसी पर ज़ुल्म न करे। बाबर ने गुरु जी की आज्ञा अनुसार सभी कैदियों को छोड़ दिया।

SIKHBOOKCLUB.COM

मेला अचल वटाला

सैदपुर के दुखी लोगों को आश्वासन देकर गुरु जी अपने नगर करतारपुर आ गए। करतारपुर अब एक अच्छे नगर का रूप धारण कर चुका था। यहां सभी गुरु जी के श्रद्धालु सिक्ख ही आबाद थे। करतारपुर पहुंच कर गुरु जी ने फकीरी भेष त्यागकर गृहस्थी भेष धारण कर लिया। वह कमर पर एक चादर बांधते, गले में एक कुर्ता डालते तथा एक चादर उपर लेते थे। सिर पर साध्वी लेकिन प्रभावशाली दस्तार सजाते। गुरु जी सभी गांव के लोगों से मिलकर खेती करते तथा सभी सिक्ख एक परिवार की भांति एक लंगर से ही खाना खाते।

उन दिनों अचल वटाले में सिद्ध योगियों का एक बड़ा मेला लगता था। गुरु जी ने सिद्धों के प्रभाव को काफी घटा दिया था, लेकिन फिर भी वह अपनी शाख को बढ़ाने के लिए अचल वटाले शिवरात्रि के समय एकत्र होते थे। वह लोगों को कई प्रकार की करामातें दिखा कर लूटते थे।

इस मेले के बारे में सुनकर गुरु जी भी भाई मर्दाने तथा कुछ अन्य साथियों को लेकर अचल वटाले पहुंचे। वहां जाकर उन्होंने देखा कि सिद्ध आसन लगा कर बैठे थे तथा लोग उनके समक्ष भिन्न-भिन्न प्रकार के चढ़ावे भेंट कर रहे थे। उन से थोड़ी दूरी पर एक सघन बेरी के वृक्ष के नीचे गुरु जी भी बैठ गए। उनके कुछ साथी तथा भाई मर्दाना भी उनके निकट ही बैठ गए। गुरु जी के संकेत पर भाई मर्दाने ने रबाब बजानी शुरू की दी। गुरु जी अपनी दिलकश व मनमोहक आवाज़ में एक शबद का गायन करने लगे। उनकी आवाज़ सुनते ही लोगों को यह पता चला कि विश्वविख्यात गुरु नानक स्वयं मेले में आए हैं। फिर क्या था, सारा मेला उनके इर्द-गिर्द एकत्र हो गया। शबद का भोग डालकर गुरु जी ने लोगों को उपदेश दिया कि सुच्ची-नेक कमाई करो, फकीर-योगी बनने की कोई आवश्यकता नहीं, गृहस्थ में रह कर भी प्रभु की प्राप्ति हो सकती है तथा मनुष्य सांसारिक समुद्र को पार कर सकता है।"

जब योगियों ने देखा कि सभी लोग गुरु जी के पास एकत्र हो गए तो वह ईर्ष्या तथा क्रोध की आग में जल उठे। वह भी गुरु जी के निकट जा बैठे, गुरु जी ने उनका स्वागत किया लेकिन वह बेकाबू होकर कहने लगे, "आपने यह क्या पाखंड बनाया है, सारी उम्र उदासी भेष धारण कर रखा था, अब वृद्धावस्था में गृहस्थी बन बैठे हो।"

गुरु जी ने शान्त स्वभाव से उत्तर दिया, "गृहस्थी जीवन सबसे ऊंचा तथा सत्य

जीवन है। गृहस्थी मनुष्य सच्ची-सुच्ची किरत करके स्वयं भी खाता है तथा आप जैसों को भी खिलाता है, आप लोग गृहस्थ को छोड़ फकीर बने हुए हो, लेकिन गृहस्थी के घर मांगने तो जाते हो। इसलिए गृहस्थी अच्छा हुआ कि आप जैसा फकीर?" योगियों का गुरु भंगर नाथ इसका कोई उत्तर न दे सका। फिर उन्होंने कई तरह की करामातें दिखाकर गुरु जी को हराना चाहा लेकिन गुरु जी पर उन करामातों का कोई प्रभाव न पड़ा। वह सब कुछ शान्ति से देखते रहे। जब योगी अपनी सभी करामातें आजमा चुके तो वह गुरु जी को कहने लगे, "हम तो आपको कई करामातें दिखा चुके हैं आप भी कोई करामात दिखाओ।"

गुरु जी ने कहा, "मेरे पास आप जैसी छोटी-मोटी करामातें अथवा चमत्कार नहीं जिनका प्रभाव दो पल रह कर फिर समाप्त हो जाता है। मेरे पास वह करामात है जो समाप्त नहीं होती बल्कि हर समय मेरे पास रहती है, वह करामात परमात्मा के नाम की है। परमात्मा के नाम सुमिरण से संसार की सभी करामातें प्राप्त हो जाती हैं। इसलिए यदि आप एक अमर करामात को पाना चाहते हो तो सच्चे हृदय से प्रभु का नाम सुमिरण करो, लोगों को लूटने की जगह उनकी सेवा करो, अपने हाथों से सच्ची किरत करो तथा इस किरत में से बेसहारों को सहारा दो।"

SIKHBOOKCLUB.COM

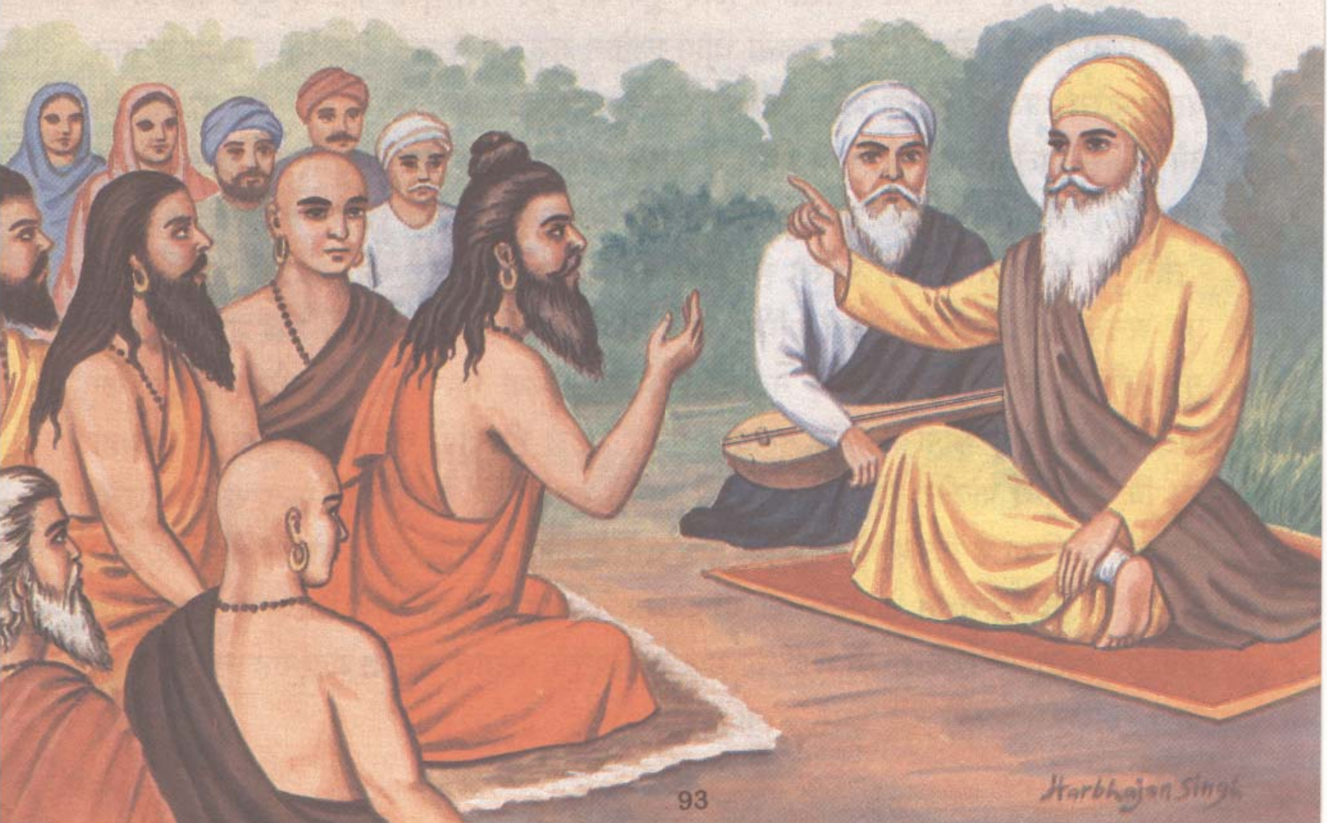

मुलतान के पीर

अचल वटाले सिद्धों से गोष्टि करके गुरु जी करतारपुर आ गए। यहां आकर उन सिद्धों से अब तक जितनी गोष्टियां हुई थीं उनका निष्कर्ष एक लम्बी वाणी 'सिद्ध गोष्टि' के रूप में लिखा। इस वाणी से गुरु जी की विद्वता तथा फिलासफी का भली-भांति पता चल जाता है।

जब गुरु जी कुछ समय करतारपुर रहे तो उन्हें पता चला कि सूफी पीर फकीर मुलतान में विशाल इक्ट्ठ कर रहे हैं। गुरु जी ने इन पीरों-फकीरों से भी गोष्टि करने का विचार किया। जैसे सिद्ध अपनी करामातें दिखाकर लोगों को लूटते थे उसी तरह ही पीर-फकीर भी करामातों का पाखंड करके भोले-भाले लोगों को लूटते थे।

गुरु जी ने भाई मर्दाने को साथ लिया तथा मुलतान शहर के बाहर दरिया के किनारे डेरा लगा लिया। वहां जब लोगों को पता चला कि ईश्वरीय फकीर नानक शाह आए हैं तो हिन्दू तथा मुसलमान सब उनके इर्द-गिर्द एकत्र हो गए। जब पीरों-फकीरों के समूह को यह पता चला तो वह बहुत घबराए। वह डरते थे कि यदि गुरु जी यहां ठहर गए तो भोले-भाले लोग उनके शिकंजे में से निकल जाएंगे तथा वह भूखे मरेंगे।

उन्होंने गुरु जी की परीक्षा के लिए दूध का पूर्ण भरा हुआ कटोरा कुछ सेवकों के हाथ भेजा। मर्दाने ने कटोरा पकड़ना चाहा लेकिन गुरु जी ने उसे रोक दिया तथा उन्होंने वह कटोरा अडोल अपने हाथों में पकड़ कर उस पर एक चमेली का फूल रख दिया और लाने वाले सेवक को कहा कि इसे वापस उस पीर के पास पहुंचा दो जिस ने यह भेजा है। भाई मर्दाना यह सब कुछ देख कर हैरान हुआ तथा उसने गुरु जी से पूछा, सतिगुरु जी इस में क्या रहस्य है? दूध का भरा कटोरा लेने की बजाय आपने उस पर चमेली का फूल रख कर वापिस भेज दिया है।" भाई मर्दाने की यह बात सुनकर गुरु जी ने कथन किया, "भाई मर्दाने! इस में भी एक गहरा भेद है, पीरों ने दूध का कटोरा इस लिए भेजा था कि मुलतान शहर पहले ही पीरों फकीरों से भरपूर है यहां पर किसी अन्य फकीर भी गुंजाइश नहीं। हमने कटोरे पर चमेली का फूल रखकर उन्हें यह जवाब दिया है कि हम किसी को दुख देने के लिए अथवा जगह रोकने के लिए नहीं आए, हम तो परमात्मा के नाम की महक बांटने आए हैं। हम पीरों के ऊपर चमेली के फूल की भांति रहेंगे, किसी के सिर का भार नहीं बनेंगे, अर्थात् हमारा यहां ठहरना, टहलना तथा महकना चमेली की भांति होगा।"

कुछ समय के पश्चात् महान् पीर-फकीर भी गुरु जी से धार्मिक विचार-विमर्श करने के लिए पहुंच गए। वह पीर-फकीर भी गुरु जी के गृहस्थी भेष को देख कर चकित हुए तथा उन्होंने इसका कारण पूछा। गुरु जी ने उन्हें भी समझाया तथा उपदेश दिया, "संसार को त्याग कर फिर सांसारिक लोगों पर निर्भर होना, इस संसार पर एक भार के समान है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने हाथों से किरत करनी चाहिए। आप़ पीर-फकीर झूठी करामातें दिखा कर लोगों को भ्रमित करते हो, इस तरह आपका यह लोक तो व्यर्थ होता ही है तथा आप परलोक भी बिगाड़ लेते हो। आप गृहस्थियों को बुरा समझते हो, लेकिन फिर उन्हीं के घर से मांग कर खाते हो। इस तरह आप गृहस्थियों से भी बुरे हो। उन गरीब लोग़ों की, जिन्हें लूटते हो, सेवा करनी चाहिए। इस सेवा से ही आप परमात्मा की शरण में कबूल होंगे।" कई दिन गुरु जी की संगति करके सभी पीर-फकीर गुरु जी की शरण में आ गए तथा सिक्ख बन गए।

मुलतान से चल कर गुरु जी पाकपटन गए। वहां शेख फरीद सानी को मिलकर उन्होंने बाबा फरीद शकरगंज की वाणी का एक उतारा लिया। उस उतारे को बाद में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में शामिल किया गया।

SIKHBOOKCLUB.COM

करतारपुर

गुरु जी ने करतारपुर को सिक्खी का प्रचार केन्द्र बना लिया। गुरु जी भारत तथा अन्य देशों में अपने सिक्ख बना कर आए थे। उन्होंने अलग-अलग स्थानों पर तीस से ज्यादा मंच भी स्थापित किए थे जहां उनके द्वारा नियुक्त किए हुए प्रचारक अक्सर कीर्तन-सत्संग करते थे तथा गुरु जी की वाणी का गायन करते थे।

जब दूर दूर के लोगों को यह पता चला कि गुरु जी ने स्थायी निवास करतारपुर में ही कर लिया है तो सभी रुहानी ज्ञान की प्राप्ति के लिए वहां आने लगे।

करतारपुर में वह स्वयं खेती करते थे जिसका भाव वह अपने श्रद्धालुओं को बताना चाहते थे कि योगियों-पीरों की भांति मांग कर नहीं खाना चाहिए, बल्कि अपने हाथों श्रम करना चाहिए। प्रातः उठकर जो वह प्रभु का सुमिरण करते थे उसका अर्थ था कि गृहस्थ में रहते हुए भी मनुष्य प्रभु की भक्ति कर सकता है। उसे जंगलों में जाने की जरूरत नहीं, पहाड़ों पर चढ़ने का कोई लाभ नहीं। जो मनुष्य इस जीवन संग्राम का त्याग कर जाता है वह कायर है। हमें अपने सृजनहार के साथ प्रायः मिल कर रहना चाहिए तथा उसके जलवे को देखना चाहिए। इस सांसारिक जीवन को परमात्मा के मिलन में कोई अड़चन नहीं समझना चाहिए बल्कि यह पवित्र धार्मिक जीवन का स्रोत होना चाहिए। एक तरफ वह खेतों को जोतना तथा बीज बीजने का काम करते थे तथा दूसरी ओर लोगों के हृदयों को शुद्ध करके उसमें सत्य नाम का बीज बीजते थे। वह अपने सिक्खों को यही शिक्षा देते थे कि हमारा एक ही पिता प्रभु है तथा सारा संसार हमारा घर है। कोई बड़ा-छोटा नहीं, कोई ऊंच-नीच नहीं, यह जाति का भेदभाव केवल स्वार्थी लोगों ने डाला हुआ है। ब्राह्मण लोग दूसरे व्यक्ति के साथ लगने से ही स्वयं को अपवित्र मानने लगते हैं और नीच जाति के लोगों के सामने बैठ कर खाना भी नहीं खाते थे इस अपवित्रता की प्रथा को तोड़ने के लिए गुरु जी ने सामूहिक लंगर प्रथा चलाई, उस लंगर में सब समान समझे जाते थे और सबको एक-सा भोजन खिलाया जाता था, वहां पर कोई हिन्दू पानी अथवा मुस्लिम पानी नहीं था बल्कि सब के लिए एक ही पानी था बेशक लंगर मुफ्त चलता था तथा किसी से कोई पैसा नहीं लिया जाता था लेकिन गुरु जी बेकार लोगों को लंगर खाने पर प्रताड़ित करते थे, प्रत्येक को कोई न कोई कार्य करना पड़ता था सबके कार्य बांटे हुए थे, कोई खेतों में काम करता था, कोई लंगर बनाता था और कोई सफाई का कार्य करता था। गुरु के घर में किसी भी वस्तु का अभाव नहीं होता

SIKHBOOKCLUB.COM

था, प्रत्येक श्रद्धालु को यह चाव था कि वह गुरु के भण्डारे में अधिकाधिक दान करे। गुरु जी की शिक्षा के अनुसार कोई भी अपने आप को निकम्मा नहीं कहलाना चाहता था।

भाई मर्दाना एक ऐसा सिक्ख था जिसने गुरु जी की सबसे अधिक संगति की थी। वह सभी उदासियों के समय भी गुरु जी के साथ रहा। वह भी अपना सारा परिवार लेकर करतारपुर में बस गया। गुरु जी के चरणों में रहने के कारण वह भी ब्रह्मज्ञानी हो गया था। करतारपुर में रहते उसे पता चल गया कि उसका अन्त निकट है उसने गुरु जी को मिलने की इच्छा प्रकट की। गुरु जी स्वयं चल कर उसके पास गए। भाई मर्दाने ने कहा, "सतिगुरु अब मैं जा रहा हूं।" गुरु जी मुस्कराए और उन्होंने अपने साथी के सिर पर हाथ फेरा और उसे आशीर्वाद दिया कि मर्दाने अब तुम जन्म-मरण से मुक्त हो। इस तरह भाई मर्दाना गुरु जी के चरणों में प्राण त्याग गया।

ज्योति से ज्योति जली

गुरु जी अब वृद्ध हो गए थे और चाहते थे कि उन्होंने जिस कार्य को आरम्भ किया है उसे निरन्तर जारी रखा जाए। सिक्खी के सत्य धर्म का उन्होंने जो पौधा लगाया था, उसे समस्त संसार में रोशन होने के समर्थ बनाना चाहते थे। इसलिए अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करने के लिए उन्होंने अपने सिक्खों पर नज़र रखनी शुरू कर दी कि कौन-सा ऐसा सिक्ख था जो इस सिक्खी के बूटे की सही ढंग से परवरिश कर सके। वह ऐसा सिक्ख होना चाहिए जो सेवा भावना रखता हो, परमात्मा के प्रत्येक जीव को समान समझता हो, हिन्दू-मुस्लमान में कोई भेदभाव न रखता हो, किसी को बड़ा-छोटा न समझता हो तथा सबसे अधिक वह काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से रहित हो। ऐसे सिक्खों में उनको भाई लहणा जी, भाई बुड्ढा जी ही अच्छे लगते थे। दोनों में ऐसे गुण थे जो सिक्खी के इस पौधे को चार-चांद लगा सकते थे। भाई बुड्ढा जी चाहे छोटी उम्र के थे, लेकिन गुरु घर के लिए जितना प्यार उनके मन में था, वह किसी अन्य में नहीं था। एक दिन गुरु साहिब ने इस सम्बन्ध में उनका मन खोजा तो भाई बुड्ढा जी कहने लगे, "मैं गुरु नहीं, गुरु घर का सेवक ही रहना चाहता हूं, मुझे यह वरदान दो कि मैं गुरु घर की प्रायः सेवा करता रहूं।" अब चुनाव केवल भाई लहणा जी पर ही रह गया था जिनको वह अपने शरीर का अंग समझते थे। इसलिए उन्होंने आसपास के सभी सिक्खों को बुलाया और भाई बुड्ढा जी से पांच पैसे व एक नारियल मंगवाया। सारी संगत के सामने उन्होंने पांच पैसे व नारियल भाई लहणा जी के आगे रखे तथा उन्हें माथा टेककर कहने लगे, "आज से ये मेरा अंग हुए, इसलिए अब ये भाई लहणा जी से गुरु अंगद देव जी बन गए हैं। आज से मेरी ज्योति इनमें विद्यमान हो गई है और ये नानक निरंकारी हो गए हैं। इसके बाद उन्होंने भाई बुड्ढा जी को माथा टेकने के लिए कहा और कहा, "आज से भाई बुड्ढा जी गुरु घर के केवल सेवक ही नहीं रहेंगे बल्कि गुरु घर के मुखिया भी होंगे, इनकी या इनके परिवार के किसी व्यक्ति की सहमति से ही भविष्य में कोई सच्चा गुरु कहलाएगा।"

SIKHBOOKCLUB.COM

भाई बुड्ढा जी ने बड़ी नम्रता से गुरु अंगद देव जी के आगे माथा टेका और उसके बाद सारी संगत ने सिर झुकाया। इस तरह गुरु नानक देव जी की ज्योति गुरु अंगद देव जी में प्रवेश करके ज्योति से ज्योति जली।

(गुरु अंगद देव जी का विस्तारपूर्वक जीवन अगली पुस्तक 'सचित्र जीवन साखियां, गुरु अंगद देव जी' में पढ़ें।)

॥ इति शुभम् ॥

(ਗੁਰਦੁਆਰਾ ਸ੍ਰੀ ਪੰਜਾ ਸਾਹਿਬ ਜੀ)

SIKHBOOKCLUB.COM

(ਗੁਰਦੁਆਰਾ ਸ੍ਰੀ ਸੱਚਾ ਸੌਦਾ ਸਾਹਿਬ ਜੀ)